प्राकृतसस्कृतादिभाषामय

श्रीमुनिचन्द्राचार्य वादिदेवसूरि चक्रेश्वरसूरि रत्नसिहसूरि प्रभृति विरचित:

(एकोनपञ्चाशत्प्रकरणमय.)

प्रकरणसमुच्चय:

मुद्रयिनी–मालवदेशीयरत्नपुरीस्था श्रेष्ठि "षभदेवजी केशरीमलजी नाम्नी सस्था

मुद्रक –इन्दोरनगरे जैनबन्धुमुद्रणालयाधिपतिः श्रेष्ठि जुहारमल मिश्रीलाल ओसवाल

४९ विक्रम सवत् १९८० क्राइस्ट सन् १९२३ प्रतय ५०० पण्य

अत्र प्रकरण समुच्चये, मुद्रितानां प्रकरणानामानुक्रमः

क्रम	प्रकरण नाम	गाथा.	पृष्ठा.	कर्त्ता	क्रम	प्रकरण नाम	गाथा.	पृष्ठा.	कर्त्ता
४०	आत्मानुशासनकुलकं	५६	१०२	रत्नसिंहाः	४५	उपदेशकुलकं	२६	१११	रत्नसिंहाः
४१	आत्महितचिन्ताकुलकं	३२	१०४	,,	४६	संवेगामृतपद्धतिः सं.	४२	११३	,,
४२	मनोनिग्रहभावनाकुलकं	४४	१०६	,,	४७	,,	१२२	१२०	,,
४३	गुरुवहुमानकुलकं	३४	१०८	,,	४८	संवेगरंगमाला	१५०	१२८	,,
४४	पर्यन्ताराधनाकुलकं	१६	१०९	,,	४९	वर्षाचतुर्मासीश्राद्धाभिग्रहाः		१२९	,,(?)

सज्जनगण! समाददतां प्रकरणसमुच्चयाभिधानमेतं यथार्थनामकं ग्रन्थं सहर्षमाविष्क्रियमाणं प्रकृतसंस्थया, प्रकरणरत्नानि चैतदन्तर्गति वैक्रमाब्दीयद्वादशशतीविद्यमानसूरिपुरन्दरैर्विहितानीति सर्वैरादरणीयानि, प्रकरणानां चैतेषां पुस्तकानि क्वचिदेव भाण्डागारे लभ्यानि, दुर्लभत्वादेव चैकेनैव पुस्तकेनास्य मुद्रणं शोधनं च विहितमिति क्षन्तव्याःस्खलनाः, ज्ञापयिष्यन्ति च सुधियो यदि ता द्वितीयावृत्तावुपकरिष्यंति, प्रस्तुतानां प्रकरणानां चेद्वृत्तयो लप्स्यन्ते यद्वा कश्चिद्विद्यारमणो ज्ञापयिष्यति तासां सत्ता दास्यंति च ताः सोपकारं ता अपि आविर्भावयिष्यामः, प्रकरणानां मुखे सुपठत्वं निश्चित्यैतन्मुद्रणप्रयास इति विधागोपयोगं यथार्थं कृतार्थयन्तु कृतिनोऽस्मानित्यर्थयन्ते आनन्दसागराः

विक्रम सं. १९८० कार्तिक शुक्ला. ५

॥ अर्हद्भ्यो नमः ॥

अथ श्रीप्रकरणसमुच्चयः

॥ अथ संज्ञाकुलकम् ॥ १

रुक्खाण जलाहारो १ सकोइणिया भयेण सकुचिया २। नियततुएहिं वेढई वल्ली रुक्खे परिगहे य ३ ॥ १ ॥ इत्थियपरिरम्भेण कुरुवगतरुणो फलति मेहूणे ४ । तह कोकनस्स कदो हुकारे मुयइ कोहेण ५ ॥ २ ॥ माणे झरइ रुयती ६ छायइ वल्ली फलाइ मायाए ७। लोभे यिल्लपलासा खिवति मूल निहाणुवरिं ८ ॥३॥ रयणीए सकोश्रो कमलाण होइ लोकसन्नाए ९। ओहे चइत्तु मग्ग चढति रुक्खेसु वल्लीओ १० ॥ ४ ॥ ए दस थावरसन्ना सुह १ दुह २ मोहाइ ३ तह दुगुछा ४ य ॥ सोगे ५ धम्मो ६ एए सोलस सन्ना तसजिएसु ॥ ५ ॥

॥ इति सज्ञाप्रकरणम् ॥

॥ अथ मुखवस्त्रिकास्थापनप्रकरणम् ॥ २

मोहतिमिरोहसूर नमिउ वीर सुआणुसारेण। साहेमि अ मुहपत्तिं, सड्ढाणमणुग्गहट्ठाए ॥१॥ इह केइ समयतत्त असुणंता सावयाण मुहपत्तिं । पडिसेहंति जईण उवगरणमिणतिकाऊण ॥ २॥ एव च चीवराण जुज्झति न सावयाण परिहेउ (हाण) । जम्हा ताणिवि मज्झिमजिणाण उवगरणभूआणि ॥ ३ ॥ ज च जईवि फुसत्तो पाए मुहणतएण पच्छित्त । पावइ किं पुण सड्ढो तपिवि निअकप्पणामित्त ॥ ४ ॥ भिन्नविसय खु तेसिं

पच्छित्तं भणिअमागमे इहरा । दव्वथए वट्टंतो जइव्व दूसिज्ज सड्ढोवि ॥ ५ अह एगसाडिएणं उत्तरसंगेण वसहिमाईसु । पाएण विसइ सड्ढो
तम्हा वत्थंचलेणेव ॥६ ॥ सामाइगाइ एवंपि संभवइ इमंपि आगमविरुद्धं । आवस्सयचुन्नीए जं सामाइअविही एवं ॥७॥ सामाइअं करंतो
सड्ढो कुंडलकिरीडमणिबद्धं । तंबोलपुप्फपंगुरणमाइ वोसिरइ सव्वंपि ॥ ८ ॥ सुव्वइ अ सत्तमंगे उवासगदसासु कुंडकोलिअओ । मुत्तूण
उत्तरिज्जं पडिवन्नो पोसहवयंपि ॥ ९ ॥ कंपिल्ले सावय कुंडकोलिओ निअअसोगवणिआए । गंतुं ठवइ सिलाए नाममुद्दंतरिज्जं च ॥१०॥
वीरवरस्स भगवओ उवसंपज्जित्तु धम्मपन्नत्तिं । विहरइ अ जाव सामी समोसढो तत्थ तं समयं ॥ ११ ॥ लद्धट्ठो अ इमीसे कहाइ सो
हट्ठं तुट्ठओ हिअए । सेअं खलु महसामीं वंदित्ता तह नमंसिउं ॥१२ ॥ तत्तो अ पडिनिअत्तस्स पोसहं पारिउंति पेहित्ता । जह नाम काम-
देवो वच्चइ तह पज्जुवासइ अ ॥ १३ ॥ जंपिअ समए भणिअं कडसामइओ गुरूण पासंमि । रयहरणमह निसिज्जं मग्गइ सड्ढो अह
घरंमि ॥ १४ ॥ तो तस्स उवग्गहिअं रयहरणं तस्स असइ पुत्तस्स । अंतेणंति तहिपिअ पुत्तं मुहपत्तिआ नेआ ॥ १५ ॥ वासत्ताणा-
वरिआ निक्कारणि ठंति कज्जि जयणाए। हत्थत्थंगुलि सन्ना पुत्तंतरिआ व भासंति ॥१६॥ इअ आवस्सगगाहामज्झे पढिअस्स पुत्तसद्दस्स ।
मुहपत्तिअस्स अत्थो चुन्नीए वन्निओ जम्हा ॥ १७ ॥ कण्हस्सट्ठारससुणिसहस्सवंदणगवइअरेवि तहि । भणिअमिमं चिअ सामी समोसढो
निग्गओ राया ॥ १८ ॥ सव्वेवि वंदिआ जाव बारसावत्तवंदणेणंति । किंबहुणा पंचविहोभिगमोऽवि न भासिओ तत्थ ॥१९॥ तह पण्हा-
वागरणे दसमंगे सावगाण मुहपुत्ती । पयडच्चिअ ठाणतिगे वण्णिज्जइ तत्थिमं पढमं ॥ २० ॥ दव्वाकिअं भावकिअं दव्वाकिअं पुत्तिआइ
इअ सुत्ते । मुहपुत्तीआइदव्वेण सावगा किणइ साहुत्ति ॥ २१ ॥ अचिअत्तघरे गमणं अचिअत्तघरे अ भत्तपाणं च । वज्जेअव्वं सिज्जा
संथारग पीढ फलगं च ॥ २२ ॥ वत्थं पत्तं कंबल मुहपुत्तिअसाइ इअ भवे वीअं । नावि वंदणाइ नवि पूअणाइ नवि माणणाइन्ति ॥२३॥

मुहपुत्तिआ नमुक्कारमालिआ विअरणाइरूवाण । नवि पुअणाइ भिक्ख गवेसिअव्वति तइअमिण ॥ २४ ॥ आवस्सगुवासगदसपण्हावागरण-पमुहसत्थेसु । वत्थचलविरहेण मुहपुत्ती ठाविआ एव ॥ २५ ॥ इअ समयविविहहेऊजुत्तीहिं सगय वुहजणाण । अवहत्थिअ मुहपुत्ति जमन्नहा केऽवि पलवंति ॥ २६ ॥त माहप्प मोहस्स विलसिअ अहव अभिनिवेसस्स । दीहरससारफलाणमहव कम्माण परिणामो ॥२७॥ ता भो भव्वा[1] चइऊण कुग्गह अणुसरेह सम्मग्ग । सिरिवद्धमाणसूरीहिं ससिअ जइ महह सुरत्त ॥ २८ ॥

॥ इति मुखवस्त्रिकाप्रकरणम् ॥

॥ अथ जीवादिगणितसंग्रहगाथा[1] ॥ ३

जोयणसहस्सनवग सत्तेव सया हवंति अडयाला । बारस य कला सकला दाहिणभरहद्धजीवाओ ॥ १ ॥ दस चेव सहस्साइ जीवा सत्त य सयाइ वीसाइ । बारस य कला ऊणा वेयड्ढगिरिस्स विन्नेया ॥२॥ चउदस य सहस्साइ सयाइ चत्तारि एगसयराइ । भरहद्धुत्तरजीवा छच्च कला ऊणि-या किंचि ॥ ३ ॥ चउवीस सहस्साइ नव य सए जोयणाण बत्तीसे । चुल्लहिमवत जीवा आयामेण कलद्ध च ॥४॥ सत्ततीससहस्सा छच्च सया जोयणाण चउसयरा । हेमवयवासजीवा किंचूणा सोलस कला य ॥५॥ तेवन्न सहस्साइ नव य सया जोयणाण इगतीसा । जीवा य महाहिम-वे अद्धकला छक्कलाओ य ॥ ६ ॥ एगुत्तरा नवसया तेवत्तरिमेव जोयणसहस्सा । जीवा सत्तरस कला अद्धकला चेव हरिवासे ॥ ७ ॥ चउणवइ सहस्साइ छप्पन्नऽहिय सय कला दो य । जीवा निसहस्से सा लक्खा जीवा विदेहद्धे ॥ ८ ॥

॥ इति जीवासंग्रहगाथा ॥

अथ धनुःपृष्ठबाहासंग्रहगाथाः ४

नव चेव सहस्साइं छावट्ठाइं सयाइं सत्तेव । धणुपिट्ठं भरहद्धे कला य पन्नारस हवंति ॥१॥ दस चेव सहस्साइं सत्तेव सया हवंति तेयाला । धणुपिट्ठं वेयड्ढे कला य पन्नारस हवंति ॥ २ ॥ सोलस चेव कलाओ अहियाओ हुंति अद्धभागेणं । बाहा वेयड्ढस्स उ अट्ठासीया सया चउरो ॥ ३ ॥ चउदस य सहस्साइं पंचेव सयाइं अट्ठवीसाइं । इक्कारस य कलाओ धणुपिट्ठं उत्तरद्धस्स ॥ ४ ॥ भरहद्धुत्तरबाहा अट्ठारस हुंति जोयणसयाइं । बाणउया जोयणाणि य अद्धकला सत्त य कलाओ ॥५॥ धणु हिमवे कल चउरो पणवीस सहस्स दुसय तीसहिया । बाहा सोलद्धकला तेवन्नसया य पन्नहिया ॥ ६ ॥ अडतीस सहस सगसय चत्त धणु दस कला य हेमवए । बाहा सत्तट्ठि सए पणपन्ने तिन्नि य कलाओ ॥ ७ ॥ धणु महहिमवे दस कल दो सय तेणउय सहस सगवन्ना । बाहा बाणउय सए छहत्तरी नव कलद्धं च ॥८॥ चुलसी सहसा सोलस धणु हरिवासे कला चउक्कं च । बाहा तेरसहस्सा तिसय इगसट्ठा छ कल सड्ढा ॥९॥ निसह धणु नव कल लक्खु सहस चउवीस तिसय छायाला । बाहा पन्नसट्ठ सयं सहस्स वीसं दु कल अद्धं ॥१०॥ सोलस सहस्स अडसय तेसीया सड्ढतेरस कला य । बाहा विदेहमज्झे धणुपिट्ठं परिरयस्सद्धं ११

॥ इति धनुःपृष्ठबाहासंग्रहगाथाः ॥

॥ अथ प्रतरप्रमाणसंग्रहगाथाः ॥

लक्खट्ठारस पणतीस सहस्स चउसया य पणसीया । बारस कला छ विकला दाहिणभरहद्धपयरं तु ॥ १॥ सत्ताहिया तिन्नि सया बारस य सहस्स पंच लक्खा य । बारस य कला पयरं वेयड्ढगिरिस्स धरणितले ॥२॥ जोयणतीसं वा से पढमाए मेहलाइं पयरमिमं । लक्खातिगं तिसयरिसया चुलसी इक्कारस कलाओ ॥३॥ दसजोयण विक्खंभे बीयाए मेहलाइ पयरमिमं । लक्खो चउवीस सयं इगसट्ठा दस कलाओ य ॥४॥

अट्ठ सया अउसीया सहसा बत्तीस (सोल) लक्खा य । कल बार विकलिगारस उत्तरभरहद्धपयरम्मि ॥५॥ दो कोडी चउआला सहसा छप्पन्न नव य इगसयरा । अट्ठकला दस विकला पयरम्मि चुल्ल हिमवंते ॥६॥ हेमवए छक्कोडी बावत्तरि लक्ख सहस तेवन्ना । पणयाल सय पयरो पच कला अट्ठ विकला य ॥७॥ गुणवीस कोडि अडवन्न लक्ख अडसट्ठि सहस सयमेग । छलसीई दस य कला पण विकला पयर महहिमवे ॥ ८ ॥ चउपन्न कोडीओ लक्खा सीयाल तिसयरि सहस्सा । अट्ठसय सत्तरि सत्त कलाओ पयर तु हरिवासे ॥ ९ ॥ बायाल कोडिसय छावट्ठिसहस्स लक्ख चउपन्न । पणसयगुणहत्तर कला । अडार निसहस्स पयरम्मि ॥१०॥ तेसट्ठ कोडिसय लक्खा सगवन्न सहस गुणयाला । तिसय दुद्धत्तर दस कल पनरस विकला विदेहद्ध ॥ ११ ॥ इति प्रतरप्रमाणसग्रहगाथा ॥

॥ अथ घनगणितसग्रहगाथा ॥६॥

दसजोयणुस्सए पुण तेत्तीस सहस्स लक्ख इगवन्ना । छावत्तरि छ कला य वेयड्ढे होइ घणगणिय ॥१॥ अट्ठ सया पणयाला तीस लक्खा तिहुत्तरि सहस्सा । पनरस कलाउ घणो ऽस्सुस्सए होइ बीयम्मि ॥२॥ सत्तहिया तिन्नि सया बारस य सहस्स पच लक्खा य । अवरा य बारस कला पणुस्सए होइ घणगणिय ॥ ३ ॥ सत्तासीई लक्खा उणनीसहिया य विणवइ सयाइ। अउणावीसइ भागा चउस्स वेयड्ढमय-लवण ॥ ४ ॥ हिमवति दुसय चउदस कोडी उप्पन्न लक्ख सगनउई । सहसा चोयालसय सोल कला बार विकल घण ॥ ५ ॥ गुणयाल सया सतरस कोडी छत्तीस लक्ख सगतीसा । सहसा तिसय अड्डुत्तर बार विकल घणु महाहिमवे ॥ ६ ॥ सगवन्न सहस अट्ठार कोडि छासट्ठि लक्ख गुणतीस । सहसा नव सय एगूणसीई निसहस्स घणगणिय ॥ ७ ॥ इति घनगणितसग्रहगाथा ॥

॥ अथ गांगेयभंगप्रकरणम् ॥७॥

नमिऊण महावीरं गंगेयसुपुट्ठभंगपरिमाणं । पुव्वप्पगरणसेसं वुच्छं सुगुरूवएसेणं ॥ १ ॥ वाणियगामे नयरे भयवं वीरो समोसढो नाणी । पासावचिज्जो अह गंगेओ आगओ तत्थ ॥ २ ॥ तस्सासंका जाया एसो किमु अत्थि इंदजालुत्ति । पसिणाइं महत्थाइं पडिपुच्छइ हेउणा तेणं ॥३॥ पुच्छाउत्तरसयलं नायव्वं पंचसंगनवमसया । इह उण संखेवत्थो भणामि निश्चं ससरणट्ठा ॥ ४ ॥ एगंमि य नरगंमी भंगा सग हुंति जइ असंखेज्जा । इगवीसा दुगनिरए पणतीसा तिन्नि नरगंमि ॥ ५ ॥ चउसुवि पणतीसाओ पंचसु इगवीस भंगसंखाओ । छगनरगे सग भंगा सत्तसु पुढवीसु एगो य ॥ ६ ॥ जे एगंमि उ नरए सग भंगा छग्गुणा बियालीसं । दुगनिरयाओ दुभागे हवंति हरिया हु इगवीसा ॥ ७ ॥ एगूणा उण किज्जइ निरयपमाणेण दिज्जई भागो । इगवीसा पणगुणिया जायइ पंचुत्तरसयं च ॥ ८ ॥ ते य तिभागे हरिया हुंति पणतीस तिन्नि नरगंमि । चत्तसयं चउभागे हरिया पणतीस भंगाओ ॥ ९ ॥ तिगुणा पंचुत्तरसय भंगा इगवीस पंचभागंमि । बायालीसं दुगुणा छगभागे सत्त भंगा य ॥ १० ॥ अह उण विगप्पमाणं एगविगप्पो य दुन्नि जीवाणं । तिगजीवाण दुजोगा दुन्नि तिग जोग एगेन ॥११॥ चउजीवाण दु जोगा तिन्नि य तिगजोग तहय तिन्नेव । चउजोगो एगेव य अह पण जीवाण सुणसु कमा ॥१२॥ दुतिचउपंचगजोगा चउ छ उ एग अह छजीवाणं । दुतिचउपंचछजोगा पणदसदसपणेग नेयं च ॥ १३ ॥ छ पण दस वीस पण दस छेगदुगाईएगंत सत्तएहं । अट्ठएहं जीवाणं दुगाइ-अट्ठंत संजोगा ॥ १४ ॥ सग इगवीस पणतीस पणतीसिगवीस सत्त एगो य । नवजीवाण दुगाई नवंतसंजोग कायव्वा ॥ १५ ॥ अट्ठ-

जोगा । पुण छव्वीसुत्तर सय चुलसी छत्तीस नव एगो ॥१७ ॥ इच्चाईयविगप्पा जीवपमाणेण अक्खचालणया । कायव्वा पुण एसिं सुणसु उवायं समग्गाण ॥१८ ॥ जइसखा हुंति जिया दुगसंजोगा हवंति एगूणा । संजोगि तिगाईण तिगाइरासी ठवेयव्वा ॥ १९ ॥ पुव्वविगप्पा पढमंकगुणणा काऊण सेसअंकाण । भाइज्जइ जं लब्भइ सुणसु पमाणं तिगाईण ॥२० ॥ जह पणजीवाण इह दुगसंजोगा हवंति चत्तारि । तिगसंजोगाण पुण ठविज्ज रासीवि तिन्नेव ॥२१॥ तिन्नि य एगो एगो दुगजोगा पढमअंक गुणियव्वा । बारस सेस दुभत्ता तिगजोगा हुंति छच्चेव ॥ २२॥ भंगा य पइविगप्पे पुव्वुत्ता नरगभंगगुणियव्वा । अह पुण सव्वविगप्पा जीवाण हुंति ते नणिमो ॥२३॥ तिगजीयाण विगप्पा दुगेण गहिया चउण्ह जीवाण । ते पुण दुगेणग हिया पंचजिआण मुणेयव्वा ॥२४॥ एवं कमेण सव्वत्थ अह भंगा सव्वजीवरासीण । एगोगहिया किज्जइ कयमाणं विभत्ताओ ॥२५ ॥ सगपढमपुढविभंगा अट्ठगुणा ते विजीवपविभत्ता । अट्ठावीसं भंगा दुगजीयाण विन्नाणाहिं ॥ २६ ॥ तेवि अ नवगुणिआओ एव इक्किक्करूववुड्ढीए । जीवपमाणविभत्ता सखा बुद्धेहिं नायव्वा ॥२७ ॥ पुव्वसूरीहिं बहुदिट्ठपत्थारभासिओ नेओ । वित्थरओ पुण सुत्ता नायव्वो सुहुमदिट्ठीहिं ॥ २८ ॥ गंगेओ अह सुआ भयवं वीराओ भंगजालमिणं । भयवं उवरिं जाओ सव्वन्नूपच्चओ तस्स ॥ २९ ॥ वंदइ नमसई अह आयरबहुमाणभत्तिपुव्वं च । गंगेओ संजाओ सामिओ गुत्तो विसेसेण ॥३० ॥ चउजामाओ धम्मा पडिवज्जइ पंचजामधम्मं च । नाणकिरियादिजुत्तो विहरइ निच्च गुरुसगासे ॥३१॥ जस्सासाए कीरइ सुनग्गभावो य मुंड-भावो य । आराहिओ तयट्ठो सिद्धो परिनिव्वुडो वुद्धो ॥३२॥ धन्नो सो गंगेओ जेणेव वीर जगगुरू पुट्ठो । धन्ना ते चिय पुरिसा दिट्ठो पहु वागर-तस्स (तो उ) ॥३३॥ धन्ना चिय मह जीहा पढमब्भासे हु वीरपहु थुणिओ । धन्ना गुरूण बुद्धी अत्थो जेणेस परिकहिओ ॥३४॥ सिरिपुज्जोदय

सायरसूरिणा गुणवया य बुद्धिमया । काऊण सुहियं तेणं विसोहियं गणियनाणेण ॥३५॥ सिरिउत्तमविजयाणं सीसो नामेण पउमविजयोत्ति । तेणप्पगरण रइयं मणमकडवस्समाणेउं ॥ ३६ ॥ इति गंगेयऋषिकृतपृच्छा—उत्तरभंगप्ररूपणाप्रकरणम् ॥

श्री आनन्दविमलसूरिसद्गुरुभ्यो नमः

॥ अथ ६२ मार्गणासु बंधहेतूदयत्रिभंगीप्रकरणम् ॥८॥

बंधणहेउविमुक्कं वंदित्ता वद्धमाणतित्थयरं । गुणसहिअमग्गणेसु भणामि हेउदयमाभित्तं ॥ १ ॥ मिच्छे १ सासण २ मीसे ३ अविरय ४ देसे ५ पमत्त ६ अपमत्ते ७ । निअट्टि ८ अनियट्टि ९ सुहुमु १० वसम ११ खीण १२ सजोग १३ ऽजोगि १४ गुणा ॥२॥ गइ १ इंदिए य २ काये ३ जोए ४ वेए ५ कसाय ६ नाणेसु ७ । संजम ८ दंसण ९ लेसा १० भव ११ सम्मे १२ सन्नि १३ आहारे १४ ॥ ३ ॥ नरय १ तिरि २ नर ३ सुर ४ गइ (१) इग१ बिय २ तिय ३ चउ ४ पणिदिया ५ नेया ॥ (२) पुढवी १ जलं२ व जलणो ३ पवण ४ वण ५ तसा य ६ छक्काया (३)॥ ४ ॥ सच्चे १ यर २ मीस ३ असच्चमोस मण ४ वय ८ उराल ९ वेउव्वं १० आहारं ११ तम्मिस्सं १४ कम्मणं १५ मिश्र पन्नरस जोगा (४) ॥ ५ ॥ वेय नरि१त्थि २ नपुंसा३ (५) अण १ अपचक्खाण २ पच्चखाणा३य । संजलण ४ कोह १ माण २ माया ३ लोभत्ति ४ सोलस कसाया (६) ॥ ६ ॥ [गीती] मइ १ सुय २ वहि ३ मणपज्जव ४ केवल नाणा ५ य मइ१ सुअन्नाणा२ । विब्भंग३ जुया अट्ठ य(७) सामाइय१ छेअ २ परिहारा३ ॥७॥ सुहुम ४ अहक्खाय५ संजम देसजइ ६ अजय ७ संजमा सत्त (८) । चक्खु १ अचक्खू २ ओही ३ केवल ४ दंसण चउक्कमिणं (९) ॥८॥ किण्हा १ नीला २

काऊ ३ तेऊ ४ पम्हा य ५ सुक्क लेसा ६ य (१०)। भवे१ यरे २ दुगोयं (११) खाओवसम१ तह। खवग २ ॥९॥ उवसमसम्म ३ मिच्छ ४ मीस ५ सासायण६च छब्भेिए (१२)। सन्नि १ असन्नी२ (१३) आहार १ इयर २ (१४) दो दो छसिय भेया ॥ १० ॥ मणवयपउ वेउव्वाहारदु ओराल १ इत्थि १ पुवेया १। अणभोगरहियमिच्छ ४ लद्धीअपज्जाए १९ नहु हुंति ॥ ११ ॥ ओरालिय २ हारग २ दुगमित्थी १ पुवेयादिय १ छग गुणु। नेरइयाण हेऊ ओहे मिच्छे य इगवन्ना ।१२॥ वीयगुणे वट्टंते नरय नहु जाइ तेण कम्मणुय। वेउव्वियमिस्स १ पुण सासाणे नेव हु तोसि ॥१३॥ पण मिच्छाण अणुदयाचउ चत्ता४४ तत्थ अण४विणा मीसे। चत्ता ४० कम्मण१ वेउव्विमिस्सजुयमजय बायाला ४२ ॥ १४ ॥ सम्मजुओ सत्तमिए न जाइ तो तत्थ अजइ चालीसा। पज्जाण सामन कम्माण १ वेउव्विमिस्स२विणा ॥ १५ ॥ मिच्छमी गुणवना अपजाए छसु गुणा दुवे तत्थ। कम्मणविउव्विमिस्स जोगदुग मिच्छि बायाला ॥ १६ ॥ तित्तीस अजयमी सत्तमिआपज्जयाए एगगुणो। जे जत्थ ठंति हेऊ विच्छिंति१ तेसि नायव्वा ॥ १७ ॥ सव्वोदयसरा पुण२ तइअ अभावो३ तिभगिआ एसा। तिरिआणाहारदुग २ वज्जित्ता मिच्छि (१) पणपन्ना ॥ १८ ॥ पण मिच्छविणा पन्न सासाणे (२) अण ४ दुगीस २ कम्मणय१। वज्जित्ता तेयाला ४३ मीसे (३) अजयमि छायाला ४६ ॥ १९ ॥ मिस्सदु२कम्मण १ सहिया (४) देसे ओरालमिस्स१कम्मणय १। वीयकसाए४य विणा गुणयाला ३९ तसवह सुत्तु (५) ॥ २० ॥ मिहुणतिरियाण वेउव्वा२ हारदुग विणा य नपु वेय १। बावना ५२ मिच्छ ५ विणा सासणि सगयाल ४७ अणचउग ४ ॥ २१ ॥ कम्मणमुरालमिस्स १ सुगु इगयाल उदय मीसमि। तदुगजुअ अजयमी तेयाला ४३ मिहुणपरिसाए ॥ २२ ॥ कीवित्थी२ वेय विणा नर १ कीवि २

विणा तहा तइत्थीणं १ । तिरिआ नरा य हुंती वाद्धीअपज्जा ण उण अन्ना ॥२३॥ तेसिमणाभोगामिच्छं छज्जीव ६ वहो नरित्थि-वेय२विणा । तेवीस२३ कसाया उरलमिस्स१ कम्मणजुय दुत्तीसं३२ ॥२४॥ सामन्नमपज्जाणं जोगदुगं२ तं तओ अ चउचत्ता४४ । तिरियाणं च नराणं पंचगुणा (५) अह पमत्तंमि ॥ २५ ॥ अविरइ ११ तइयकसाए४ मुत्तुं छगवीस२६हारदुग खेवा (६) । अपमत्ते चउवीसं विउव्वगाहारमिस्सविणा (७) ॥ २६ ॥ अपुव्वे दुगवीसं २२ विउव्व१माहारगं च१ वज्जित्ता (८) । हासाइ छक्करहिया सोलस १६ हेऊ अ अनियट्टी (९) ॥ २७॥ संजलण३ वेय३ ति विणा सुहुमे दस (१०) उवसमे नव अलोभा (११) । खीणेऽवि (१२) मोस सच्चामोसं वयणं२मणं२मुत्तुं ॥ २८ ॥ सत्त सजोगे हेऊ उरालमिस्सेण १ कम्मणेण १ जुआ (१३) । एगोऽविबंधहेऊ नत्थि अजोगंमि मणुआणं (१४) ॥ २९ ॥ मेहुणनराणित्थीणं लद्धिअपज्जाण तिरिअतुल्लमिणं । अपजाणं चेगगुणो करणापज्जाण पढम१ बिय२ तुरिआ ४ ॥ ३० ॥ (गीतिः) देवाणं ओरालाहारदुगं वज्जिउं च नपुवेयं । बावन्ना देवीणं इगवन्ना पुरिसवेयाविणा ॥ ३१ ॥ इत्थीविणेगवन्ना सणंकुमाराई जाव गेविज्जा । विजयाइविमाणेसुं अजयगुणो तत्थ बायाला ॥३२॥ इतिगतिद्वारं॥ १ ॥ अणभोगमेगामिच्छं१ छज्जीव ६ वहो तहेव फासिंदी १ । पुरिसित्थि वज्ज तेवीसकसाया२३ पंच जोगा य ॥ ३३ ॥ ओराल विउव्विदुगं कम्मण५-मेगिंदिआण मिच्छम्मि (१) । छत्तीस३६मुरलमिस्सं १ कम्मण२मिंदिअ विणाऽविरई६ ॥३४॥ इगतीसं३१ सासाणि(२) बितिचउरिंदीण मिच्छि पुण तेसिं । ऐगेगेंदियवुड्ढी चउरो जोगा इमे हुंति ॥ ३५ ॥ ओरालदुगं कम्मणमेगा भासा असच्चमोसत्ति । छग ३६ सत्त ३७ अट्ठतीसा ३८ तेसि हेऊ इमे भणिया ॥ ३६ ॥ पंचिंदियाण चउदस ठाणा हेऊ अ तत्थ नरतुल्ला ४ ॥ इतींद्रियद्वारं २॥ वाऊ इगिंदि तुल्लो

वेउव्विदुगविहूणा ३४ चउतीसं इगगुणे गइतसाए । मणुअ व्व तसा नेया इतिकायद्वारं ३
पुढवि१दग२तरूण३ तेऊण ४ ॥ ३७ ॥ वेउव्विदुगविहूणा ३४ चउतीसं इगगुणे गइतसाए । मणुअ व्व तसा नेया इतिकायद्वारं ३ एएहिं सत्तजोगेहिं हुति मिच्छमि गुणवन्ना। ४९
सच्चाणुभयमि मणवयणे ८ ॥ ३८ ॥ वेउव्विदुग२ मुराल सच्चाणुभय मण२ तहा वयण२ । एएहिं सत्तजोगेहिं हुति मिच्छमि गुणवन्ना। ४९
॥ ३९ ॥ मीसे विउव्विमीस न होइ अजए हवेज्ज देसेऽवि । तहय पमत्ते एव सजोगि उरल१मणो२ वइदुग च ॥४० ॥ एवमसच्चो-
भयमण२वयमि२वारस हवति गुणठाणा । केवलमणुभययोगेऽणभोगमेग भवे मिच्छ ॥ ४१ ॥ मणविणु विरइकारस११ अणुभयवयण
उरालमेग च१ । तेवीस च कसाया२३ सगतीस३७हेऊणो हुति॥४२॥ सच्चाणुभयंमि मणमि२ वयमि२सजोगि१ पच केवलणे(८) । ओराले
मण ४ वय ४ चउ उरल १ नवजोग ९ इगवन्ना ५१ ॥ ४३ ॥ बारगुणेसु सजोगे दो मण २ वय २ उरल१ जोग पणगमिण (९) ।
अणभोग१ मुरलमिस्से सजोग १ इंदियविणाऽविरई६ ॥ ४४ ॥ तित्तीस मिच्छमी१ साणे अजए३ तहा सजोगमि४ । बत्तीस-
छवीसेगा(१०) कम्मणकाए वि एमेव(११) ॥४५॥ वेउव्वे सत्त गुणा आइम ओरालय च(१२)तम्मिस्से । मीस विणु पमत्तता पच गुणा हेउ-
पुव्व व(१३) ॥४६॥ आहारमि पमत्ते छक्क मजलण चउर पुवेओ । मण४ वइ४चउ आहारो इय वीसतेऽपमत्तेवि (१४) ॥ ४७ ॥
तम्मिस्सि पमत्तगुणो (१५) (इतियोगद्वार४) तहेव थीकीव २ वेय मुत्तूण । तेवन्न ५३ पुंवेए थीवेए हारगदुगूणा ॥ ४८ ॥ नपुनरवेय-
विहीणा साणे कम्मण उरालमिस्स विणा । छायाला ४६ कीवेऽविहु सेस पुरिसुव्व गुणनवग ॥ ४९ ॥ इतिवेदद्वार५॥ कोहचउक्के माणा ४
माया ४ लोहा ४ हवति नहु चउरो १२ । हारदुगूणा मिच्छे तेयाला मीसि अणकोह ॥ ५० ॥ कम्म १ मीसदुग २ पिहु मुत्तु
चउतीस ३४ दोसिं विग्गकोह५-३३ । तियकोह च पमत्ते ६-२३।७-२१।१९-नज्जित्ता नवमि छक्क च ॥५१॥ वेयतिग३ सजलणो कोह्रे४

नवजोग ९ तेरस य हेऊ। एवं माणे ९-४ मायाए९-४ चउगे लोभे-उ गुणदसगं १०-४ ॥ ५२ ॥ इतिकषाय द्वारं ॥ मइ१सुय२ओहि३नाणेसुं अजयाई, स्वगुणाहि -अडयाला ४।८ । मिच्छा५ण४-वज्जियाओ हारदुगूणा जए-देसे ॥ ५३ ॥ मणनाणि पमत्ताइं सत्त गुणा केवलंसि दो अंता । मइ१सुय२अन्नाणेसुं विभंगी ३ तह दो गुणाऽऽइल्ला ॥ ५४ ॥ इतिज्ञानद्वारं सप्तमं ॥ ७ ॥ सामाइयंमि छेओवट्ठाणे चउ गुणा पमत्ताई । सुहुमे दोसि सठाणं आइसगुणचउ अविरयंमि५ ॥ ५५ ॥ अहक्खायचरमे चउरो ओहुदओ तह पमत्ति परिहारे । थीवेदूणा बारस कसाय १२ नवजोग ९ इगवीसा ॥ ५६ ॥ अपमत्तेऽवि य एवं (संयमद्वारं ८) चक्खु१ अचक्खुसु बार पढमगुणा । चक्खुंमि उरल-म्मिस्सं बीयं पुण कम्मणं नत्थि ॥५७॥ अवहिस्स केवलस्स य नाणसमं दंसणंपि नायव्वं । [इतिदर्शनद्वारं९] गुणछक्कमाइलेसातिगंमि उदओऽ-त्थ सामन्नं ॥ ५८ ॥ तेऊए पउमाए सत्त गुणा सुक्कलेसि तेरसगं १३। [इतिलेश्याद्वारं १०] सव्वगुणा १४ भव्वाणं आइक्कगुणो अभव्वाणं इतिभव्यद्वारं ११। ॥५९॥ तुरियाइ गुणचउक्कं४ खाओवसमे१ इगारस खयम्मि२ अडउ उवसमसम्मंमी आहारदुगं न तत्थ भवे३ ॥६०॥ मिच्छे४मीसे ५ सासाणगंमि ६ निअनिअगुणंमि ओहुदओ। [इतिसम्यग्द्वारं १२] सन्नीणं सव्वगुणा १४ असन्नीणं पढमदुगुणा ॥ ६१ ॥ अणभोगमेगमिच्छं १ मणरहिआ अविरई ११ पुमि१त्थिविणा । तेवीसं २३ च कसाया उराल १ वेउव्व२ तम्मिस्सा ४ ॥ ६ ॥ कम्मण संतिमवयणं १ छज्जोगा सव्व हुंति इग चत्ता ४१ (इतिसंज्ञिद्वारं १३) आहारे तेर गुणा आइम ३ अणाहारि पंचेए ॥६३॥ पढमं२ तिमदुग२ तुरिअं१ छक्काय ऽविरइ मिच्छभेगं च । सव्वे कसाय२५ कम्मण १ जोगोतित्तीस ३३ हेउदओ ॥ ६४ ॥ इतिआहारद्वारं ॥१४ इय मग्गण ठाणेसुं, गुणठाणगजोअणेण हेउदओ । भणिओसपरहिअत्थं गिरिसायर सूरिसीसेणं ॥ ६५ ॥

॥ इति बंधहेतूदयत्रिभंगी सूत्रं समाप्तम् ॥ छ ॥

॥ अथ योगानुष्ठानविधिगर्भितप्रकरणम् ॥ ९ ॥

जोगाणुट्ठाणविहिं संखेवेण सुणेतु मुणिवसहा[1] ॥ आवस्सयसुअखधे दु नदि अड दिण छ अज्झयणा ॥ १ ॥ दसयालिअसुअखधे दिण पनर दु नदि बारसऽज्झयणा । पचम नवमे दो चउ उद्देसा कालिया सेसा॥२॥ कालिअ उत्तरज्झयणे सुअखधे दुन्नि नदि सगवीस । दिवसाइ जइ असख्य एगदिणायामि अहीइज्जा ॥३॥ बीअदिणि पाढिए निव्विअ अजह आयामु एगदिणवुड्ढी । चउदसम जा इगकालि एगु परओ दु दुऽज्झयणा ॥४॥ जत्थ उ इगु खधो तहिं नदितिगाति अविलचउक्क । जत्थगे दो खधा तहिं पण नदी ति आयामा ॥५॥ आयारे पणवु दिणा दो खधा पढमि अट्ठ अज्झयणा । तेसु कमुद्देसा सग छ चउ चउ छ पण अड चउरो ॥ ६ ॥ सत्तज्झयणुद्देसा एगारस ति दउसु दु दु दु कमसो । सग ७ सत्तिक्क दु चूला इअ एग सोलसज्झयणा ॥ ७ ॥ आयारागयोगोऽनागाढ । सूयगड दो खधा पण ज्झयणुद्देस चउ ति चउ दो दो । केवल इगार बीए केवलसगज्झयण तीस दिणा ॥ ८ ॥ सूअगडगयोग,अनागाढ इक्किक्कसर चउ चउ चउ तिअ उद्देस पण पयोगसरा इगु खधु अदारदिणा ठाणे समवाइ तिन्नि दिणा ॥ ९ ॥ ठाणागे अनागाढ । भगवई अगे खधो न अत्थि हुति अ सयाणि इगचत्ता ४१। सगसयरि काल७७ छामिअ सउ १८६ दिण दो नदि २ गणिनाम ॥१०॥ तिसु दस दस उद्देसा पण सग सग काल जेण बीइ सए । पढमे खदुद्देसे दो कालायाम पण दत्ती ॥११॥ तइअसए पुण बीओ उद्देसो चमरउत्ति खदसमो । तत्थुग्गाहिगविगईउस्सग्गो छट्ठजोगो अ ॥१२॥ तुरियसयदसुद्देसा आइल्लतिल्ल अट्ठ इगकाले । दो सेस एगकाले मूलाओ काल इगवीस ॥ १३ ॥ पचाइ अउतसए पण पण कालेहि दस दसुद्देसा । नवमाइ चउदसता आइल्लतिलि (प्रथम अत्यः) गिगकाले ॥१४॥ पनरसमे गोसालयसए दु आयामकाल दत्तितिग । अट्ठमजोगो गुणवन्न४९ काल मूलाओ हुति इह ॥ १५ ॥ सेसा छव्वीस सया आइल्लतिल्ल नवनवुस्सग्गा ।

नवरं तित्तीसाइसु आइल्लंतिल्लु रुय नेया॥१६॥ भगवती आगाढयोगः। तित्तीसदिणा (ज्ञातासूत्र) नायाइ खंधिगुणवीसमज्झयणभिक्खसरा। दसवग्ग बीअखंधे आइल्लंतिल्ल अज्झयणा ॥१७॥ उवासगे इगु खंधो केवल दसज्झयण चउद दिण सव्वे। इगु खंधो पुव्वविही अड वग्गदिण बारसंतगडे(अन्तकृद्दशांगसूत्रं)॥१८॥त्रयोऽप्यनागाढाः।नवमंगे इगु खंधो सत्त दिणा तिन्नि वग्ग पुव्वविही। दसमंगि दसज्झयणा केवल दिणा चउद इगु खंधो ॥ १९ ॥ दो सुअखंधा दस अज्झयणाइं केवलाइं विवागसुए। चउवीस दिणाइ सव्वो [एत्तो उ] परं उवंगाइं ॥ २० ॥ (अनु०प्रश्न०विपाकश्रुत म०द्वि० सू०) उक्कालि उवाइ चउ कालिअ पन्नत्ति तिग निरयावली। निरयावलियाखंधे सगदिण पण वग्ग जो नंदी॥२१॥ दस दिण वीसुद्देसा निसीहि कप्पाइखंधि वीसदिणा। दुसु छद्दग उद्देसा दससु अज्झयण नंदिदुग ॥ २२ ॥ सुत्त नव सोल बारस चउ छव्वी-सुद्देस सोला य। अडज्झयण दु नंदि दिवड्ढमास खंधे महानिसीहे॥२३॥ आगाढः। पण कप्पे आयामं तितिनिविए नंदिऽणुओगदारेसु। इगनि-विअ जीअकप्पे तेर पइन्नेसु तेअ इमे ॥२४॥ कुसलानुबंधि १ भत्तपरिन्ना २ आउरयपच्चक्खाणं च ३। संथारयं ४ तह तंदुलवेआलिअ५ चंदविज्झयगं ६ ॥ २५ ॥ देविंदत्थय ७ गणिविज्जया य ८ महपच्चखाण ९ वीरथओ १०। अज्जीवकप्प११ गच्छायारो १२ तह मरण विहि चरमो १३ ॥ २६ ॥ सुत्त१ त्थर२ भत्त३ काला४ वस्सय५ सज्झाय६ तहय संथारे७। सग मंडलि सव्वंके मासा गुणवीस १९ तिन्नि दिणा३ ॥२७॥ उत्तरज्झयणा सत्तिक्क भगवई महनिसीह दसमंगं। इअ आगाढा उत्तरज्झयण विणाऽऽउत्तवाणंपि ॥२८॥ इअ सव्वाणु-ट्ठाणे नंदी इगवन्न५१ काल सयचउरो ४०० बावीससय अडुत्तर२२०८ सगलुस्सासा उ उस्सग्गा (कायोत्सर्गाः ८१-२१।२७ उच्छ्वासाः) ॥२९॥ इअ मुणिणो सुणिऊणं जोगविहिं विहिअतत्तवचरणा। चरणकरणाउत्ता गुत्ता मुत्तं अहिज्जंतु ॥ ३० ॥

इति श्री योगानुष्ठानविधिः समाप्तः ॥ ९ ॥

॥ अथ पडिलेहणाविचारप्रकरणम् ॥ १० ॥

सुत्तत्थतत्तदिट्ठी १ दसणमोहतिग च ४ रागतिग ७। देवाई तत्तातिग १० तह य अदेवाइऽनत्तातिग १३ ॥ १ ॥ नाणाइतिग १६ तह तव्विराहणा १९ तिन्नि गुत्ती २२ दडतिग २५। इय मुहणतयपडिलेहणाउ कमसो विचिंतेज्जा ॥ २ ॥ हासो रई य अरई ३ भयसोगदुगुछाओ ६ तह विवज्जिज्जा। भुयजुअल पेहतो सीसे अपसत्थलेसातिग ९ ॥ ३ ॥ गारवतिग च वयणे १२ उर सल्लतिग १५ कसाय चउ पीठे १९। पएसु छजीव वह २५ तणुपेहाए विजाणमिण ॥ ४ ॥ जइवि पडिलेहणाए हेऊ जियरक्खण जिणाणा य। तहवि इम मणमक्कडनिजतणत्थं मुणी विंति ॥ ५ ॥ पडिलेहणाविसेस वुच्छामि विहायारजाणणट्ठाए। सामायारीजुग्ग मग्ग जाणन्ति मुणिनिवहा ॥ ६ ॥ वत्थरयहरणपट्टयपत्ताईयाण हुति पणवीस। दस दडगाण अक्खा जहणमवि पडिलेहणा तेर ॥७॥ वत्थरयहरण ओघणाइयाण मुहणतयव्व पडिलेहा। दडाइयाण दसग तिग तिग मज्झि सिरमूले ॥८॥ दिट्ठिपडिलेह एगा अक्खो पक्खो तिग तिग छक्क। वज्झब्भतर बारस पडिलेहा हुति अक्खाण (स्थापनाचार्याणा) ॥९॥ दिट्ठिपडिलेह एगा परिहितिगे तिण्णि तिण्णि तिग छुढा। मज्झे बाहिर बारस पणवीस हुति पत्ताण ॥१०॥ दिट्ठिपडिलेह एगा चउपाय तिन्नि तिन्नि इय बार। बाहिर चउरो पाए पट्टाण हुति पणवीस ॥११॥ अण्णे भणति बारस अब्भतर तह चउसु परिहीसु। अड तिग चउवीसाण पडिलेहा हुति पट्टाणं ॥१२॥ पणवीसं तणुपेहा इत्थीण तह य हुति पन्नरस। मुहि (मुखे) हियएऽवि तिग तिग पिट्ठे चउरोवि वज्जिज्जा ॥१३॥ तह जोगाणुट्ठाणे पडिलेहा हुति जेण पणसयरि। पत्तयपत्तावधाण पडलयरप्पादियाण च ॥१४॥ सड्ढाण सड्ढीण पोसहजुत्ताण होति दुगवेला। पडिलेहा सव्वाण मुणिव्व णेया जहाजुग्ग ॥१५॥ गोसे (प्रभाते) जहण्ण पुव्वी पुत्ती धम्मज्झय (रजोहरणम्) निसीहतिग। कडिसुत्त चोलपट्टो इरिया अक्खाण पडिलेहा॥१६॥बालाण वुड्ढाण (उवगरण) तओ य उवाहिसमग्गपडिलिहण

तउ इरिया पुण दंडगपडिलेहण कायजुद्धरणं (कचवरकः) ॥१७॥ पुण इरिय पडिक्कमित्ता वसहिं कालं तओ पडिक्कम्म । सज्झायज्झाणपरो हविज्ज जा ताव जामदुगं ॥ १८ ॥ तओ-चिइवंदणं जिणाणं पडिलेहिय पुत्ति पोरसीयाए । तह पच्चक्खाणं पुण पारित्ता भंडगाणं च ॥१९॥ पडिलेहित्ता गोयरमग्गगओ एसणाइसमिइपरो । इरियमुवओगकिरियं किच्चा गुरुआणमासज्जा ॥२०॥ तह निरवज्जाहारं गहिऊणं गुरुसमीवमागम्म । आलोइत्ता सम्मं छज्जीवणियं (दशवैकालिकचतुर्थाध्ययनं) भणित्ता य ॥२१॥ दीणगुरुभत्तिपुव्वं दच्चा भुत्तुं गुरूणमह पच्छा । आहारमा येरइभो यणदोसं विवज्जंतो ॥२२॥ मंडलि पमज्जिऊणं किचा चिइवंदणं पुणोवि तहा । सज्झायज्झाणपरो हुज्जा गुरुवयण पवणो य ॥२३॥ पुण पोरिसिम्मि इरियं पुत्ती वसहि तओ य कडिसुत्तं । चोलं तओ य अक्खा पुत्ती पुण तह य सज्झायं ॥२४॥ वंदणगं दाऊणं पच्चक्खाणं करिज्ज सत्तीए । उवहिसमग्गं तत्तो कंबलपुव्वं पडिलिहिज्जा ॥२५॥ दवरयकंबल निसिहियदंडय मुणिवरझयंति (रजोहरणं) पडिलिहणं । जइ पुण उववासपरो तो पडिलेहिज्ज कडिवत्थं ॥२६॥ तो इरियं पुण दंडय पडिलेहित्ता य कायउद्धरणं (काजो) । इरियं पडिक्कमित्ता भंडोवगरणं पडिलिहिज्जा ॥२७॥ सड्ढाण पुणो एवं पोसहजुत्ताण तत्थ भिउ णत्थि । पडिलिहिय वसहिसालं पुच्छयं तउ अ आयरिया ॥ २८ ॥ तउ कढिऊण कज्जं इरियं पुण कुणइ जइजणुव्व परं । पुणरवि कायुद्धरणं सज्झायपरो तओ हुज्जा ॥ २९ ॥ सड्ढीणं पुण एवं परं विसेसोऽत्थि वत्थपडिलेहे । उग्गहपटपरिहाणयवत्थे पुण कायउद्धरणं ॥ ३० ॥ तिगवेल कढिज्जह कायउद्धरणं च जीवजयणट्ठाए । पुण साहुणीणमेव य करेइ उग्घाडियासिरा य ॥३१॥ पडिलेहणावियारो लिहिओ भव्वाण जाणणट्ठाए । आणंदविमलसुरिसरसीसेण **विजयविमलेणं** ॥ ३२ ॥ इति पडिलेहणाविचारप्रकरणम् ॥ १० ॥

॥ अथ देहकुलकम् ॥ ११ ॥

नमिऊण जिणं वीरं किंचि सरूवं भणामि देहस्स । पिट्ठिकरडां अट्ठारसेव बारस य पसलिया ॥१॥ सत्त सिराण (नसा) सयाइ पुरिस-स्सित्थीण तीसऊणाइं । दसऊणाइ नपुसे तिन्नि सया अट्ठिदामाण ॥ २ ॥ पचसय पेसियाइ नराण महिलाण तीसरहियाइ । दसऊणाइ नपुसे मम्माण सय च सत्तऽहिय ॥ ३ ॥ नव ण्हारूण सयाइ नव धमणीओ य सधि सट्ठिसय । परिणमइ उ उच्चारो पढम पासेय दाहि-णए ॥ ४ ॥ थूलते तणुयते दो यता पच वामया हुति । परिणमइ उ उच्चारो पढम बीए अ पासवण ॥५॥ बत्तीसमेव दता पणवीसपलाइ तह य कालिज्ज (कलेजु)। अद्धुट्ठपल हियय कुच्छी य विहत्थिसुपमाणा ॥६॥ सत्तगुलाइ चउरो पलाइ जीहा सिर चउकवाल । चउरगुलिया गीवा पलजुयल लोयणजुगमि ॥७॥ सुक्कस्स अद्धकुडवो कुडवो पित्तस्स तहय सिंभस्स । अद्धाढय च वसए रुहिरस्स य आढय एग ॥८॥ मुत्ताढय पुरीसे छप्पत्था मुत्थलिग पत्थो य । पुरिसस्स पच कुट्टा छट्ठा गब्भमि इत्थीए ॥९॥ नवई य सयसहस्सा रोमकूवाणि केससुट्छ विणा । अद्धुट्ठ रोमकूवा कोडी सह केसमसूहिं ॥ १० ॥ पुरिसस्स सोयनवग इक्कारस सोइ जाण इत्थीए । पुरिसाईण कवला बत्तीसऽडवीस चउवीसा ॥ ११ ॥ सत्ताह कलल होई, सत्ताह होइ अब्बुय । अब्बुया जायए पेसी, पेसीयो अ घण भवे ॥१२॥ पढमे मासे करिसूण, पल बीए घणो नीई (भवे) । तइए मासे अ माऊए, डोहल जणइ अणुरूव ॥ १३ ॥ चउत्थे मासे माऊए अगोवगाइ पीणए गब्भो । करचरणसिरिऊरे पचमए पचय करे ॥१४॥ छट्ठे मासे गब्भो उवचिणइ सोणिय च गब्भमि । सत्त सिराण सयाइ एमाई सत्तमे मासे ॥१५॥ अट्ठमे वित्तीकप्पे उ, नवदसमेसु जायति । गब्भस्स य सुअणजागर सुहदुक्ख जणणिअणुरूव ॥१६॥ जायमाणस्स ज दुक्ख, मरमाणस्स

गुणो । तेण दुक्खेण संतत्तो, न मरइ जाइमप्पणो ॥ १७ ॥ सूईहिं अग्गिवन्नाहिं, संभिन्नस्स निरंतरं । जावइयं गोयमा' दुक्खं, गब्भे अट्ठगुणं तओ ॥१८॥ गब्भाओ नीहरंतस्स, जोणीजंतनिपीलणे । सयसाहस्सियं दुक्खं, कोडाकोडिगुणंपि वा ॥१९॥ उयरे कोवि वसंतो सुणिय गुणि भिन्नकम्मो । तयपि न करणो मरिउं सुहभावा जाइ सुरलोअं ॥ २० ॥ ओही परबल दट्ठुं चउहा सेएणं वेउव्विउं जुज्झे । नरयनियाणकरणो मरिउं नरए गओ सत्तमनरए ॥ २१ ॥ दोहि असईहि पसई दुप्पसइ सेइआ चउ कुडवो । चउकुडवो मगहपत्थो चउ-पत्थो माणओ होई ॥ २२ ॥ एवं देहगरूवं कहियं वीरेहि गोयमाईहि । तंदुलवेयालियसुए भविअजणविबोहणट्ठाए ॥ २३ ॥ [यंत्र—२असइ-पसइ, २पसइ-सेतिअ, ४सेतिअ-कुडव, ४कुडव-प्रस्थ, ४प्रस्थ-आढक, ४आढक-द्रोण ११ ॥] इति देहकुलकं समाप्तम् ॥

॥ अथ कृष्णराजीविमानविचारस्तवनम् ॥ १२ ॥

जेहिं जह लोगंतिगसुरेहिं वयसमय संथुय जिणिंदा । तेसिं तह कित्तणेणं समासओ अहमवि थुणेमि ॥ १ ॥ तिरियमसंखइमो खलु दीवो अरुणवरनामओ तत्तो । जोयणदुचत्त ४२ सहस्सा ओगाहिय अरुणवरजलहि ॥ २ ॥ तत्थ पएसे जलमयतमकाओ निग्गओ कसिणरूवो । वलयागिइ अह भागे कुकुडपंजरसमो उवरि ॥ ३ ॥ उवरुवरि वित्थरंतो सोहम्माईण आवरेमाणो । ता पत्तो जा पंचमकप्पंतिमपयरुवरि मिलिओ ॥ ४ ॥ तत्थंतिगंमि पयरे रिट्ठाभविमाण चउदिसि दो दो । समचउरंसक्खाडयट्ठिइओ अड कण्हराईओ ॥ ५ ॥ पुव्वावरउत्तरदाहिणाहिं मज्झिल्लयाहिं पुट्ठा हि । दाहिणउत्तर पुव्वा अवरा बहिराइओ कमसो ॥ ६ ॥ पुव्वावरा छलंसा तंसा पुण दाहिणुत्तरा बज्झा । अब्भितर चउरंसा राईओ पुढविरूवाओ ॥७॥ आयामपरिक्खेवो ताणं अस्संखजोयणसहस्सा ॥ संखिज्जसहस्सा पुण

विस्त्रभो होइ एयाण ॥ ८ ॥ ईसाणदिसाईसु एयाणं अंतरेसु अट्ठसुवि । अट्ठेव विमाणाइ तेसिं नामाइं एयाइ ॥ ९ ॥ अच्चिच्च अच्चिमालि य वयरोयण नाम य चभकर । चदाभ सुराभ सूराभ सुपइट्ठाभ ॥ १० ॥ तेसु सुरसग्ग सगसय चउदसहस्स १४००० नवसहस्स७ जुयलतिगे । सेसतिगे नवसय ते सव्वे ग०ग०छ६ दुरदुग्सया २२६०० ॥ ११ ॥ अडसागरट्ठिईया लोगतिय जीवयपिया देवा । सत्तट्ठभवग्गहणा इमेहिं नामेहि गिज्झति ॥ १२ ॥ सारस्सयमाइच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य । तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा मज्झि रिट्ठा य ॥ १३ ॥ एए देवनिकाया जिणवयसमए समागया सत्ति । भत्तिभरनिब्भरगा थुणति एयाहि वाणीहिं ॥१४॥ जय नंदा जय भद्दा' खत्तियवरवसभ' जय जय जिणद' । सव्वजगजीवहियय भयव' तित्थ पवत्तेह ॥१५॥ तत्तो वयगहणमणा जिण-नाहा तिगचउक्कमाईसु । वरवरिय घोसाविय दिंति य सवच्छर दाण ॥ १६ ॥ दिणि दिणि दिंति जिणा कणगकोडि अड लक्ख पायरास जा । त पोडितिसय अउसी असीइ लक्खा हवइ वरिसे (३८८ क्रोड-८०-लाख)॥१७॥ इय दाउं गहियवया विहियतवा लद्धकेवला सिद्धा । जे अरिहंता ते मज्झ दिंतु जयसेहर ठाणं ॥ १८ ॥ इति कृष्णराजीविमानविचारस्तवनम् ॥ १२ ॥

॥ अथ मोक्षोपदेशपञ्चाशकम् ॥ १३ ॥

शुद्धध्यानालविनेण, समूल क्लेशपादप । विदारितो येन स सदा, जिनो जीयाज्जगत्पति ॥ १ ॥ समस्त्यस्तसुरो मोहमूलो भव-विपद्रुम । निलीनातिचिरालीनवासनाजललालित ॥ २ ॥ आधयो विविधावस्था, व्याधयश्चाधमाधमा । जन्ममृत्युजराश्चास्य, स्व स्वरूप निरीगतम् ॥ ३ ॥ दुर्भगत्वदरिद्रत्वविरूपत्वपुरस्सरा । विडम्बना फल प्रादुर्विडम्बितजगज्जना ॥ ४ ॥ चतस्रो गतय शाखा, नाना-दु खफलाकुला । तासु यद्दु खमाख्यात, तदिदानीं निरूप्यते ॥ ५ ॥ पचेन्द्रियवधासक्ता, मांसाशनकृतादरा । जायन्ते नरके जीवा, महा-

रम्भपरिग्रहाः ॥६॥ कुम्भीपाकेन पच्यन्ते, पिष्टवन्नष्टचेतनाः । तत्र मुञ्जादि (तृणादि) वच्चैते, हन्यन्ते लगुडैर्दृढैः ॥७॥ वज्रजङ्घेषु पीड्यन्ते, निपीडयन्ते तिलेक्षुवत् । भृष्ट्रा भूमीषु भृज्यन्ते, निस्त्राणाश्चणकादिवत् ॥ ८ ॥ दारुवद्दारुणाकारैश्छिद्यन्ते च परश्वधैः । भिद्यन्ते प्रासकुन्ताद्यै राखेटकमृगादिवत् ॥ ९ ॥ तप्तं त्रपुं च पाय्यन्ते, आच्छोट्यन्ते शिलातले । आकीर्णां कण्टकैस्तीक्ष्णैरारोप्यन्ते च शाल्मलीम् ॥ १० ॥ काककंकशृगालाद्यैर्भक्ष्यन्तेऽत्यन्तनिर्दयैः । कार्यन्ते तरणं रीणा, वैतरण्याः सुराधमैः ॥ ११ ॥ यस्य जिह्वाशतं वक्त्रे, यो जीवेच्छरदां शतम् । सोऽपि वक्तुं क्षमो न स्यादशर्म नरकेषु यत् ॥ १२ ॥ इति नारकदुःखम् ॥ कूटमानतुलावन्तो, मिथ्याभाषणतत्पराः । मायाविनो जना यान्ति, तैरश्चं जन्म निश्चितम् ॥१३॥ यादृशं नरके दुःखं, तिर्यक्ष्वपि च तादृशम् । यतो वाहनदोहाद्या, व्यापदोऽत्र सुदुस्तराः॥१४॥ क्षुत्तृष्णाबाधिता दीनाः, पारवश्यमुपागताः । वहन्ति पशवो भारं, पृष्ठकण्ठसमर्पितम् ॥ १५ ॥ केचनादाहदोषेण, दाहदोषेण केचन । केचिदङ्कुशघातेन, कशाघातेन केचन ॥ १६ ॥ केचिद्वधेन वन्धेन, निरोधेन च केचन । कर्णपुच्छच्छविच्छेदनाशावेधादिभिस्तथा ॥१७॥ अपारदुःखसंसारमध्यमग्ना दिवानिशम् । साक्षादेवेह दृश्यन्ते, तिर्य्यञ्चो वञ्चिताः शुभैः॥१८॥ इति तिर्यग्दुःखम् ॥ सामान्यदानदातारस्तुच्छ-कोपादिकिल्विषाः । लभन्ते मानुषं जन्म, जन्मिनो मध्यमैर्गुणैः ॥ १९ ॥ रौद्रदारिद्र्यतस्तत्र, मृतभावातिशायिनः । केचित्कथञ्चिज्जीवन्ति, मानवा मानवर्जिताः ॥ २० ॥ केचिन्निष्ठुरकुष्ठेन, सुष्ठु कष्टां दशां गताः । अन्ये ज्वरातिसारादिरोगोरगविषातुराः ॥ २१ ॥ परकर्म्मकराः केचिन्मलिनाननलोचनाः । दृश्यन्ते क्लेशजलधौ, मग्ना नग्ना अनादृताः ॥२२॥ अन्ये स्कन्धसमारूढप्रौढभारा दृढापदः । जीवत्यतिजघन्येन, कर्मणा कर्म्मणोज्झिताः ॥ २३ ॥ ज्वलज्ज्वलनसम्पर्ककर्कशैर्विहानलैः । केचित्तापितसर्वाङ्गा, ग्लायन्ति गलितोद्यमाः ॥ २४ ॥ इति मनुष्य-दुःखम् ॥ अकामनिर्ज्जरादिभ्यः, केचन स्युः सुरा अपि । तत्रापि न सुखख्यातिः, काचिदस्ति सतां मता ॥ २५ ॥ विद्यमानहृदया, ईर्ष्या

शल्यैर्दुरुद्धरै । विषादवहूलावहाय, निपतन्त्यत्र केचन ॥ २६ ॥ कण्ठलोठितवादित्रा, हठतोऽकुण्ठतापरा, । रङ्गस्थानेऽवतार्यन्ते, दीर्यमाणाङ्गिका इव ॥ ॥२७॥ स्तम्बेरम(हस्ति)तुरङ्गादिवाहनाकारधारिणः । दयाबाह्य च वाह्यन्ते, केऽपि सृण्यादिघट्टनै ॥२८॥ चण्डालाकृतयः केचिच्चण्डदण्डैर्निपीडिता । स्वप्नेऽप्यलब्धसचारा, पुरन्दरसभादिषु॥२९॥ स्वर्गाच्च्युति विलीन च, गर्भजम्बाल(कादव) लोलनम् । पश्यन्तो यत्र भिद्यन्ते, तद्वज्रतनव सुरा ॥ ३० ॥ इति देवगतिदुःख ॥ यथेह लवणाम्भोभि , पूरितो लवणोदधि । शारीरमानसैर्दुःखैरसङ्ख्येयैस्तथा भव ॥३१॥ किञ्चित्स्वप्नाप्तधनवन्न तथ्यमिह किंचन । असार राज्यवाज्यादि, तुपकण्डनवत्तथा ॥ ३२ ॥ तडिदाडम्बराकार, सर्वमत्यन्तमस्थिरम् । मनोविनोदफलद, बालधूलीगृहादिवत् ॥ ३३ ॥ यश्च कश्चन कस्यापि, जायते सुखविभ्रम । मधुदिग्धासिधाराग्रग्रासवत्तन्नैप सुन्दर ॥३४॥ इति संसारस्वरूपदु ख ॥ अत एव विरज्यन्ते, नीरजोज्ज्वलमानसाः । रोगादिव भुजङ्गाद्वा, ससारावासतोऽमुत ॥३५॥ यतन्ते च सदानन्दसुधानीरधयेऽधिकम् । परमब्रह्मसज्ञाय, पदाय विगतापदे ॥ ३६ ॥ स्मरज्वरज्वरा मुख्या, दोषा भवभुवोऽत्र ये । सर्व्वथा ते न सन्त्येव, यत्र तत् परम पदम् ॥ ३७ ॥ सर्व्वकल्याणसयोग,, सर्व्वमङ्गलसगम । सर्व्वोपादेयसीमा च, यतस्तन्मृग्यते बुधै ॥ ३८ ॥ यथाऽमृतरसास्वादी, नान्यत्र रमते जन । तथा मुक्तिसुखाभिज्ञो, रज्यते न सुखान्तरे ॥ ३९ ॥ तीर्णप्रायभवाम्भोधिर्धूतसम्मोहकश्मल । कश्चिदेव महाभागो, भवेत्सिद्धिसुखोन्मुखः ॥ ४० ॥ इति मुक्तिसुखस्वरूप ॥ चौराकुलपथप्राप्तो, यादृशो दुर्गसग्रहः । गम्भीरसलिलेऽम्भोधौ, द्वीपाप्तिरथवा यथा ॥ ४१ ॥ महाशैलगुहायां वा, ज्वलद्रश्मिर्म्मणिर्यथा । विवेको निर्म्मलस्तद्वत्पुण्यभाजा विजृम्भते ॥४२॥ इति विवेकस्वरूप ॥ क्रियाभिज्ञानमूलाभिर्मोक्षोऽक्षेपेण सिध्यति । ता पुनर्देवतापूजागुरुसेवादयो मता ॥४३॥ विशुद्धकेवलालोकविलोकितजगत्त्रय । प्रातिहार्य्यमहापूजाजनितासमविस्मय ॥४४॥ समस्तजगतामेक, मौलिमाणिक्यमुज्ज्वलम् । अर्हन्नेव सता देवो, देवतागुणभूपितः ॥४५॥ इति देवस्वरूप ॥

गुरुर्गृहीतशास्त्रार्थः, परां निःसङ्गतां गतः। मार्तण्डमण्डलसमो, भव्याम्भोजविकाशने ॥ ४६ ॥ गुणानां पालनं चैव, तथा वृद्धिश्च जायते । यस्मात्सदैव स गुरुर्भवकान्तारतायकः ॥४७॥ इति गुरुस्वरूपं ॥ स पुनर्जायते तावदाचारात्सज्जनश्रुतेः । आत्मबोधविशेषाच्च, पुण्याच्चेत्याह सर्ववित् ॥ ४८ ॥ अक्षुद्रता दया दाक्ष्यं, क्षमा वाक्ष्य(चाक्ष)विनिग्रहः । न्यायानुवृत्तिरनघा, यत्नश्च श्रुतशीलयोः ॥ ४९ ॥ समानधर्म्म-वात्सल्यं, यतिधर्म्मादरः परः । इत्यादिः कुशलारम्भो, मुक्तिमार्ग्गतया मतः ॥ ५० ॥ इति धर्मस्वरूपं ॥ मोक्षोपदेशपञ्चाशदेषा भाव्या मुमुक्षुभिः । स्यान्मुनीन्द्रमुनीशेष्टं, येन मुक्तौ स्थिरं मनः ॥ ५१ ॥ इति श्रीमुनिचन्द्रसूरिविरचिता मोक्षोपदेशपञ्चाशिका समाप्ता ॥ १३ ॥

अथ शुद्धधर्म्मयोग्यजीवोपदेशपञ्चाशिकाप्रारंभः ॥ १४ ॥

जिणिंदचंदाण कमारविंदे, वंदित्तु संकंदणवंदणिज्जे । भणामि संखेवमहं गुणाणं, धम्मारिहाणं किल जे जियाणं ॥१॥ लद्धूण माणुस्स-भवं भवंमि, भविज्ज भो भव्व! भवा विरत्तो । धम्मे दढारूढमणो जमेत्तो, न सुंदरं किंचिदिहऽन्नमत्थि ॥ २ ॥ चिंतामणी चित्तविचिंति-याणं, महोसहं सव्वदुहामयाणं । आणाणुसारेण सरेज्जमाणो, कि नाम कल्लाणमिमो न कुज्जा? ॥ ३ ॥ एयस्स लोगप्पहुणो पणीओ, जोगो जुओ जो गुणसंपयाए । एसा अखुद्दत्त१पसन्नरूव२, सहावसोमत्त३जणप्पियत्तं४ ॥ ४ ॥ अक्रूरभावो५तह भीरुयत्ता६ऽसढत्त७ दक्खिन्न८ सलज्जभावो९ । दयालु१०मज्झत्थपसन्नदिट्ठि११, गुणाणुरागित्त१२मुदाहरंति ॥ ५ ॥ सुद्धकहा१३ सुंदरपक्खगाहो १४, सुदीहदंसीत्त १५ विसेसनाणं१६ । वुड्ढाणुगामित्त१७विणीयभाव१८, कयन्नु १९ सत्तीइ परोवयारो२० ॥६॥ सुलद्धलक्खणत्त२१मेगवीस-मिमे गुणा तेहिं विभूसितो जो । सो चेव संसुद्धजिणिंदधम्माचिंतामणीपावणपच्चलोति ॥ ७ ॥ संपुन्नपुन्नो कुसलत्तणाइगुणोववेओ य जणे जहेत्थ । जोगो पहाणाण मणीण जाण, तहेव एयस्सवि एस भव्वो ॥ ८ ॥ अखुद्दचित्तत्तणओ हवेज्ज, तओ तुमं धीरगहीरभावो ।

अणुसुओ इट्ठमागमेसु; कहिंवि णट्ठेसु अदुम्मणो य ॥ ९ ॥ पाएण वज्झेवि गुणा भवंति, रूवे पसन्ने महुरे णराण । अन्भंतरे किं पुण सीलरूवे?, जग्ज्न तो सठवणमि तस्स ॥ १० ॥ सोमो जहा सोम' सुदसणिज्जो, सहावसोमत्तणओ गुणाओ । तहा तुम चिट्ठणभासणेसु, होज्जा महाणदकरो जणाण ॥ ११ ॥ जणप्पिओ सुदर ' तेण अप्पा, तएउजाएण जहोचिएण । कज्जो जओ धम्मगुणाणुराग, जणा कयाणदमणा कुणंति ॥ १२ ॥ सव्वस्स पल्लाणविचिंतगाण, समतओ भद्दपरंपराओ । भवंति कूरत्तणमप्पमत्तो, चएज्ज त सपुनणमि चित्त ॥ १३ जहा मसाणिंधनमद्धदड्ड, तहा जणो मीलकलंकिओ जो । कलंकपकाउ कुलाइहीलाणिबंधणाओ भव भीरुभावो ॥१४॥ पुव्व मणो होज्ज जहा तहेव, भासिज्ज चिट्ठिज्ज तुम तओ ते । दढ दढत्तेणऽजढस्स होही, सुद्ध जमो निम्मलधम्मकम्म ॥१५॥ धीरो गंभीरो हयमच्छरो य, पवन्नदक्खिन्नभरो भवित्ता । परत्थ मज्झत्थियसूरयाए, करेज्ज सव्वत्थ पसत्थचित्तो ॥१६॥ लज्जिज्ज सव्व सपससणमि, मज्झे महताण पहाणभावे । कहिंचि दुट्ठाइ कुलट्ठिईए, भगे अणायारनिसेवणाय ॥ १७ ॥ दयालुया धम्मधणस्स मूल, तओ तदत्थी पढम तमेव । करेज्ज ईसिंपि परिच्चएज्जा, तुम परुव्वेयकरिं पवित्ति ॥ १८ ॥ अपक्खवाएण (अपक्षपातेन) णिए परे य, जणमि वट्टिज्ज ठिइ ठवितो । एव च मज्झत्थगुणत्तणाओ, विस्सभणिज्जोऽसि तुम जणाण ॥ १९ ॥ निद्ध सुतार सरल सलोण, पफुल्लनीलोप्पलकोमल च । जणमि पीयूसमितुम्मुयत, चक्खुप्पसन्न सइ निक्खिवेज्जा ॥ २० ॥ नीहारहारुज्जलसालिसीले, जणे गुणनम्मि रइ करेज्जा । जओ जिओ तग्गुणसित्तचित्ते, ण रज्जए दोसविसे कहपि ॥ २१ ॥ मुचेज्ज मिच्छाभिनिवेसबुद्धिं, वइ तहा दोसवइ सहावि । कह च पक्ख च विसुद्धमेव करेज्ज सद्धम्मपरायणाण ॥ २२ ॥ मा निप्फलारभपरो भवेज्जा, पराभवट्ठाणकरो स जम्हा । सुदीहदसित्तणओ विहेज्ज, कज्जाइ पज्जतसुहावहाइ ॥ २३ ॥ जाणेज्ज सव्वत्थ तुम विसेस, गुणाण दोसाण य निव्विसेस ।

सब्बुद्धिजोगेण तओ न होही, पओयणे कत्थुइ विप्पलंभो ॥२४॥ वुड्ढाणुगामित्तणओ णराणं, बुद्धीउ सुद्धाउ समुब्भवंति । वयं च सत्थं च समेच्च वुड्ढे, तुओ तुमं धीर! सया सरेज्जा ॥२५॥ अप्पाणमच्चंतविणीयभावं, ठवेज्ज धम्मो विणयप्पहाणो। तहा ण कल्लाणमणूणमण्णो, जहा विणीओ विणयादुवेइ ॥ २६ ॥ कयन्नुया नाम गुणाण मूलं, दोसाण मूलं च कयप्पणासो। थेवंपि मन्नेज्ज परोवयारं, न सव्वहा निण्हवमायरेज्जा ॥ २७ ॥ जम्मं च जीयं च धणं च चारु, तं चेव चिंतेज्ज सलक्खणं च। जं मे परत्थंमि समुज्जएक्कचित्तस्स साहेज्ज करं हवेज्ज ॥ २८ ॥ विचिंतिऊणं निउणं हवेज्जा, सव्वंमि कज्जे लहु लद्धलक्खो । एवं चमुक्कारकराइ होंति, किलाकिलेसेण पओयणाइं ॥ २९ ॥ एए गुणे धीर! तुमं धरेंतो, गुणाण लोगुत्तरसंगयाणं । अप्पाणमप्पेज्ज जमन्नहा ते, तदुब्भवत्तेण न चेव होंति ॥ ३० ॥ अकारणा नत्थिह कज्जसिद्धी, न याणुवाएण वयंति तन्ना । उवायवं कारणसंपउत्तो, साहेइ कज्जाइ पयत्तवं च ॥ ३१ ॥ दुमंमि पुप्फं च फलं च पच्छा, जहा कमेणेव रसप्पसिद्धी । भव्वे तहा लोयगुणा तओ य, लोगुत्तरा सिद्धिसुहं च तत्तो ॥ ३२ ॥ जहुच्छुकंडाण रसा सहावा, सीओ सिणिद्धो महुरो य होइ। एमेव एए सुकुलुग्गयाणं, भवंति पाएण गुणा जणाणं ॥३३॥ जहा रसो सो परिकम्मणाओ, गुडाइ-पज्जायपरंपराए। वरिसोलगुप्पत्तिरसावसाणं, लहेज्ज माहोज्जगुणं तहेव ॥ ३४ ॥ एयाणमेतेऽवि गुणा गुरूणं, चारित्तवंताण बहुस्सुयाणं । संसग्गओ पन्नवणागुणाओ, लोगुत्तरत्तेण परीणमंति ॥३५॥ लोगुत्तरे धम्मपहे पवन्ने, भवेज्ज सुगुत्तविहिप्पहाणो । मोहंधयाराउ जियंमि लोए, न सत्थदीवादपरो पयासो ॥ ३६ ॥ जिणाणमाणाणुगमेण हीणो, धम्मो न धम्मत्तणमावहेइ । पेच्छाच्छणोक्किण्णिविलोयणाणं, जहा सुचुक्खोवि न किंचिदेव ॥३७॥ तंबं जहा सिद्धरसाणुविद्धं, चएज्ज तंबत्तमसेसमेवं । भावस्सरूवं विसमंपि भव्वा !, आणापरीणामगुणाण जाण ॥ ३८ ॥ भव्वत्तमेत्थं किल तंबधाऊ, तंबत्तमक्खुद्दगुणाइभावो । आणारसो सुद्धगुरुप्पसिद्धो, सुवन्नभावो य जियाण मोक्खो ॥३९॥

वेलावद्दाणाइगुणोववेय, करेज्ज चीवदणमायरेण । अवभनिव्वाणफल तिसमं, पमोयरोमचियमगुवंगो ॥ ४० ॥ जहोचियाओ किरियाउ हाणी सय च तेसिं च न पाउणन्ति । काले विहाणेण तुम गुरूण, करेज्ज पुज्जाणमुवासणति ॥४१॥ तहा असदिद्धमणो गुणेज्ज, सिद्धतससिद्धपयत्थसत्थ । कहिंचि सदेहमुवागओऽवि, बहुस्सुए तस्थ पमाणएज्जा ॥ ४२ ॥ पयपएण परिसठविन्तो, तयत्थमन्नत्थमणुस्सरतो । सवेयनिव्वेयरस फुसतो, सज्झायमज्झीणमणे सरिज्ज ॥ ४३ ॥ एव च सामाइयमाइकिन्चे, लोगुत्तरे चत्तपमत्तभावो । उदग्गवेरग्गसमग्गचित्तो, जत्त सत्तीएँ पवत्तएज्जा ॥ ४४ ॥ अकडचडानिलसपणुएणविलोलजालासयसकुलमि । जहा पलित्तमि (ज्वालेते) गिहे न जुत्तो, सुबुद्धिणो जागरओऽणुरागो ॥ ४५ ॥ एमेवमत्रतमभिदुयमि, जराइ मच्चूइ भवमि निन्च । वियेयव निक्खमणेक्कचित्तो, ण रज्जए कत्थइ वत्थुभेए ॥ ४६ ॥ अव्वगसीलगमणगरगभगक्खम चत्तसमत्थसगो । पउत्तजत्तो य नहुसमेव, कया णु चारित्तमह चरिस्स ? ॥ ४७ ॥ एव सुचिंतापरमो गिहमि, वेसागिहावाससम वसिज्जा । तुम तओ अप्पडियद्धभावो, एट्टे विएद्धमि न झिज्जसित्ति ॥ ४८ ॥ विसुज्झमाणज्झवसायजोगा, कम्मे किलिट्ठमि पलीयमाणे । इह जसो चित्त चए सुह च, सग्गोऽपवग्गो य परत्थ होइ ॥ ४९ ॥ तुम्हाण भणिय मए जिणमउद्देसेण सरेवओ, एय निम्मलधम्मकम्मविसए जोगत्तसूयापर । ता तुम्भ भणियाणुसारविहिणा यट्टेज्जहा सव्वहा, ससारासयऽसखदुक्खगहणो मोक्खो जओ नऽन्नहा ॥ ५० ॥ इति शुद्ध-धर्म्मयोग्यजीवोपदेशपञ्चाशिका समाप्तेति ॥ १४ ॥

॥ अथ हितोपदेशकुलकपञ्चविंशती द्वे ॥ १५ ॥

निसुणतु मए परिरभिऊण भव्वा[1] मए समाहिम्मि । उवएसलेसमणवज्जकज्जमेय भणिज्जत ॥ १ ॥ दुलह ता मणुयत्ते पत्ते

खित्तारियत्तमित्तो य । निम्मलकुलजाइसमग्गरूवयारोम(ग्ग)सामग्गी ॥ २ ॥ तत्थवि महद्दहट्ठियकुम्भस्स मयंकमंडलालोओ । चम्मंतरेण दुलहो जह तह जीवाण जिणधम्मो ॥ ३ ॥ पत्तोऽवि पमत्तेहिं सत्तेहिं पत्तयाविउत्तेहिं । चिंतारयणं व महोयहिंमि हारिज्जए एसो ॥ ४ ॥ ता पाविऊण एयं मुक्कपमाएण कुसलपुरिसेणं । एयथिरत्तनिमित्तं निसेवणिज्जाइं एयाइं ॥ ५ ॥ जिणसासणाणुरागो निच्चमचागो (अत्यागः) सुसाहुसंगस्स । सम्मं च सुयब्भासो तह तह भवभावणुल्लासो ॥ ६ ॥ मरुपहपहिओ कप्पदुमं व पोयं व जलहिजलपडिओ । चिंतारयणं व चिरं दारिद्दोवद्दवाभिहओ ॥ ७ ॥ संपइ रे जीव! तुमं धम्मं सव्वन्नुनाहपन्नत्तं । पत्तो कहिंचि नूणं ता तं संपुन्नपुन्नोऽसि ॥ ८ ॥ सुलहं सव्वंपि जए रे जीव! सुरेसरत्तमाईयं । निव्वुइसुहाण साहणमणहो दुलहो य जिणधम्मो ॥ ९ ॥ तम्हा इणमेव पुरो काउं हाउं च पावच-रियाइं । जुत्तं पवत्तिउं ते जेण खणो दुल्लहो एसो ॥ १० ॥ एवमणुसासणिज्जो अप्पा निच्चंपि भवविरत्तेणं । चित्तेण जेण ण जिओ जिणमयं हाउमुच्छहइ ॥ ११ ॥ कमलुज्जलसीलासिरिसुगंधिणो वंधुणो य भुवणस्स । निच्चं निसेवणिज्जा मुणिणो गुणिणो पयत्तेणं॥१२॥ दढमारूढगुणोऽवि हु जीवो इह साहुसंगपरिहीणो । पाउणइ गुणविणासं जएज्ज ता तेसि संगकए ॥१३॥ सिद्धंतधारगाणं विसुद्धसीलंग-संगसुभगाणं । दूरट्ठियाणंपि मणे करेज्ज सुमुणीण संभरणं ॥ १४ ॥ मंतविवज्जियमोमज्जणं व निज्जीवदेहकिरियंव । सुयवहुमाणविहीणं सुन्नं मन्नेज्जऽणुट्ठाणं ॥१५॥ तत्थ पढमं पढेज्जा सुत्तं तत्तो सुणेज्ज तस्सऽत्थं । सुत्त(अत्थ)विहीणं पुण गुयमपक्कफलसंस(भक्ख)णसारिच्छं ॥१६॥ सुत्तं पढियंपि बहुं अपरिन्नायत्थमित्थमक्खायं । सुक्कस्स इक्खुणो भक्खणंव ण रसमं सकज्जस्स ॥१७॥ भणियाणागरणवओ समयन्नू पन्नवंति णाणंपि । भारकरं चिय दूभगमहिलाहरणं व वहुयंपि ॥ १८ ॥ ता भववाहिचिगिच्छासत्थं सुत्थियपयत्थपरमत्थं । जिणवयणमणु-दिणं चिय पढिज्ज णिसुणेज्जऽणुट्ठेज्जा ॥ १९ ॥ भावेज्जा भवरूवं जह इह सरयब्भ(शरदभ्र)विब्भमं सव्वं । जियजोव्वणपियसं-

गममाई रणन्दिएणद्वति ॥२०॥ उन्नणपवणपणोल्लियमहल्लहुल्लतजलणजालमि । गेहम्मि व मनेज्जा रणपि ण खमो भवे वासो ॥२१॥ जह दुज्जणजणसगो भगफलो तह दुहावसाणो य । ससारे तह तियसत्तणाइसोव्खाण परिणामो ॥ २२ ॥ एको ऽत्थ पसत्थसमत्थवत्थु वित्थारफुरियमाहप्पो । पमुहावसाणसुदरपरिणामो नवरि जिणधम्मो ॥ २३ ॥ तेण अलद्ध लभ्दु लद्ध परिपालिउ इमे वुद्धे । परिपालिय च परम वुड्ढी नेउ पयत्तेज्जा ॥ २४ ॥ धन्ना भवदुक्खाण तिकूराए असखलक्खसराए । एय विरेयणोसहमुवएस केइ पावेंति ॥ २५ ॥ ॥ इति प्रथमा हितोपदेशकुलकपञ्चविंशतिका ॥ १ ॥ अथ द्वितीया ।

सुणेह भो भव्वजणा' भत्तिा, सम्म समाहाणपहाणचित्ता । असारससारविरागहेउ, धम्मोवएस सहल विहेउ ॥ १ ॥ पलित्तमदिरागारो, सच्चमन्चतभीसणो । एसो भवोयही तिक्खदुक्खलक्खऽवलक्खिओ ॥ २ ॥ अवभ कारण जम्मे, मरणस्स सरीरिणो । दुरतो य कयतोऽवि,कयनासो समतओ ॥३॥ पर पराभवट्ठाण, दालिद रोद्दरूवय । अब्भच्छायव्व लच्छीयो, तुच्छाओ पिच्छ निच्छिय ॥४॥ जलमि मच्छलुत्थल्लतुल्ले य पियसगमो । खण पणट्ठिया कट्ठमणिट्ठाण समागमा ॥५॥ तहावि छिन्नवल्लोहठोहवतो जिया इह । जहाचिंतियमत्थाण, सपत्ती पुण दुल्लहा ॥६॥ धम्माभिप्पायविग्घस्स, कारओ वल्लहो जणो । पाय स भावगब्भेण, पेम्मेण य विवज्जिओ ॥७॥ मग्गमेत्तगवेसीओ, आवयाउ खणे खणे । पच्चासन्न निसन्नो य, निच्च मच्चू सरीरिण ॥ ८ ॥ जोव्वण जीविय रूव, विज्जुविज्जोयचचल । ता इत्थ पडिबधस्स, ठाणमत्थि न किंचिवि ॥ ९ ॥ जहा महासमुद्दमि, चुए चिंतामणी तहा । दुल्लभे माणुसे जम्मे, सुद्धजाईकुलन्निए ॥ १० ॥ त लद्धूण महाभागा', रागादेगतओ तओ । पमायस्स खमो(य)काउ, तुम्हाण धम्म उज्जमो ॥११॥ तत्थ विच्छिन्नससारकतारुत्तारकारओ । देवो जिणो पयत्तेण, सेवणिज्जो विहाणओ ॥ १२ ॥ तहा भीमभवुव्विग्गा, सम्म मग्गाणुगामिणो । निहाण णाणमाईण, वदणिज्जा

सुसाहुणो ॥ १३ ॥कामग्गहमहामंतो, कम्मदारुदवानलो । मोहदावजलुप्पीलो, मिच्छत्ततमदीवओ ॥ १४ ॥ कल्लाणकंदलीकंदो, जिणिंदपरिभासिओ । सोयव्वो सुप्पणिहाणं, सिद्धंतो तेसिमंतिए ॥ १५ ॥ तहा तस्साणुसारेणं, पसन्नेण मणेण य । कज्जो चीवंदणाईमि, धम्मकज्जे समुज्जमो ॥ १६ ॥ मूलओ चेव दुस्सीलजणसंसग्गिवज्जणं । सुसीलजणसंवासो, कसाइंदियनिग्गहो ॥ १७ ॥ तहाणुव्वयमाईया, जे य पुव्वमभिग्गहा । पवन्ना जायए वुड्ढी जहा ताण तहा करे ॥ १८ ॥ देज्जा दीणाईणं दाणं, सीलेज्जा सीलमुज्जलं । जहासत्तीएँ तप्पेज्जा, तवं भावेज्ज भावणं ॥१९ ॥ साहुविस्सामणाइम्मि, रमेज्जा विणए तहा । अपुव्वापुव्वरूवे य, पवज्जेज्जा अभिग्गहे ॥ २० ॥ सुद्धसज्झायझाणेसु, अपुव्वपढणम्मि य । सदोसगुणचिंताए, चित्तं दिज्जा निरंतरं ॥ २१ ॥ वज्जेत्ता सेससावज्जं, कज्ज पव्वज्जमुज्जलं । कया अहं पव्वज्जामि, इई चिंतेज्ज निच्चसो ॥ २२ ॥ मित्तत्तं सव्वजीवेसुं, गुणरागो गुणन्नुसुं । दुक्खिएसु दयालुत्तं, निग्गुणाणमुवेहणं ॥ २३ ॥ गंभीरत्तमुदारत्तं, धीरभावो थिरत्तणं । एवमाइ गुणग्गामं, सुद्धमब्भूयमब्भसे ॥ २४ ॥ एसो मए तुम्हमणुग्गहत्थो, हिओवएसो भणिओ महत्थो । एयाणुसारेण तओ य निच्चं, कायव्वमेत्तो सयलंपि किच्चं ॥ २५ ॥

॥ इति हितोपदेशकुलके समाप्ते ॥ **अथ उपदेशामृतपञ्चविंशातिका** ॥ १६ ॥

भो भो भव्वा! सवणंजलीहिं दुहदाहपसमणसमत्थं । उवएसामयमेयं पिवह खणं मोक्खसोक्खकए ॥ १ ॥ गंभीरनीरनीरहिनिहित्तमुत्ताहलं व मणुयत्तं । लद्धुं सधम्मकम्मायरेण सहलं विहेयव्वं ॥ २ ॥ तस्स य सुधम्मकप्पद्दुमस्स सुरणरसामिद्धिकुसुमस्स । निव्वुइसुहविउलफलोहसालिणो मूलमभियाइं ॥३ ॥ सिद्धंतसुई सुगुणीण संगमो मच्चुणो सया चिंता । तह दुक्कडसुकडाणं कडाण फलचिंतणं चित्तं ॥ ४ ॥ समयसुइसलिलसित्ता कसायदवदूमियावि भव्वदुमा । जायंति बहलवेरग्गपल्लवुल्लासिणो झत्ति ॥५॥ मोहविसोवसमखमं जमोसहं

विसमकम्मरोगाण । तस्स सपुरणा समयामयस्स रसपाइणो हाँति ॥ ६ ॥ निम्मलनाणपहाणा जलनिहिणो चरणकरणरयणाण । कप्प-
दुम व मयय सुमाहुणो सेवणिज्जत्ति ॥ ७ ॥ निच्च च रालियसीलेहिं सयव सव्वहा विवज्जेज्जा । ज जीवो समग्गेण तम्मश्रो होइ
चविरेण ॥ ८ ॥ होज व ण वा पहुत्त दोमाययणेसु वट्टमाणस्स । भूयफलदोसदरिसी भूयच्छाय विवज्जेइ ॥ ९ ॥ पिप्पलदलग्गलग्गो
व्व जललवो चवल विंतिज्जा । जीयममुणियागमण मरण अइदारुणसहाव ॥ १० ॥ अनिवारणिज्जमेय सयणधणाईण भावहेऊ य ।
ता एयमि अपत्ते जुत्त हियमप्पणो काउ ॥ ११ ॥ चिंतेज्ज दुक्खाण पमायचरियाण विरसमवमाण । दुस्सहदुरतमयसयदुक्खरूव जञ्ञो
भणिय ॥ १२ ॥ न तहा विस न सत्थ न विसहरो दारुणो हुयासो य । जह जीवाण पमाश्रो अणत्थसयसाहणो होइ ॥ १३ ॥ सवसा
विगुते कम्म पमायश्रो तेण परमा होंति । मवसो दुक्खइ रुक्खइ निवडेइ परव्वसो तत्तो ॥ १४ ॥ अमल भावेज्ज फल धम्माईण विहाण-
विहियाण । सुरनुग्गमाइसग्गापवग्गसुहसपयारूव ॥ १५ ॥ कप्पदुमोवि चिंतामणीवि जीवाण कामधेणुवि । न तहा कप्पति फल जहप्पणो
मुद्धचरियाइ ॥ १६ ॥ कप्पदुम तरोण व पाणरवइण कामधेणू व । चिंतामणिसुवलेण व किणेज्ज देहेण धम्मधण ॥ १७ ॥ इहइपि
भगवयाण सलाहणिज्जो सय सुही चेव । सुविसुद्धधम्मकम्मे समुज्जश्रो जायए जीवो ॥ १८ ॥ ता सव्वहा जएज्जा तह जह मणुयत्तणाइ-
सामग्गी । एसा जिणाणमाणाऽऽराहणश्रो फलवई होई ॥१९॥ तत्थ सिवसाहणाण चिइवदणमाइयाण सव्वेसिं । आवस्सयाण हाणी थेवा-
वि न रक्खणिज्जत्ति ॥ २० ॥ तहऽणुव्वयमाईण पडिवन्नगुणाण पालणे जत्तो । करणिज्जो अइयारा दूर परिवज्जणिज्जा य ॥ २१ ॥
पसमामएण जह जह कसायविसमुवसम पवज्जेइ । चिट्ठणभासणसचिंतणाणि तह तह विजेयाणि ॥ २२ ॥ तुसखडण व मयमडण व
तह सुन्नरन्नरुन्न य । सपुन्नपि य जमुवसमसुन्न मन्नेज्जऽणुट्ठाण ॥२३ ॥ किं बहुणा? कुसलासयकप्पतरू पडियरणीश्रो वहाऽपमत्तेहिं । जह

न कुवियप्पदुक्कयदूसिओ निप्फलो होई ॥ २४ ॥ धन्ना हिओवएसाण भायणं पाणिणो परं होंति । तं एयं अन्नंपि य जं जुत्तं तं विहेयव्वं ॥२५॥
॥ इत्युपदेशामृतपञ्चविंशतिका समाप्ता ॥ १६ ॥

॥ अथ धर्मोपदेशामृतपञ्चविंशतिका, आर्यावृत्तम् ॥ १७ ॥

विसमो विसयविसदुमो वेरग्गकरेण जेण मूलाओ । उम्मूलिओ सुहत्थी सो जयइ जिणो महावीरो ॥ १ ॥ विसयासुइलोलाणं विसयविसावेसपरवसमणाणं । अणुसासणं जियाणं इणमो भव्वा? निसामेह ॥ २ ॥ जह मंसं कुट्ठीणं अहवा जह जरपराण घयपाणं । जह विदलं मूसीण तह विसया मोहबहुलाणं ॥ ३॥ ते पुण पंच पयारा सद्दा रूवा रसा य गंधा य । फासा य भावरोगो अणाइमं तेसु जा मुच्छा ॥ ४ ॥ खीणे इमम्मि तं नत्थि जन्न दुक्खं जियाण किल भीणं । तं नत्थि किंपि कल्लाणमेत्थ भुवणे न जं पत्तं ॥ ५ ॥ विसयविवागनिहालणमिह विसयविरत्तसत्तसरणं च । संतोसभावणं चिय इमस्स खमणे निमित्ताइं ॥ ६ ॥ जो रोगो जो सोगो खेओ भेओ य जो य जीवाणं । जं कारुन्नं रुन्नं च कारणं तत्थ विसयविसं ॥ ७ ॥ जं णारगाण दुक्खं जं च तिरिक्खाण जं च मणुयाणं । देवाण जं च तंपि य विसयपिवासुब्भवं सव्वं ॥८॥ विसया विसं व विसमा विसया वडिसाभिसं व मरणकरा । विसया सेविज्जंता छलवहुला तह मसाणं व ॥९॥ निसियग्गखग्गपंजरघरं व सव्वंगछेइणो विसया । किंपागपागसरिसा विसया मुहमहुरभावेणं ॥१०॥ खणदिट्ठा खणनट्ठा खणजणमणभीलणोवमा विसया । किं वहुणा सव्वेसिं विसया मूलं अणत्थाणं ॥ ११ ॥ कोसासंसग्गीए अग्गीइ व जो तया सुवन्नं व । उच्छालियवहलतेओ स थूलभद्दो मुणी जयइ ॥ १२ ॥ धन्नो सो वइरारिसी भिन्नो वइरं व जो ण तारुन्ने । लायन्नपुन्नकन्नापत्थणघणघायघडणाहिं ॥ १३ ॥ कस्स ण चोज्जं अज्जा राइमई विजणगिरिगुहामज्झे । रहनेमिमत्तहत्थी सुमग्गमोयारिओ जीए ॥ १४ ॥ अज्जावि पुप्फचूला सीलुज्जलमहिलपुप्फचूलव्व

। पुन्नपियब्भासामिवि केवलमाराहिय जीए ॥ १५ ॥ भुवणे सुदसणो खलु सुदसणो सावओवि जो तइया । अभयाए पाडिमाठिओ ण खोभिओ मरणवसणेऽवि ॥ १६ ॥ ते धन्ना समणोवासयावि जे दूरविरयविसयरसा । जणपत्थणिज्जचरिया सिवजम्मे जवुणामोव्व ॥ १७ ॥ सव्व रु सुदरी सुदरित्ति विसएसु निप्पिवासाए । सट्ठिं वाससहस्सा आयाममणुट्ठिय जीए ॥ १८ ॥ भुवणत्तयपच्चक्ख उम्मीलियविमलसीलमाहप्पा । जयवइणिज्जचलणा सीया सुलसा सुभद्दा य ॥ १९ ॥ अइदुग्गमविसयग्गामसामिउद्दामकाममयमलणे । अन्नेवि महासत्ते सत्ते निच्च चिय सरेज्जा ॥ २० ॥ सतोसरसामयपरिणइवसेण निम्महियविसमविसयतिसा । परमाणदमया इव इहवि सुहिणो जणा होंति ॥ २१ ॥ सतोसनदणवणे कत्तो चित्तस्स सचरतस्स । ससारमरुत्थलभमणविसयतण्हुब्भवो दाहो ? ॥ २२ ॥ सतोसपासपडिओ न पर मणमक्कडो तडप्फडइ । अइविसमविसदुमसनिभेसु विसएसु बद्धरसो ॥ २३ ॥ एसो सो अमयरसो परमाणदो इम पर तत्त । ज विसयलालसाण विणिग्गहो इदियमणाण ॥ २४ ॥ निसउम्मग्गविलग्गोऽवि एयमणुसासणकुस सिरसा । धरमाणो नियमेण करीव मग्ग जिओ जाइ ॥ २५ ॥ इति धर्मोपदेशामृतपचविंशतिका समाप्ता ॥

॥ अथ सामान्यगुणोपदेशकुलकम्, आर्यावृत्त ॥ १८ ॥

निद्दारियविसमसर वीर वदित्तु दित्तरुइपसर । दिन्नजियदिक्खसिक्ख भणामि सामन्नगुणसिक्ख ॥ १ ॥ ववहारसुद्धिजणाणिदाणिज्जवावारचागणिप्फन्ना (*व्यापारत्यागनिष्पन्ना*) । कालुचियऽवियलसद्धम्मकम्मपरिपालणसरूवा ॥ २ ॥ सखाण धवलपहा गभीरयाविव महासमुद्दाण । चदाण सिसिरजोण्हव्व णयणसोहव्व हरिणीण ॥ ३ ॥ उच्छूण महुरयाविव धम्मियकुलजाइधम्मसब्भावो । जइविहु सिद्धा सा तेसि तहवि एव समवसेया ॥ ४ ॥ णाणवयवुड्ढसेवा सत्थब्भासो परोवयारित्त । सच्चरियजणपससा दक्खिन्नपरा-

यणत्तं च ॥ ५ ॥ उत्तमगुणाणुरागो अणुस्सुगत्तं अखुद्दभावो य । परलोयभीरुयत्तं सव्वत्थ अणत्थपरिहारो ॥ ६ ॥ गुरुदेवातिहिपूयण-मपक्खवाएण णायदरिसित्तं । असदग्गहवज्जणया सपणयपुव्वाभिभासित्तं ॥ ७ ॥ वसणंमि सुधीरत्तं संपत्तीए अणुव्वणत्तं च । स-गुणपसंसालुज्जणमत्तुक्करिसस्स परिहारो ॥ ८ ॥ नयविक्कमसालित्तं लज्जालुत्तं सुदीहदरिसित्तं । उत्तमकमवत्तित्ता पडिवन्नभरेक्कधव-लत्तं ॥ ९ ॥ उचियट्ठिइपरिवालणमदुराराहत्तणं जणपियत्तं । परपीडापरिहारो थिरया संतोससारत्तं ॥ १० ॥ अणवरय गुणब्भासो परत्थ संपाडणिक्करसियत्तं । पयईए विणीयत्तं हिओवएसोवजीवित्तं ॥ ११ ॥ गुरुजणरायाईणं अवन्नवायाइकारिपरिहरणं । इहपरलोया-वायाइचितणं चेव अइनिउणं ॥१२॥ एमाइगुणगणो उत्तमेहि इहपरभवे हि हियहेऊ । अप्पाणयंमि णिच्चं णिवेसियव्वो पयत्तेणं ॥ १३ ॥ इय गुणजोगाराहिय सामन्नविहिं गिही अजत्तेणं । साहेइ विसेसविहिंपि नूणं तदवंझहेउत्ति ॥ १४ ॥ सामन्नगुणाऽसत्तो किमलं धरिउं नरो विसेसगुणे? । नहु सरिसवंपि वोढुं असमत्थो मंदरं धरिही ॥ १५ ॥ इय सामन्नगुणज्जणजुत्तो धीरो जएज्ज निच्चंपि । सुत्तोवग समणोचियगुणेसु तम्मूलगा जं ते ॥ १६ ॥ तत्थ पुण विसेसगुणा अणुव्वयाई उ सावयाणुचिया । साहूण खमा मद्दव अज्जव मुत्ती पहा-णाओ ॥१७॥ जह दुद्धं धेणूओ दुमाउ पुप्फं जलाउ जह कमलं । आयारपरबहुस्सुयगुरुसिक्खाओ तह गुणावि ॥ १८ ॥ जं दक्खोऽवि न पेक्खइ गुरुसिक्खावज्जिओ गुणविसेसं । जह निम्मलावि चक्खू पयासरहियाण घडपडाइ ॥ १९ ॥ विउलोवि हेममउलो (सुवर्णमुकुटः) सुवन्नगारं विणा न हेमत्तं । जह लहइ तहा भव्वो गुरुरहिओ भणियगुणनिवहं ॥ २० ॥ कल्लाणमेत्तमेक्कं गुणपालणपावणोवचयहेऊ । गिरिगुरुयगुणं सुगुरुं निच्चं ता पज्जुवासिज्जा ॥२१॥ इय गुणरयणपहाणा सकयत्था (सकृतार्थाः) एत्थ चेव जम्मंमि । सरयससिसारिस-जसभरभरियदियंता जियंति सुहं॥२२॥ परलोए पुण कल्लाणमालियामालिया कमेणेव । अणुभूयचोक्खसोक्खा लहंति मोक्खंपि खीणरया

॥ २३ ॥ को नाम किर सकन्नो गुणेसु सुइजत्तमेत्तसज्झेसु ? । अप्पाणमगुणसंभावणामसीमीसियं कुणई ॥२४॥ इय उवएसरसायणमुवणीयं आयरेण भव्वजणा। । पिव णिच्चमजचरिय जइ वाउमणा मणागपि ॥ २५ ॥ इति श्रीसामान्यगुणोपदेशकुलक समाप्तम् ॥

॥ अथ धर्म्मोपदेशकुलकम् ॥ १९ ॥

भुवणजणवंदणिज्जं वदिय दियमाणमन्छर वीर । धम्मोवएसलेस समासओ किंपि जपेमि ॥ १ ॥ इह भीमे भवरन्ने सन्नाणविवज्जिओ इमो जीवो । भमिओ चिर न पत्तो कहिंवि जिणदेसिय धम्म ॥२॥ ता पाविओ इह तइ सपइ विवरेण असुहकम्माण । दहगयकच्छभगीवा-ससिबिंबालोयणसमाणो ॥ ३ ॥ एसो मणकप्पियकप्पपायवो साहिओ जिणिंदेहिं । कल्लाणकामिणा तो जणेण एसोच्चिय विहेओ ॥ ४ ॥ एयस्स मूलहेऊ जीवदयाई परूविओ दसहा । ता एयंमि गुणगणे निच्च जत्तो विहेयव्वो ॥ ५ ॥ जह सेलाण सुमेरू सयंभुरमणो जहा जलनिहीण । जह चदो ताराण गुणाण सारा तहेह दया ॥ ६ ॥ सच्चेण जणपसिद्धी धम्मविसुद्धी य होइ सच्चेण । सच्चेण सुगइलाभो सच्चसारिच्छ पर नत्थि ॥७॥ एगतविरत्तमणा जे परदव्वावहारकरणाओ । किं तेसिमिह न सोक्ख ? को न जसो किं व कल्लाणं ? ॥ ८ ॥ जे बंभवय-पहाणा पुरिसा बंभावि तेसि पणमेइ । नत्थि असज्झं (असाध्य) कज्ज तेसिं सयलेऽवि भुवणेऽवि ॥९॥ तेसिं न अत्थि अपिओ न पिओ ते सयलदुक्खदूरचरा । जे सयलपरिग्गहानिग्गहेण सव्वत्थ वट्टंति ॥ १० ॥ कयकल्लाणकलावा ते इह नूण नरा न उण अन्ने । विसहरवि-सरोगसम मिन्छत्त जेहि परिच्चत्त (परित्यक्तं) ॥ ११ ॥ कोहो कद्दमकोहोव्व (कर्दमकोत्थक) कस्स नहु होइ पत्त-वित्थारो (प्राप्तविस्तार)। उव्वेयकारण दारुणाण दुक्खाण मूलखणी ॥ १२ ॥ माणो विणयविणासो माणो दुक्खद्दुमोदगसमाणो ।

माणो अमाणवसणो माणा नाणाइगुणहाणी ॥१३॥ माया य वाउलीविव (उद्भ्रमवात्येव) उच्छालइ दोसधूलिमइबहलं। जीएँ परद्धा (प्रारब्धाः) जीवा न दोसगुणदंसिणो होंति ॥ १४ ॥ लोहो भुयंगमोविव लद्धपयारो (लब्धप्रचारः) विसंठुलं (शिथिलं) कुणइ । उद्दामदोसाविस-वेगदूसियं कं न जियलोए? ॥१५॥ एवंविहा कसाया कसिणा निक्कासिया मणागेहाओ (मनोगृहात्) । निम्मलसमाहिजोगा जेहि सुहं ते जियंति जए ॥ १६ ॥ एयगुणाराहणओ जो जो धम्मो जया जया कोई । कीरइ सो परिणामे अमयं व सुहावहो होइ ॥१७॥ तिहुयणजणनमणिज्जो जिणो सया परमभत्तिमंतेहिं । पुज्जो नमंसणिज्जो संभरणिज्जो विहाणेणं ॥ १८ ॥ पंचविहायारपरा परोवयारुज्जया सया कालं । गुणिणो मुणिणो य मणे गुरुत्तणेणं ठवेयव्वा ॥ १९ ॥ संझादुगसज्झाओ पच्चक्खाणं खणे खणे परमं । चित्तमलपावणाओ (मनोमलपाविन्यो) य भावणाओ सरेयव्वा ॥ २० ॥ दुद्दंतेदियदमणं समणं कामाइवइरिवग्गस्स । पियपुव्वाभासित्तं सुयणत्तमकित्तिमं चेव ॥ २१ ॥ साहम्मिय-वच्छलं सत्तीइ तवो सुपत्तदाणं च। सीलविसुद्धी सद्धा सययं सद्धम्मकरणम्मि ॥ २२ ॥ नवनवसत्थब्भासो नवनवगुणअज्जणे असंतोसो । अप्पसमाहिय (आत्मसमाधित) गुणगामधामजणमज्झसंवासो (गुणग्रामधामजनमध्ये संवासः) ॥ २३ ॥ सीलंगसंगसुहगं समणत्तणमप्पसत्त-चित्तेणं । कइया णु मए कज्जं? खणे खणे इय विंचितेज्जा ॥ २४ ॥ मुणिचंदायरियाणं उंवएसाणं इमाण कयपुन्ना । भविया हवंति भायण-मकलंकगुणा परं केई ॥ २५ ॥ इति धर्मोपदेशकुलकम् ॥ **अथ सम्यत्त्वोपायप्रकरणम्** ॥ २० ॥

भुवणजणवंदणिज्जं वंदिय दिय (दित) माणमच्छरं वीरं । सम्मत्तुप्पायविहिं भणामि समयाणुसारेणं ॥ १ ॥ दुविहं सिद्धंतमयं सम्मुप्पायंमि विंति मुणिवसभा। तत्थ किल कोइ जीवो अहापवत्तेण करणेणं ॥२॥ सुज्झिन्तो (शुध्यमानः) जा गंठी अपुव्वकरणं तओ पवज्जेइ।

तं भिंदतो मिच्छत्तमोहणिज्जं तिहा कुणइ ॥ ३ ॥ सुद्धं अद्धविसुद्धं अविसुद्धं चेव करणकाले जा । तत्तोऽनियट्टिकरणं अंतमुहुत्तं पवज्जित्ता ॥४॥ तप्पज्जंते सुद्धं पुंजं समुदीरिऊण वेयंतो । खाओवसमियसम्मत्तधारगो होइ सो पच्छा ॥५ ॥ अंतोमुहुत्तमवरं छावट्ठि सागराइं उक्कोसं । चउगइगओऽवि एयं सम्मत्तं लहइ भव्वजिओ ॥६॥ अन्नोऽवि तव्विहो च्चिय नवरिं तिपुंजं करेइ नापुव्वे । करणंमि सुज्झइ च्चिय ठिइरसघायाइ-करणेण ॥७॥ तत्तोऽनियट्टिकरणे वट्टित्ता सुज्झिऊण (शुधीभूत्वा) य तहेव । तच्चिरमे विक्खंभियमिच्छत्तुदयं तओ भवइ ॥ ८ ॥ उवसम-सम्मद्दिट्ठी अंतमुहुत्तं तओ स नियमेण । वेयइ मिच्छत्तं चिय तदुवरमे कलुसपरिणामो ॥ ९ ॥ कोई पुण सासाणो होउ उवसामिगतभा-गम्मि । वेयइ मिच्छत्तं चिय तं चिय जं तस्स संतं तु ॥ १० ॥ उवसमियसम्मकाले तस्स पएसोदएण मिच्छत्तं । केई भणंति भणियं एयं पुण कप्पभासम्मि (कल्पभाष्ये) ॥११॥ जो अन्नया उ सम्मं अतिपुंजो लहइ अद्धसुद्धं सो । पुंजं करिउं तव्वेयगो य सुद्धं तओ कुणइ ॥१२॥ अद्धाविसुद्धाओ कड्ढिऊण केई तहाविहे राधे । पच्छा खाओवसमिगसम्मद्दिट्ठी जिओ होइ ॥ १३ ॥ जे कम्मपयडिपाहुडवियक्खणा ते भणंति पुण एवं । उवसामियसम्मकाले सम्मत्तमहापयत्तेण ॥ १४ ॥ तत्थ पढमं विसुज्झिय अभवाणियाओ अणंतगुणणाए । तत्तो अपुव्वकरणं भिन्नमुहुत्तं पवज्जेइ ॥ १५ ॥ ठिइघाओ रसघाओ गुणसेढी तह अपुव्वठिइबंधो । तत्थ पवत्तंती पढममेव गुणसंकमो न उण ॥ १६ ॥ तत्तो-ऽनियट्टिकरणे गयम्मि तह चेव नवरिं संसंमि । संखेज्जइमे भागे अंतमुहुत्तं अहो मुच्चा ॥ १७ ॥ करणोवरिं अंतमुहुत्तमित्तियाओ ठिईउ मिच्छरस । उक्किरइ भावविसओ तं दलियमहोवरिं च खिवे ॥ १८ ॥ एवं अंतरकरणे कयम्मि खीणेऽनियट्टिकालंमि । अंतरकरणपवेसे उव-समियं लहइ सम्मं सो ॥१९॥ सम्मत्तगुणेण तओ विमोहई कम्ममेस मिच्छत्तं । सुज्झंति कोद्दवा जह मयणा ते ओसहेणेव ॥ २० ॥ गुणं-संकमेण पढमं अंतमुहुत्तं तओ तदंतम्मि । विज्झायनामगेण संकमभेएण सुज्झंति ॥ २१ ॥ अंतरकरणस्संते अज्झवसाणाणुरूवमेगयरं । पडिव-

ज्जइ सो पुंजं अह कहमवि सासणो होइ ॥ २२ ॥ छावलिसेसाएँ परं अवरं इगसमयसावसेसाए । उवसमियद्धाएँ अणंत नाम कलु-सोदयवसाओ ॥ २३ ॥ होउं सासणदिट्ठी पच्छा मिच्छत्तमेव वेएइ । खीणंमि य पुंजदुए पुणोवि तं कुणइ सो एवं ॥ २४ ॥ नवरं तप्पाडि-रूवाइ तस्स तिन्निवि हवंति करणाइं । उवसमियसम्मदिट्ठी उवसमसेढीएँ जो पडइ ॥ २५ ॥ सो कह मिच्छद्दिट्ठी हवेज्ज नियमा ससासणो होउं । मिच्छत्तं पडिवज्जइ सासणभावे अणेगंतो ॥ २६ ॥ चउसुंपि अविरयाइसु संते जं आउगाइं चत्तारि । भणियाणि गुणेसु तहा खाइय-सम्मत्तउप्पत्ती ॥ २७ ॥ तो बद्धाउचउक्का चउरोऽवि य खायगं लहंतित्ति । नज्जइ नो पडिसेहो विसेसओ दीसई तत्थ ॥२८॥ सम्मत्तुप्पाय-विहिं भव्वा भावंतगा इमं सम्मं । निम्महियमोहजोहा हवंति संसुद्धसम्मत्ता ॥ २९ ॥ इति सम्यक्त्वोपायप्रकरणम् ॥

॥ अथ धर्म्मोपदेशकुलकम्, आर्यावृत्तम् ॥ २१ ॥

सुहभावणावसाओ सोयपिसाओ (शोकपिशाचः) सुहेण जस्स तया । वसमुवगओ स वीरो सुरगिरिधीरो चिरं जयउ ॥१॥ सोयानलकलियाणं जियाण परिगलियमणविवेगाणं । णवजलहरजलसारिसं उवएसं किंपि जंपेमि ॥२॥ पिच्छह दिणराईओ आउयमे पुणोयं पुणो घित्तुं । जंति नईओ इव नो कहिवि पुण पडिनियत्तंति ॥३॥ अणुसमयमयं देहो खज्जंतो नज्जए (ज्ञायते) न केणावि । आमघडोव्व जलगओ दीसइ सहसा परं भिन्नो ॥४॥ सइ सन्निहियावाओ काओ वसणाण संपयाउ पयं । सवियोगा संयोगा सव्वमहो भंगुरसरूवं ॥५॥ जम्मि दिणे किर जीवो गब्भे संकमइ तद्दिणप्पभिइं । अखलियपयाणमेसो मच्चुसमीवे समल्लियइ(आश्रीयते) ॥६॥ वज्झट्ठाणाभिमुहं जह वज्झो जाइ नियपएहिं तहा । जमसन्निहाणमेसो जाइ जणो कालगलणेणं ॥७॥ नियमत्थओवरिगयं जइ मच्चुं पेच्छई इमो लोगो । तो नाहारेऽवि रुइं करेज्ज किमकज्जकरणम्मि ? ॥८॥

मरमाणे य सुर्ग तह वधू अनेवि पाणिणो नियइ । ही परिसुन्नमणो कह ण जणो मच्चु विचिंतेइ? ॥ ९ ॥ ता अज्जवि आरंभा कुणति निरव-ग्गहा जणाण मणे । जाव जमग्गुग्गदृड चिंताविसय न ते नेति ॥ १० ॥ होज्जा जस्स जमेण सह मेत्ती जो हवेज्ज अमरो वा । जुज्जेज्ज तस्स ये(?)ु कल्लमि इम करिस्सामि ॥ ११ ॥ समजाइनओरुवे मच्चुहए जतुणो नियतोऽवि । उव्विज्जइ ज न जणो त नूण वज्जमयहियओ ॥ १२ ॥ पउरजराकेसरभासुरेण गुरुरोगकाणणगएण । मच्चुहरिणा जणोऽय समतओ पाविओ तास ॥ १३ ॥ तम्हा वुहो पभाए पडिवुद्धो निच्चमेव चितेज्जा । अज्ज विओगो रोगो मरण वा किंपि नो पडिही (पतिष्यति) ॥ १४ ॥ जह पिप्पलजललग्गो जलविंदू पवणताडिओ न चिरे । तह जीविय जियाण अणेयवसणाउल जाण ॥ १५ ॥ कत्थ गया रायाणो सगराई सयलराहणा जेसि । अज्जवि इमा मही किर विओगसरित्तण वहइ ॥ १६ ॥ एव सच्छदचरे मच्चुम्मि चरेसु जोव्वणधणेसु । कत्थ इमो पडिवध परिणइपिच्छी जणो कुणइ ? ॥१७॥ इय तियसिंदसहस्सा चक्कहराईण सयसहस्साइ । दीवव्व वाउणा पावियाइ कालेण निट्ठणपय ॥ १८ ॥ मच्चुमणागयकालेऽवि सपय चिय उवट्ठिय जाण । जम्हा इमोऽवि कालो तव पुव्वमणागओ आसि ॥ १९ ॥ जपि कुणतो जीवो जायइ सुहसंगओ तय चेव । कज्ज समायरतो कालवसा दुक्खिओ होइ ॥ २० ॥ णइपूरे पडियाण दारुण समागमो जहा होइ । तत्तो पुणो विओगो इय जीवाणपि ससारे ॥ २१ ॥ ता तप्पति न हियए धीरा पत्तेऽवि पियविओगम्मि । एवविहेच्चिय भवे किमिह अपुव्व समुप्पण्ण? ॥ २२ ॥ अत्थमणतो दिवसो रविउदयता य सव्वरी (रात्रि) होइ । अन्नोऽन्नतरियाइ सुहदुक्खाइपि जीवाण ॥ २३ ॥ तह सोगे कीरते रूव परिगलइ टलइ देहवल । नासइ नाण मा माणसमि सोग जणो कुणह ॥ २४ ॥ जह सपइ अन्नजण मयमणुसोयसि तहा तुममपि इमो । कयवइदिणावसाणे वधुजणो सो-इही लग्गो ॥ २५ ॥ एत्तोच्चिय जे धीरा परम्मुहा होंति सव्वसगेसु । ज सगमूलमेय दुक्ख जीवाण ससारे ॥ २६ ॥ तस्स न जसो न

धम्मो न चेव अत्थो न किंपि कल्लाणं । अन्नंपि अत्थि नट्टं जो मूढमणो विचिंतेइ ॥ २७ ॥ सोगो नासेइ मइं सुबहुंपि सुयं विणासई सोगो । सोगो धीनासकरो सोगसरिच्छो रिवू णत्थि ॥ २८ ॥ मइमं सुयसच्छच्छो जो होइ जिइंदिओ दमियचित्तो । सोच्चिय दुक्खकरालं जणो जिणइ सोगवेयालं ॥ २९ ॥ ता उज्झियसोगभरा तुब्भे होऊण जिणमयं सरह । जेण न रोगो सोगो इट्ठवियोगो पुणो होइ ॥ ३० ॥ वय-सुद्धी सज्झाओ झाणं दाणं जिणिदपूया य । एमाइकुसलकज्जुज्जमेण दियहा (दिवसाः) गमेयव्वा ॥ ३१ ॥ ते धुयकिलेसलेसा न सोय-वसवत्तिणो दढं होंति । एयं उवएसामयमणुदिवसं जे पियंति जणा ॥ ३२ ॥ मुणिचंदायरियाणं उवएसाणं सुहासरिच्छाणं । एयारिसाण विरला केइ परं भायणं होंति ॥ ३३ ॥ इत्युपदेशकुलकम् ॥ अथोपदेशामृताख्यप्रकरणम् ॥ २२ ॥

वरहेमसमसरीरो वीरो संपत्तमोहमलतीरो । साहियसिवनयरपहो सुरविहियमहामहो जयइ ॥ १ ॥ लद्धे माणुसजम्मे रम्मे निम्मल-कुलाइगुणकलिए । घडियव्वं मोक्खकए नरेण बहुबुद्धिणा धणियं (बाढं) ॥ २ ॥ धम्मो अत्थो कामो जओ न परिणामसुंदरा एए । किंपाग-पागखललोयसंगविसभोयणसमाणा ॥ ३ ॥ जंमि न संसारभयं जंमि न मोक्खाभिलासलेसोऽवि । इह धम्मो सो नेव उ विणा कओ जो जिणाणाए ॥ ४ ॥ पावाणुबंधिणो च्चिय मायाइमहल्ल (महत्) सल्लदोसेणं । एतो भोगा भुयगव्व भीसणा वसणसयहेऊ ॥ ५ ॥ जो पुण खमापहाणो परूविओ पुरिसपुंडरीएहिं । सो धम्मो मोक्खोच्चिय जमक्खओ तप्फलं मोक्खो ॥ ६ ॥ पच्चक्खमेव अत्थो कामो य अणत्थ-हेउभावेणं । दीसंति परिणमंता किमहियमिय भाणियव्वमओ? ॥ ७ ॥ इयविवरीओ मोक्खो जमेत्थ नो मच्चुकेसरिकिसोरो । हिंडइ उद्दंड-मकंडखंडियासेसजीवमिओ (उद्दंडमकाण्डखंडिताशेषजीवमृगः) ॥ ८ ॥ जोव्वणवणदावानलजालामाला ण एत्थ अत्थि जरा । नो दुद्धरो समुध्दुरमयरद्धय (मकरध्वजः) सरविसरपसरो ॥९॥ नो लोभभुयंगमसंगमोऽवि नो कोहकोहउच्छालो । तह नो अन्नकसाओ ण विसाओ

तो मयधिसाओ ॥ १० ॥ वल्लहलोगवियोगो दुहमूल जत्थ नत्थि तह रागो । किं वहुणा जो दोसो सव्वो जत्थाकयपदोसो ? ॥ ११ ॥ लोगालोयथिलोयणलोयणसमणाणदसणालोया । साहीणाऽणोवमसोक्खसगया हॉंति तत्थ जिया ॥ १२ ॥ जह रज्जोओ पज्जोयणाउ तह जदभिन्नासमेत्ताओ । भुवण भुयोवि विभवो ण किंचि तेणुत्तमो मोक्खो ॥ १२ ॥ त सद्दसणणाणाइकज्जमज्जा जओ पयट्टति । तो तुब्भे एत्थु गुणेसु सत्तीऍ वट्टेज्जा ॥ १४ ॥ निच्च तिकालचीवदणेण विहिविविहपूयपुव्वेण । चेइयकज्जाण वहुविहाणभइ-तिउगकरणेण ॥ १५ ॥ आयारपराण (आचाररतपराणा) वहुस्सुयाण सुमुणीण वद्णेण च । वहुणा वहुमाणेण गुणीसु तह वच्छलत्तेण ॥ १६ ॥ सकाइसल्लपडिपेल्लणेण सइ दमण विसोहेज्जा । तह निणजम्मणठाणाइदसणेण जओ भणिय ॥ १७ ॥ जम्मणनिक्खमणाइसु तित्थयराण महाणुभावाण । एत्थ किर जिणवराण आगाढ दसण होइ ॥ १८ ॥ णाण च पुण सुतित्थे विहिणा सिद्धतसारसवणेण । रयतवसुअपढणेण गुणणेण पुव्वपढियस्स ॥ १९ ॥ कालाइविवज्जयवज्जणेण तत्ताणुपेहणेण च । परियाणियसमयाए सगेण समाण धम्माण ॥ २०॥ सोहेज्ज चरित्तपिटु आसवदारन्ढसनिरोहेण । सइ उत्तरुत्तराण गुणाणमहिलासकरणेण ॥ २१ ॥ जह सुमिणो जह सियतण्हियाउ जह इदजालकीलाओ । जह वालधूलिहरविलसियाइ तह एस जियलोओ ॥२२॥ एत्थ विद्दवी अविद्दवी सुहीवि असुही गुणीवि किल अगुणी । रथुवि सिय अनथू धी अणवत्थो भवत्थजणो ॥ २३ ॥ इय भावणावलेण सत्तीऍ तवेण पत्तदाणेण । अइर्निदियइदियनदियाण निफदणेण तहा ॥ २४ ॥ एए नियफलवतो सुद्धा मतो भवति जेण गुणा । तो तेसिमसोहिसमावहाइ वज्जेज्ज ठाणाइ ॥ २५ ॥ सुज्झतेसु इमेसु दिणम्मि कमलायरव्व समकाल । सनियासा सेसगुणा भवति अब भुयज्भूया ॥ २६ ॥ गभीरत्तणसुयणत्तणाइ दक्खिन्नमपरपेसुन्न । दूरमपार कारुन्नपुनओ तह नओ विणओ ॥ २७ ॥ लोयाणुवित्तिकुसलत्तमुत्तम चिरपरूढमिन्धुत्तो । एसोऽवि अज्जकालियजणो जहा मग्गमोयरइ ॥ २८ ॥

परामिह संतोससुहं कल्लाणमुहं समुज्जला कित्ती । पेच्चा अच्चंतसुहो सग्गो तत्तोऽपवग्गो य ॥ २९ ॥ सद्दंसणाइरयणत्तयस्स लाभे पलालपूल-निभा । चिंतामणिसुरतरूकामधेणुनिहिणो खगा होंति ॥ ३० ॥ सो च्चिय जए सुजाओ सो च्चिय संपन्नपत्थियत्थो य । नीसेसगुणसमग्गो सिवमग्गो जेण संपत्तो ॥ ३१ ॥ तुब्भे उवएसाऽमयमेयं पाऊण सयलमुणिचंदा[1] । होउमजरामरपयं जह लहह तहा जएज्जाह ॥ ३२ ॥

॥ इत्युपदेशामृतकुलकम् ॥ अथोपदेशकुलकं, शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्. ॥ २३ ॥

लध्दूणुत्तममाणुसत्तणमिणं कत्तोऽवि पुण्णोदया, धम्मं तित्थयराण तत्थवि तहा पावित्तु तुब्भेहि भो[1] । नीहारेंदुसमुज्जलेण मणसा देवो जएक्कप्पहू, पूयापुव्वगमादरेण महया सम्माणणिज्जो जिणो ॥ १ ॥ पच्चक्खाणमणुक्खणं जलहरासारोवमाणो तहा, कामक्कोहदवग्गिना-सणकए सग्गापवग्गावहो । सज्झाओ पडिवन्नपुन्ननियमाणऽच्चंतमब्भुज्जमो, कायव्वो जिणदेसिएण विहिणा दीणाइदाणेऽविय ॥ २ ॥ बाढं नायपरायणत्ताणि रई नीहारहारुज्जले, लोलत्तं जमसंगहम्मि गुरुई दक्खिन्नवुद्धीविय । निच्चं मच्चुकडप्पवाहतसणं तप्पेल्लणे जो सुए, मग्गो तस्स निरूवणं सुनिउणं पज्जंतकालोचियं ॥ ३ ॥ वच्छल्लं समधम्मियाण परमं जीवाण रक्खा दढा, वेरग्गं विसएसु दुग्गइपुरीपंथेसु लोलेसु य । अन्नोऽवितथ विही जिणिंदसमए जो वंभचेराइओ, पन्नत्तो सुपवित्तसंपयकरो सो सेवणिज्जो सया ॥ ४ ॥ लब्भो कप्पतरूवि कप्पियफलो चिंतामणी चिंतिओ, धेणू कामदुहा निहाणमणहं दिव्वोसहीओऽविय । नो लब्भंति सुहेण धम्मगुरवो सन्नाणनीरागरा, सुद्धायारपरा सुदेसणसुहाकोसा अरोसा सया ॥ ५ ॥ जे गोसीससमिच्छसोरभभरा सीलेण लीलाएँ जे, भग्गुड्डामरवम्महारिपसरा जे वुद्धसुद्धागमा । साहूणं समधम्मियाण य तुमं मुंचेज्ज मा संगमं, तेसिं दोसविसोसहाण महिमामाणिक्कठाणाण य ॥ ६ ॥ नो भूपालपए न रोगविलए

नो चेव देवालए, नो चिंतामणिणो न कप्पतरुणो लभे वियभेज्ज सो। निव्विन्नाण भवन्नवाउ धाणिय निव्वाणकरीण जो, संजाएज्ज गुण नुयमि सुयणे दिट्ठे पसोओ मणे ॥ ७ ॥ सम्म नाहिगयाऽऽगमा गुरुकुले साविग्गमग्गाणुगे,नो वुच्छा पसम सभाववसओ नो पत्तपुव्वा तहा। तेसिं मूढमणाण देसणगुणाजोग्गाण जा देसणा, सा दूरेण दवग्गिधूमियमहारण्ण व वज्जा ज (ओ) ॥ ८ ॥ नो सत्थ न विस न साइणियसो नो पेयभूयग्गहो, दुक्कालो न दुराउल न जलणो जालाकरालो य त । सिद्धंतो जिणभासिओ कुमइणा लोएण मिच्छागहा, सपाडेज्ज अणत्थसत्थमिह ज देसिज्जमाणोऽन्नहा ॥ ९ ॥ एसो धम्मोवएसो निविडतमतमुत्तारतारप्पईवो, एसो धम्मोवएसो मयमयणमहा-वाहिणासोसही य । एसो धम्मोवएसो सिवसुहभवणारोहसोपाणसेणी, एसो धम्मोवएसो भवियजण तए णावणिज्जो मणाओ ॥ १० ॥ ॥ स्रग्धरावृत्तम् ॥ इत्युपदेशमालाकुलकम्   अथ रत्नत्रयकुलकम्, आर्य्यावृत्तम् ॥२४॥

चउद्धसमणिडाल झवियनिस्सेसकुगइपायाल। मगलकमलमराल थवे वीर गुणविसाल ॥ १ ॥ लद्धे माणुसजम्मे रम्मे निम्मल-कुलाइगुणकलिए । घडियव्व मोक्खकए णरेण वहुवुद्धिणा धाणिय ॥ २ ॥ देवगुरुधम्मतत्ते विन्नाए मोक्खसभवो भविणो । असुणिय-मग्गसरूवा ण इट्ठपुरगामिणो होंति ॥ ३ ॥ जियरागो जियदोसो जियमोहो जो मओ स इह देवो । अरिहंतोच्चिय सो पुण नउ अन्ने हरि-हराईया ॥ ४ ॥ भवविसतरुनीयसमा दोसा रागाइणो जयस्सावि । जे सामन्नामन्नाण ताण कह होउ देवत्त ? ॥ ५ ॥ सरयससिसोमरूवो सुरपयडियपाडिहेरमाहप्पो । परमपयसत्थवाहो भवसागरपारगो भगव ॥ ६ ॥ एसो च्चिय णमणिज्जो णमसणिज्जो य पूयणिज्जो य । सभरणिज्जो महया तोसेण निभालणिज्जो य ॥ ७ ॥ जो जारिसओ देवो तारिसमाराहिओ फल देई । न कयाइ निंवरुक्खा फलति कप्पदुदुमफलाइ ॥ ८ ॥ णिव्वाणसोक्खसामी सव्वन्नुच्चिय निसेविए तम्मि । अचियप्पेण मणेट्ठ लब्भइ

भव्वेहिं सिद्धिसुहं ॥ ९ ॥ सयलभुवणेक्कबंधू अइसयसयरयणरोहणागीरिंदो । देविंदचंदमहिओ धन्नाण जिणो हवइ देवो ॥ १० ॥ अमलियसीलसहावा उवसमजलखालियमयणवणदावा । परियाणियसब्भावा जे निम्मलफालिहसमभावा ॥ ११ ॥ चंदकिरणुज्जलाइं चिंतामणिकामधेणुसरिसाइं । पंचवि महव्वयाइं सुविणेवि ण जेसि खालियाइं ॥ १२ ॥ सेवियगुरुकुलवासा सम्मं विन्नायपवयणरहस्सा । एसणगवेसणासु य जे दढमारूढपरिणामा ॥ १३ ॥ जे जीवियमरणेसुं लाभालाभेसु सुक्खदुक्खेसु । पूयापूयासु तहा नो विसममणा मणागंपि ॥ १४ ॥ जे दूसमावसेणावि पायं पडिखलियसुयणसीलेन । दोसदुमवारिणा दारुणेण नो निहयमाहप्पा ॥ १५ ॥ जोसि सीलंगाइं सुरनरसिवसोक्खसाहणंगाइं । नो पावियभंगाइं कहिंचि हयमयणरंगाइं ॥ १६ ॥ कारुन्नपुन्नहियया दक्खिन्नमहोगही महासत्ता । जे साहुणो तएच्चिय हवंति गुरुणो गुणिजणाणं ॥ १७ ॥ जोसिमकल्लाणाइं निहणं पत्ताइं जोसिं सुहरिद्धी । सन्निहिया तेहिं इमे गुरुणो परियाणिया होंति ॥ १८ ॥ जत्थ दया जीवाणं जत्थ जिणो देवया गुरू गुणिणो । सोच्चिय धम्मो धम्मियजणाण धम्मोत्ति पडिहाइ ॥१९॥ एगो तत्थ गिहीणं अन्नो साहूण तत्थ गिहिधम्मो । पूया जिणाण दाणं मुणींण निम्महियमोहाणं ॥ २० ॥ साहम्मियजणपीई गुरुजणसुस्सूसणं सुनिउणं च । दूरमणुव्वयसुद्धी बुद्धी सज्झायझाणेसु ॥ २१ ॥ नयसारो ववहारो उदारभावेण दीणदाणाई । कज्जाणं च विवज्जणमइसावज्जाण दूरेणं ॥ २२ ॥ पाणिवहाईयाणं पावट्ठाणाण जावजीवंपि । जं सव्वहा विवज्जणमेसो धम्मो जईण पुणो ॥ २३ ॥ एसो देवो एसो गुरू य धम्मो य एस नउ अन्नो । इय पडिवत्तिपराणं सम्मत्तं होइ सत्ताणं ॥ २४ ॥ सम्मत्ता-उ ण अन्नो बंधू व पिया व होज्ज जीवाणं । नो मित्तं न निहाणं ण पिहाणं नरयदारस्स ॥ २५ ॥ एगम्मिवि सम्मत्ते लद्धे लब्भंति सयलसोक्खाइं । चिंतामणिम्मि एगंमि चेव जह चिंतियफलाइं ॥ २६ ॥ इह जीवियमरणाणं अमयविसाणं जह किल विरोहो ।

तह सम्मत्तगुणाण वियाण मिच्छत्तदोसाण ॥ २७ ॥ ता मिच्छत्तपवित्तिं तिविह तिविहेण जावजीवाए । सुविणेऽवि मा कुणिज्जसु सुद्दरगुणहाणिसजणणिं ॥ २८ ॥ धन्ना पाविंति इम धन्नयरा पावियपि पालेंति । तत्तोविय धन्नतमा निययफलेण फलावेंति ॥ २९ ॥ पीऊसपाणसरिसो एसुवएसो मणे परिणयम्मि । एयामि कुभावविस विसमपि सम पवज्जेइ ॥ ३० ॥ रयणत्तयकुलयमिण रइय मुणिचदसूरिणा सम्म । भव्वा भावेंता पुण कम्मक्खयहेउसपत्ता ॥ ३१ ॥ इतिरत्नत्रयकुलकं समाप्तम् ॥

अथ प्रभाते जीवानुशासनम् ॥ २५ ॥

तिहुयणपणमियचरण पणमित्तु जिणेसरं महावीरं । वोच्छ पभायसमए जीवस्सऽणुसासण इणमो ॥ १ ॥ धन्नाण जीवाण ससारपरम्मुहाण सइ होई । कल्लाणकोसजणणी पभायसमयमि इइ चिन्ता ॥ २ ॥ धन्नोऽह जेण मए ससारमहन्नवमि बुड्डेण । नीरयपवहणसमो पत्तो जिणदेसिओ धम्मो ॥ ३ ॥ चिंतारयणं करयलमल्लीण अज्ज मज्झ पुन्नेहिं । कामदुहाविय धेणू सयमेव घरगणे पत्ता ॥ ४ ॥ फलभरविणमियसालो सुरदुमोत्तग्ग (आग) ओ घरदुवारे । सव्वकारो दिन्नो सग्गसिवसुहाण मे अज्ज ॥ ५ ॥ हिंडंतेण भववणे ज पत्तो कहवि सत्थवाहसमो । भवसयसहस्सदुलहो जिणिंदवरदेसिओ धम्मो ॥ ६ ॥ अन्न च मए लद्धो अइ-दुलहो लोयलोयणसमाणो । माणगिरिकुलिसदडो पयडपासडनिद्दलणो ॥ ७ ॥ अइसयरयणजलनिही दुज्जणजणदुलहदसणो धणिय । भवियाजियकमलसूरो सासयसुहनीरवरपूरो ॥ ८ ॥ कम्मकलकविमुक्को कसायदवतावियभावियजलवाहो । तिहुयणलच्छीवच्छत्थलमि अइनिम्मलो हारो ॥ ९ ॥ उग्गतवतेयतरणी पुड(र)पयाडियमोक्खपवरपुरसरणी । चदकरधवलकित्ती लीलाए दिन्नजियमुत्ती ॥ १० ॥ केवलपईवपयडियजीवाजीवाइवत्थुपरमत्थो । रागाइविजयवीरो देवो तित्थकरो वीरो ॥ ११ ॥ जिणभणियवयणनिरया विरया सव्वेहिं पावठा-

णोहिं । एत्तोच्चिय पंचमहव्वयाण परिपालणे पवणा ॥ १२ ॥ मणवयणकायगुत्ता पुत्ता सीमंतिणीण सव्वाणं । अनिययविहाररसिया वसिया गुरुपायमूलम्मि ॥ १३ ॥ तित्थयरभाणियवयणाणुसारिसद्धम्मदेसणपहाणा । पडिखालियपंचपाणा निरंतरुल्लासिसुहझाणा ॥ १४ ॥ सीलंगमहाभरधारणंमि धुरधवलधीरिमं पत्ता । रागाइवेरिविसवत्तिजंतुपरिसोयणे सत्ता ॥ १५ ॥ गुणिमणकमलवियासणपयंडमायंडसंनिह-सहावा । संपत्ता सुहगुरुणो दुहतरुणो खंडना धीरा ॥ १६ ॥ ता जवि तं कयत्थो कयपुन्नो मंगलाण आवासो । माणुसजम्मस्स फलं तुब्भच्चिय करयले चडियं ॥ १७ ॥ जं तुमए रयणत्तयमिणमो संपावियं महाभागा ! । नहि पुन्नविहीणाणं निहाणलाभो जए होइ ॥१८॥ ता तह करेसु संपइ मोत्तूणं मोहणिज्जमचिरेणं । जह संसारसमुब्भवदुक्खाण जलंजलिं देसि ॥ १९ ॥ रयणायरंमि पत्ते जह पुन्नो कोऽवि लेइ रयणाइं । तह गिण्ह तुमं लद्धयमाणुस्सो भावरयणंपि ॥ २० ॥ जइ कुणसि पुण पमायं जाणंतोऽविहु जिणिंदधम्मंमि । ता नूण-मयाणुय! करगयाइं सोक्खाइं हारिहिसि ॥ २१ ॥ इयचिंतामयसंसिच्चमाणमणनंदणाण जीवाण । अचिरेण सग्गसिवसुहफलाइं सिज्झंति विउलाइं ॥२२॥ मुणिचंदसूरिगणहरविणेयसिरिदेवसूरिवयणाइं । मोहंधयाण जंनूण होंति विमलाइं नयणाइं ॥२३॥ इति ॥ अथ दोहा. ॥२६॥

नाणु चरणु संमत्तु जसु रयणत्तउ सुपहाणु । जय सु मुणिसुरि इत्थु जगि मोडियवम्महरवाणु ॥ १ ॥ उवसमरयणसमुद्दसमु विहालियजणसाहारु । वंदउ मुणिसुरि भविअजण जिम छिंदउ संसार ॥ २ ॥ अमियमहुरदेसणरसिण भवियण रुंखमुलाइं । जिव सिंचइ मुणिचंदह सूरि तिअ तुंवि कुवि काइं ॥ ३ ॥ वक्खाणंतउ जिणवयणु सिरिमुणिचंद मुणिंद । चउदिसि मुणिपरिवारियउ, नावइ पुन्निमचंदु ॥ ४ ॥ जिणि छट्ठट्ठमिमाइतवि सोसीउ इहुं निय देहु । वरकरुणाजलणीरनिहि सो गुरु मुणिधुरिलेहु ॥ ५ ॥ जो पिहि पक्खसमुद्धरणु, पंचमहव्वयधारु । सो नंदउ मुणिचंदसुरि, जिणी वूहउ तिव भारु ॥ ६ ॥ मेरुहु जिव विरु पव्भ गुरु,

सायरु जिम्ह गभीरु । सिरी मुणिसुरि नवनाणनिहि जच्चसुवन्नसरीरु ॥ ७ ॥ जे ससारमहाउविहिं निविडियजणसत्थाहु । सो गुरु मुणि सुरि सुमरियइ सरण विहीणह नाहु ॥ ८ ॥ जिंव तारयहिं पहाणु ससि सेलहिं मेरु पहाणु । तिंव सूरिहिं मुणिचदमुणि गरुयउ निज्जियमाणु ॥ ९ ॥ मोहमहाचलि कुलिससमु सुयजलपूरियऽपारु । सुविहियमुणिसिरि सेहरउ मुणिसुरि बालकुमारु ॥ १० ॥ ता मज्जहिं परतित्थिया जा नवि कोइ कहेइ । जिगसासणि उज्जोयकरु मुणिसुरि एत्थु वसेइ ॥ ११ ॥ ते धन्ना घरि गावडा जहिं विहरइ मुणिसूरि । हरइ मोहु फेडइ दुरिउ ससओ पल्लइ दूरि ॥ १२ ॥ कुददलुज्जलजसपसरधवलियसयलतिलोय । कम्मपयडिपयडणपवणु मुणिसुरि नमहु असोउ ॥ १३ ॥ जिग कुग्गह पेल्लिय नरह पयडिवि निम्मलनाणु । सो मुणिसुरि महु माइ गुरु अइमणहरसठाणु ॥ १४ ॥ मुणिसूरिहिं जितणा गुणा तहिं को सरा मुणेइ ? । किं रयणायरु कुवि मुणिवि रयणह सरा कहेइ ? ॥ १५ ॥ दुद्धरदप्पगइदहरि कोइलकोमलवाणि । सो मुणिचदु नमेहु पर सजमरयणह खाणि ॥ १६ ॥ हरिभद्दसुरिकय गथ जिणिं वक्खाणिय नियबुद्धि । सो मुणिचदु नमेह पर जिव पावहु वर सुद्धि ॥ १७ ॥ निव बोलइ तिम जो करइ सीलु अखडु धरेइ । मुणिसुरि पडिय तोसयरु पणुत्तरइ दलेइ ॥१८॥ जिंव महुयर आवइ कमलि गधाइड्डियसत्त । तिम मुणिसूरिहि सीसगण सुयमयरदासत्त ॥ १९ ॥ जहिं विहरइ मुणिचदसूरि तहिं नासइ मिच्छत्तु । चरइ नउलु जहिं ठावडइ सप्पु कि हिंडइ तत्थु? ॥ २० ॥ जिम्ह मेहागम तोसियहिं मोरहतणा निकाय । तिम्ह मुणिसूरिहिं आगमणि भवियाण समुदाय ॥ २१ ॥ मरयागमि जिव हसुला हरिसिज्जति न मति । मुणिसुरि पडिखडिया जणा तुह आगम निभति ॥ २२ ॥ तिह मणुयह गउ विहल जम्मु जेहिं न मुणिसुरि दिट्ठु । किन जन्चाधेहि लोयणिहिं जेहिं न ससिहरु दिट्ठु ॥२३॥ जाह पसन्ना तुह नयण तह मणुयह सय कालु । दियइन्ठिय सुह रापडहिं अनुछिन्नहि दुहजालु ॥ २४ ॥ दूसमरयाणिहिं सूर जिम्व तुह उट्ठिउ मुणिनाह। सिरिमुणिचदमुणिद पर मह

फेडइ कुग्गाह ॥ २५ ॥ इति श्रीमुनिचन्द्राचार्यस्तुतिः ॥ अथ श्री देवसूरिकृतवैराग्यगर्भितगुरुविरहविलापः । २७

निव्वाणगमणकल्लाणवासरे जस्स गुरुपोकारं । सुरसामिणोऽवि कंदंति वंदिमो तं जिणं वीरं ॥ १ ॥ जगगुरुगोयरनेहेण निहणिओ जस्स केवलालोओ । कह कहवि समुब्भूओ तं गोयमगणहरं सरिमो ॥ २ ॥ गुरुचरणसरोवररायहंसलीलं धरिंसु जे सीसा । ते वइरसामिपमुहा पयओ पणमामि तिविहेणं ॥ ३ ॥ सिरिवीरजिणेसरतित्थजलहिउल्लासपुन्निमायंदं । अइजच्चचरणतवनाणलच्छिमयरहरसारिच्छं ॥ ४ ॥ मिच्छत्तमोहमंडलविहडणगणपवणपूरसंकासं । कासकुसुमालिनिम्मलजसभरपरिभरियभुवणयलं ॥ ५ ॥ भुवणयलवित्तसुपवित्तविबुहसेविज्जमाणपयपउमं । पउमद्दहं व पंचप्पयारआयारकमलाणं ॥ ६ ॥ करुणागंगाहिमवंतसेलसमणवज्जवगणमणिखाणि । वेरग्गवग्गुमग्गप्पयट्टजणसंदणगमाणं ॥ ७ ॥ परहियाचिंताचंदणवणावलीमलयसेलसमसील । गुणिलोयविसयबहुमाणओरुहीरुहणगिरिधरणी ॥ ८ ॥ चारित्तनाणदंसणफललोलमुणिंदसउणमेरुवणं । छत्तीसगणहरगुणे सरीरलीणे सइ धरंतं ॥ ९ ॥ दुद्धरपरीसहिंदियकसायविजओवलद्धमाहप्पं । सत्थपरमत्थपयडणपणासियासेसजणमोहं ॥ १० ॥ हिंसाए हिंसणं दोसदूसणं रोसरूसणं वंदे । सिरिमुणिचंदमुणीसर नियगुरुं गरिमजियमेरुं ॥ ११ ॥ मुणिचंदसूरि! गणहरगुणाण अंतो न लब्भए तुम्ह । किं वा सयंभुरमणे जलप्पमाणं मुणइ कोई? ॥ १२ ॥ भवभीरुजीवसंतोसदाइणी तुम्ह मुणिवरपवित्ती । अहवा चिंतारयणं केसिं नहु जणइ कल्लाणं? ॥१३॥ जा तुम्ह धीरिम धीर! कावि नन्नत्थ तं पलोएमि । लच्छीकमलपरिमलो किमन्न नलिणाइं आलियइ? ॥ १४ ॥ जह मच्छरस्स पसरो तुमए निहओ तहा न अन्नेण । वणगहणं जह चूरइ मत्तकरी नो तहा ससओ ॥ १५ ॥ उवसमजलेण तुमए विज्झविओ रोसदारुणदवग्गी । विणयंकुसेण अहिमाणमयगलो निग्गहं नीओ ॥ १६ ॥ विसमवल्लरीव्व माया पसरंती लूरिया तुमे नाह! । उब्भडकरालकरवालतिक्खधारापओगेण ॥ १७ ॥ बहुवि

हरिणपरमेट्ठिगुरुणो लोहपलीणि सामी ! । सतोसवाउयालयसेण सोस तुह पत्तो ॥ १८ ॥ अन्नेऽवि भावरिउणो हासाई सयदतदढ-एम्मिओ । चारित्तसामेणगपसारम्भेण ते निहया १९ ॥ मच्छररहिय परिहासवज्जिय गरियडम्बियनियार । भवनिव्वेयपहाण जयउ जग तुह मणा नाणि ॥ २० ॥ भोगतिसापासापरिगयाण जीवाण परमविज्जेण । रयणत्तयतिरयाण तुमए नीरोगया विहिया ॥ २१ ॥ भावरिउन्नउम्मूमियाइ भविराण मानसनगाइ । नत्थीकयाइ तुमए धम्मासयसारियाहेण ॥ २२ ॥ सुविहियचरियाधरिणी पमायपायालमूलमग्गीणा । शुगिसुत्तमेण तुमए जुणिवइ ! लीलाइ उद्धरिया ॥ २३ ॥ नाणरयणाइ जुगव तुमए दारितण भत्ताण । निसागायरगणो पायडिओ परमकरुणेण ॥ २४ ॥ सीलालवालकभो धम्मतरू सगमोधरपरफलिरो । गुणरयणालेण अहिसित्तो सो तए सामि ! ॥ २५ ॥ त नन्दउ चित्तयकुल जयम्मि सिरिउज्जयसेलसिहर व । भव्वानियरगलनधव ! नाणि तुम तमहरो जाओ ॥ २६ ॥ सच्च महग्घिया ना महग्घिया चरमजलहिवेलव्व । मोत्तियमणिव्व जीए त कुरिउ उयरसिप्पिउडे ॥ २७ ॥ ता च्चाणरीरासेसच्च भग्ग मगुनपइ । जीए तुह पुरिससेहर ! जम्माणिणमहामहो जाओ ॥ २८ ॥ नमभद्दो सो सूरी जस नअर न निम्मर पत्तो । चिंतामणिव्व जेण उवलद्धो नाह ! त सीसो ॥२९॥ सिरिजिणवल्लहअज्झावयस्स पाया जयतु निच्चस्स । जेसु तुह आणि रीण गरराग्गस्सेव भद्दस्स ॥ ३० ॥ आणदसूरिपमुहा जयतु तुह नभरा जगप्पयडा । जे तुमए निक्खविया सिक्खविया सूरिणो न पत्ता ॥ ३१ ॥ अन्नो अउव्वभेग रिंपिय तुम्हाण भवियगयकुडुन ! । ससारवसपीलूरणम्मि ज गयकुलेण मम ॥ ३२ ॥ नीसेस तुह नारिय ग्गनिगाणकारण नेव । न तु न नेहो कयावि त मह हियए खुडुक्केइ ॥३३॥ मन्नामि सामि ! हियय वज्जसिलासपुडेण तुह घडिय । पडिपक्खगुणमिवि सीमाणो निण्णिवाम न ॥३४॥ नाणिय अणागय चिय मरण सनोहिऊण मनिमगण । गहियाणसणेण तए उवलद्धाऽऽराहणपडागा

॥३५॥ समुहेण उच्चरंतो चरिमे समयम्मि अट्ठ नवकारे। भणइ भणहत्तिजंपिर ते धन्ना जेहिं दिट्ठोऽसि ॥ ३६ ॥ सासो खासो दाहो तिन्निवि रोगा मुणिंद! तुह खीणा। अणसणपावित्तिसमए समयं कलुसेहिं कम्मेहि ॥ ३७ ॥ चरमसमएवि सुहगुरु! वियलत्तं परिहरंतएण तए। सव्वत्थ एगरूवा गुरुआ सच्चाविय वयणं ॥ ३८ ॥ सच्चं सा कसिणच्चिय कत्तियमासस्स पंचमी कसिणा। खेत्तंतरं व सूरो जीए तं सग्गमल्लीणो ॥३९॥ एगारस अट्ठुत्तर संवच्छरकाल! पडउ तुह कालो। जससेसं जेण तए तं मुणिरयणं कयं पाव! ॥४०॥ हा सिद्धंतपियामह! हा! माए! ललियकव्वसंपत्ति। हा! गणियविज्जसाहिए हा! बंधव तक्कपरमत्थ ॥४१॥ हा! छंदसुद्धपुत्तय हा! हाऽलंकारमज्झलंकारा। हा! कम्मपयडिपाहुडमाया! मह भे निसामेह ॥ ४२ ॥ जो आसि मज्ज जणओ मुणिचंदमुणीसरो विबुहपणओ। सो निग्घिणेण विहिणा सग्गंगणगंडणो विहिओ ॥ ४३ ॥ ते अमयजलहिउग्गारसान्निहा कत्थ कोमलालावा?। सुपसन्ननयणअवलोयणाइं ही ताइं पुण कत्थ! ॥४४॥ इय तुज्झ विरहहुयवहजालावलिकवलिया रुयइ कलुणं। निस्संकं लीलाइयमणुसरइ सरस्सईदेवी ॥४५॥ हा! चरणलच्छीवच्छे संपइ वेहव्वदुक्खमणुपत्ता। जइधम्मपुत्त! मज्झवि संजाओ सामिणा विरहो ॥ ४६ ॥ ही जिणवयणपहावणकन्ने! कन्नाण दुस्सहं रुयासि। आनिययाविहारचरिए! हुहुत्ति दूहवासि रोगंति ॥ ४७ ॥ इय नियकुडुंबयमाणुसाइं पत्तेयमुल्लाविय दीणं। विलवइ चरित्तराओ ओ! विरहे तुज्झ मुणिनाह! ॥ ४८ ॥ को मज्झ संपयं साभिसाल! दाही सिरम्मि करकमलं?। अरुणपहाजणियं सममयं व लच्छीनिवासगिहं ॥ ४९ ॥ कुवलयदलमालामणहराए अमयप्पवाहमहुराए। नेहभरमंथराए दिट्ठीएँ पसायभरियाए ॥ ५० ॥ तह ताय! पलोएही संपइ को चरणतामरसपणयं। रोमंचचियदेहं तुह विरहे माणुसं लोयं ॥ ५१ ॥ अइदुग्गमगंथपव्वयसिहरोली मज्झ संपयं केणं। तुह वयणवज्जविरहे भिंदेयव्वा पयत्तेणं ॥ ५२ ॥ अहवा—तुह नाम परममंतं अहोनिसं मज्झ झायमाणस्स। नाणचरणप्पहाणा उल्लसिही मंगलगुणाली ॥५३॥ जइ आसि मज्झ तुह पायपंकए साभि! अविरला भत्ती।

तत्वमउ विय नम्मतरवि त होज्न मज्झ गुरू ॥ ५४ ॥ आणदमुणिवाय इय वयणपुरस्सर विहेऊण । गुरुभणियकज्जसज्जो सजाओ देवसूरित्ति ॥ ५५ ॥ इति क्रातिर्देवसूरीणा

अथ प्रात कालिकजिनस्तुति ॥ (वसन्ततिलकाछन्द) २८

येऽर्हन्[1] प्रभातसमये तव पादपद्ममापन्महार्णवसमुत्तरणैकसेतुम् । पश्यन्ति नश्यति ततस्ततमाशु सर्वमेनोऽतितीव्रभवदाहसमाम्बुवाह[1] ॥ १ ॥ उद्भूतभूरिसुकृता भविनो भवन्ति, ये केचन च्युतमदप्रसरा प्रगे ते । उत्फुल्लपङ्कजदलोपमनेत्रपात्राञ्जाणप्रदौ तव पदौ प्रविलोपयन्ते ॥ २ ॥ प्रात प्रसन्नवदना भुवनावतसमासन् सितोज्वलपदा भवदीयरूपम् । ये केचिदीक्षणपथ प्रथम नयन्ति, ते फेनपाण्डुरयशोभवर भयन्ति ॥ ३ ॥ उद्गूढभाग्यभवभाजनमाननीयमालोक्य भास्वदुदये चलनद्वय ते । भव्या नयान्ति वशमत्र जगत्त्रयेऽपि, मत्राणि चन्द्रकिरणोत्करनिर्म्मलानि ॥४॥ चिन्तामणिर्न च न वा नवकामधेनु , कल्पद्रुमोऽपि न न भद्रघट प्रसन्न । आवि करोति फलमर्कविलोककाले, यत्ते पराम्बुरुहमीक्षितमात्रमेव ॥ ५ ॥ ताराविरामसमये कमलाकरेषु, यातेषु बोधमुदितामलसौरभेषु । धन्या विनिद्रितदृश सुदृश प्रभायमालोकयन्ति कमलाकुलमानन ते ॥ ६ ॥ भिन्दन्ति दुर्गतिभयानि समानयन्ति, स्व सम्भवानि शिवजानि च मङ्गलानि । भानूदये तव नमन्ति नुवन्ति येऽङ्घ्री, पापाम्बुराशिपरिशोषसमीर[1] धीर[1] ॥ ७ ॥ तेषा न जन्म न च जीवितमीशभावमुच्च यशश्च फलयन्न वदान्ति सन्त । यैरुत्थितैर्महदहर्षजलाविलाक्षैर्निध्यायते क्रमकज न तव प्रभाते ॥ ८ ॥ एवा प्रभातसमयस्तुतिरादरेण, पापठ्यते भगवति प्रहितैर्मनोभि । यैस्तेऽत्र कुन्दकलिकोज्वलराभभाजो, जायन्त एव मुनिचन्द्रपदप्रपन्ना ॥ ९ ॥ इति प्रभाते जिनस्तुति

॥ नमः श्रीमद्देवसूरिगुरुपादुकाभ्यः ॥ अथ द्वादशव्रतस्वरूपम् ॥ २९

तिहुयणकयबहुमाणे सन्नाणे विमलगुणगणनिहाणे। नमिउं जिणे गिहिवए सम्मत्तजुए पवज्जामि ॥ १ ॥ परिहीणलोहमोहो मुक्कविरोहो पसन्नमुहसोहो। देवो सुरकयसेवो गयलेवो मम जिणो चेव ॥ २ ॥ उद्धयमहव्वयभरे सीलंगधरे निरुद्धमयपसरे। जगसिरसणिणो मुणिणो गुणिणो गुरुणो पवज्जामि ॥ ३ ॥ पयडियवत्थुसरूवो निरुवमरूवो सुरेहिं कयपूओ। नयहेउजुत्तिसुद्धो सिद्धंतो संपइ पमाणं ॥ ४ ॥ परतित्थे धम्मत्थं काहं नाहं कयावि ण्हाणाइ। चीवंदणं तिकालं काहमहं सुमरणेणावि ॥ ५ ॥ पाणिवह १ मुसावाए २ अदत्त ३ मेहुण ४ परिग्गहे चेव ५। दिसि ६ भोग ७ दंड ८ समइय ९ देसे १० तह पोसह ११ विभागे १२ ॥ ६ ॥ मंसाइकए जीवे थूले संकप्पिउं निरवराहे। न हणेमि नो हणावेमि मणेण वायाइ काएणं ॥ ७ ॥ जं पुण जलोयमोयणकिमिगंडोलाइपाडणं तह य। कज्जं हविज्ज जइ कहवि तत्थ मज्झं भवे जयणा ॥ ८ ॥ थूलमलीयं कन्नालियाइ सयलंपि दुविहतिविहेणं। नो आलवेमि वसणे जयणा पुण कूडसक्खेज्जे ॥ ९ ॥ थूलमदत्तं एत्तो चत्तं खत्ताइकारणं जमिह। करणकरावणविसयं सम्मं तिविहेण करणेण ॥ १० ॥ लहणिज्जदेज्जनिहिसयणसुंकविसयम्मि दिन्नए जयणा। निस्सावराडिवयणे आलियंमि तहा ममं जयणा ॥ ११ ॥ दुविहतिविहेण दिव्वं एगविहं तिविहओ य तेरिच्छं। माणुस्सयंपि थूलं काएणं मेहुणं वज्जे ॥ १२ ॥ धणं धन्नं गिहं खेत्तं, रुप्पं हेमं चउप्पयं। दुपयं कुवियं चेव, नवभेओ परिग्गहो ॥ १३ ॥ (सिलोगो) धणधन्नकुवियरुप्पयसुवन्नचउपयगिहाण सव्वेसिं। इच्छापमाणमेत्तो दम्मसहस्साण अट्ठण्हं ॥ १४ ॥ तत्थ धणं गणिमं धरिममेव मेयं च पारिछेज्जं च। पत्तेयं पत्तेयं न धरेमि सहस्सओ परओ ॥ १५ ॥ तिलघयाणं घडगा पन्नासं होंति जावजीवाए। धन्नस्स पन्न मूडा जाजीवं खेत्तविणिवित्ती ॥ १६ ॥ दो दो हट्टगिहाइं तिन्नि रायाइं सुवन्नपरिमाणे। चालीसं रुप्पपला सतिवन्छा दोन्नि

गावीओ ॥ १७ ॥ दा वसहा खर एगो पसुकरभाण च मज्झ एकेक । अकवंडियस्स नियमो कम्मयरदुग तहच्चेव ॥ १८ ॥ कुविय सहस्समोल्ल इन्धामाणाउ होज्ज एयाओ । जइ कहवि अहियभावो घम्मे ता देमि नियमेण ॥ १९ ॥ वधवभइणेज्जाण परिग्गहो होज्ज तस्म जइ चिंता । भत्तिज्जाईण य पालणमि जयण करेस्सामि ॥ २० ॥ अणहिल्वाडपुराओ चउसुपि दिसासु जोयणाण सय । दो जोयणाणि उड्ढ अहोदिसि पुरिसपन्नास ॥ २१ ॥ वीयगुणव्वयविसया भोयणओऽभिग्गहा मम एए । दुविहतिविहेण मस मज्ज एगविहतिविहेण ॥ २२ ॥ नाय दुभिक्खोसहिदोसीणविवज्जऽणतकाय च । महुमक्खणपचुवरि गोरसमिस्स चए विदल ॥ २३ ॥ दुब्भिक्खमोसह धरणग च मोत्तूण नो निसाएवि । खाइममसण भुजे तहत्थिय पाउसे दुन्नि ॥ २४ ॥ अवामल्यजयती करपढकरवदलिवुयफरीरे । तिदूरमिरियमजरि अत्थाण वज्जए सेस ॥ २५ ॥ तीस दव्वाइ सच्चित्ता, दिणस्सतो दसेव मे । विगईओ य चत्तारि, एगा धन्नस्स सेइगा ॥२६॥ अन्नभगे भोयणे चेव, पयतेल्लाण मे पल । दक्खाई तोलि मे अट्ठा, पला सयलसाइमे ॥२७॥ (सिलोगा) अबयदाडिमविज्झिडकविट्ठबीजउरकरुणकेलाई । नारग मुसु नील वज्जेऽह जाव जीवाए ॥२८॥ पाणम्मि एगो घडगो जलस्स, पूगीफला पन्नर तीस पन्ना । जाईफलमी पलमेगमेव, सेसे पला दोन्नि उ साइममि ॥ २९॥ कत्थूरिगाकुकुमचदणाणि, कप्पूरमुत्ताहलफुल्लमाई । वज्जेमि सिगारकए तहेव, नेवोचिय ज विहवगणाण ॥ ३० ॥ (इन्द्रवज्राछद) ण्हाण सव्वगिया तिन्नि, भोगत्थ मासभतरे । तेऽवि मे जलकुभेण, वज्जे सेससह सया ॥३१॥ पारुत्थसयमोल्लाउ, तियलीओ सत्तमे दिणे । सुवन्नसय मे दोन्नि, रुप्पस्स पल मे सय ॥३२॥ सेज्जाकज्जेण काहामि, तूली एक्क परिग्गहे । वज्जे भोगव्वए सेस, भोगत्थ तिविहेणऽह ॥३३॥ (सिलोगा) निग्घिणजणोचियाण वहुसावज्जाण लोगवज्जाण । खरकम्माण सव्वाण मज्झ विरई उ जाजीव ॥३४॥ ठक्कारभाडमुजाइयाण वहुजलणजालणविहीए । परिकलियजीवियाण वित्ति वज्जेमि तिविहेण ॥ ३५ ॥ वज्जे वणकम्ममह छेयणछेयावणे य

रुक्खाणं । निव्वाहववच्छेए जयणा फलमाइविक्किणणे ॥ ३६ ॥ अहिगरणाणं सगडाइयाण विक्कयकए विवज्जेमि । दंतनहसंखमुत्ताह-
लाइं न किणेमि आगरओ ॥ ३७ ॥ सक्कुरुडलोहलक्खामणासिलगुलियाइ गोयरे वज्जे । वाणिज्जे लहाणिज्जे जयणा लद्धाण विक्किणणे
॥ ३८ ॥ रसवाणिज्जे मज्जाइविक्कयं तह चउमि वरिसंतो । चउण्हं चउप्पयाणं मोत्तूणं केसवाणिज्जं ॥३९॥ वज्जे अइसावज्जं विसवाणिज्जं
च दुविहतिविहेणं । जंताण पीलणं गोरुयाण निलंछणीकरणं ॥ ४० ॥ तह दवदाणं भवदुहनिहाणमुज्झेमि दुविहतिविहेणं । सोसं जलास-
याणं पोसं असईण वज्जेमि ॥ ४१ ॥ एत्तो अणत्थदंडे नियमा पुण घायवइरिमरणाई । पहरद्धाओ परओ अणुवंधाओ न चिंतेमि ॥ ४२ ॥
मज्जं विसया य कसाय पमाय निद्दा कहा तह विरुद्धा । इय पंचहा पमाओ पुरावि मज्जं मए चत्तं ॥ ४३॥ अव्वाहंमि सरीरे सुयामि रयणी
मुहुत्त मज्झण्हे । विकहाकसायविसए चएमि जिणमंडवस्संतो ॥ ४४ ॥ निदक्खिन्नंमि चए सत्थग्गिहलाइयाण दाणं च । वज्जे पावुवएसं
थूलं गोणाइदमणाई ॥ ४५ ॥ एयाइं पंच अणुव्वयाइं तिन्नि य गुणव्वयाइं च । अणवज्जकज्जनिरया जावज्जीवं पवज्जामि ॥ ४६ ॥ सयले
परिग्गहंमि दिसिपरिमाणंमि भोगउवभोगे । तहऽणत्थदंडविसए नियमा एगविहतिविहेणं ॥ ४७ ॥ मासे सामाइयाइं चउरो सज्झायसय-
महोरत्ते । दिवसंमि जोयणाइं थलप्पहे होंति पन्नरस ॥ ४८ ॥ भोगत्थण्हाणनियमो कंडण दलणं च मोत्तु वावारं । सावज्जे वज्जेमी अट्ठमि-
माईसु पव्वेसु ॥ ४९ ॥ पोसहपणगं काहं चउपहरं वारिसमज्झयारंमि । मासंतेऽवि गमिस्सं पोसहसालाई दो वारा ॥ ५० ॥ जइ कहावि
पमायवसा भंगो नियमेसु होज्ज एएसुं । सज्झाय सया पंच उ निव्वीयतवे व काहामि ॥ ५१ ॥ तह अतिहिसंविभागा चउरो वरिसंमि साहुस-
ब्भावे । एगविहेगविहेणं नियमा भोगव्वयाईसु ॥ ५२ ॥ सव्वेसिंपि जिणाणं कल्लाणदिणेसु मोत्तु गेलन्नं । काहं चिइवंदणमाइयाण निच्चं
चिय विसेसं ॥ ५३ ॥ मोत्तुं रायभिओगं गणाभिओगं बलाभिओगं च । देवाभिओग गुरुनिग्गहं च तह वित्तिकंतारं ॥ ५४ ॥ सयलाइयारसुद्धो

सेविज्जतोऽणवज्जकज्जो मे । एसो सावगधम्मो सम्म कम्मक्खय कुणउ ॥ ५५ ॥ देसेणुद्धरियाइ सम्म एयाइ सावयवयाइ । सिरिम मुणिचद-मुणीसरेण परकज्जसज्जेण ॥ ५६ ॥ जुगपवरसुयहराण सिरिममुणिचदसूरिसुगुरुण । सीसाण देवसूरीणमतिए वीरजिणभवणे ॥ ५७ ॥ इति कस्याश्चित् श्राविकाया व्रतनियमा ॥ अथ श्रीसिद्धान्तसारोद्धार । नमो जिनाय ॥ ३० ॥

अइविसमरागकेसरिनरिदनिद्दारणमि जसपसरो । जस्सऽज्जवि धवलइ तिहुयणपि नमिऊण त वीर ॥ १ ॥ जबुदीव१ढ्ढाइयदीवसमुद्दाण २ तहय दीवाण । जबुपमुहाण विन्चायलस्स नदीसरताण ॥२॥ विक्खभो तह परिही गणियपय पिहु पिहु भणिस्सामि३ । मेरुस्सवि मूलतले भूमितले उवरिमतलमि ॥ ३ ॥ विक्खभे परिगणिय ४ मेरुस्सवि लक्खजोयणुच्चत्त ५ । आमुत्तरासु लक्खो६पच्छिमपुव्वासु तह लक्खो७ ॥४॥ जबुद्दीवस्स ७ तहा नरखित्ते माणुसाण परिमाण८ । वरिससयआऊयाण उस्सासाईपरीमाण९ ॥ ५ ॥ समयाइसीसपहेलियतसखाणय च जिणभणिय १० । सखेज्ज११मसखेज्ज१२अणतयपि य १३ भणिस्सामि ॥ ६ ॥ पोग्गलपरियट्टपि य १४ इय चउदसधारसजुय भणिमो । मदमईबोहणत्थ सिद्धतुद्धारसारमिण ॥ ७ ॥ इह तिल्लपूयपडिपुन्नचदसठाणसठिओ रम्मो । सव्वलोगस्स मज्झे जबुद्दीवो हवइ लक्ख ॥ ८ ॥ त पुण दुगुणेण वित्थरेण चाउद्दिसि परिक्खिवइ । लवणो तपि य धायइ तद्दुगुणो त च कालोओ ॥९॥ अह माणुसुत्तरेण सेलेण मज्झसठिएण तु । पुक्खरवरदीवो तद्दुगुणवित्थरो त परिक्खिवइ ॥१०॥ दीवोदहिणो एव असखया दुगुणदुगुणिया भणिया । जावतिमो सयभूरमणुदही एस तिरिलोओ ॥ ११ ॥ उद्धारयराण जत्तियाओ अड्ढाइयाण इह समया । तावइया दीवुदही हवति दुगुणा दुगुणमाणा ॥ १२ ॥ एव ठियमि पढम जबूदीवस्स मेरुनाभिस्स । लक्खपमाणस्स परिहीपभिईगणिय भणिस्सामि ॥ १३ ॥ विक्खभवग्गदहगुणकरणी वट्टस्स परिरओ होइ । विक्खभपायगुणिओ उ परिरओ तस्स गणियपय ॥ १४ ॥ परिही तिलक्ख सोलस सहस्स दो सय सत्तावीसहिया ।

कोस तियं धणुह सयं अडवीसं तेरंगुलद्धाहियं ॥१५॥ (जो० ३१६२२७ गा० ३ ध० १२८ अं० १३॥) सत्तेव य कोडिसया नेउया छप्पन्न सयसहस्साइं । चउणउइं च सहस्सा सयं दिवड्ढं च साहीयं ॥१६॥ गाउयमेगं पन्नरस धणुहसया तह धणूणि पन्नरस । सार्द्धं च अंगुलाइं जंबूदीवस्स गणियपयं ॥ १७ ॥ (जो० ७९०५६९४१५० गा० १ ध० १५१५ अं० ६० दारं(१) । अड्ढाइज्जा दीवा दुन्नि समुद्दा य माणुसं खेत्तं । पणयाल सयसहस्सा विक्खंभायामओ भणियं ॥ १८ ॥ (जो० ४५०००००) एगा जोयणकोडी लक्खा बायाल तीसइ सहस्सा । समयक्खेत्तपरिरओ दो चेव सया अउणपन्ना ॥१९॥ (१४२३०२४९) सोलस कोडी लक्खा नव कोडीसयाइं कोडीलक्खेगं । पणवीस सहस्साइं गणियपयं समयखेत्तस्स ॥२०॥ (जो० १६००९०१००२५०००) दारं(२) तेवट्ठं कोडिसयं चउरासीयं च सयसहस्साइं । नंदीसरवरदीवे विक्खंभो चक्कवालेणं ॥ २१ ॥ (जो०१६३८४०००००) तह एस जंबुदीवो लक्खं दो लक्ख लावणसमुद्दो । एवं दुगुणा दुगुणा कायव्वा जाव पनरसमो ॥२२॥ नंदीसरवरदीवो एवपमाणाण दीवउदहीणं । पच्छिमपुरिमंताणं विच्चाले एस विक्खंभो ॥ २३ ॥ छक्कोडिसया पणवन्न कोडि तित्तीस लक्ख परिमाणं । इय विक्खंभा परिही गणियपयं चिय मुणेयव्वं ॥२४॥(जो० ६५५३३०००००) दोन्नि य कोडि सहस्सा बावत्तरिं कोडि लक्ख तेत्तीसं । चउपन्न सहस्साइं नउय सयं गाउयं एगं ॥ २५ ॥ धणुह सहस्सं इगवन्न समाहियं अंगुलाइं पन्नासं । एगो य जवो परिही नंदीसर अंतिमा एसा ॥ २६ ॥ (जो ० २०७२३३५४१९० गा० १ ध० १०५१अं० ५०ज० १) कोडाकोडीलक्खा तिन्नि उ तह कोडिकोडिसहसा उ । एगुणचत्ता पंच उ कोडीकोडीसया हुंति ॥ २७ ॥ कोडाकोडी पनरस एगुण नवई उ कोडिलक्खाउ । कोडिसहस्स पणवीसं हुंति कोडीसया तिन्नि ॥ २८ ॥ पंचाणवई कोडी छावट्ठी लक्ख सहस्स तिगसयरी । पणवी[illegible] उग्गभेगं धणुहाण पंचसया ॥ २९ ॥ छग सहिया तहवंगुलाइं एगूणवन्नगणियपयं । जंबूमुहदीवाणं नंदीसरआंतिमाण एसं ॥ ३० ॥ (जो० ३२९[illegible]१५८९२५३९५६६७३१२५

गा० १ ध०५०६ अ० ४९ दार(३) । रयणमओ मेरुगिरी जोयणसहस्स च भूमिगो होइ । नवनउई उव्विद्धो नाभिसमो सव्वलोयस्स ॥ ३१ ॥ मूले दस एक्कारसभागा नउया य जोयणसहस्सा । दस एमो विक्खभो परिही पुण जोयणसहस्सा (१००९०।भा०१०) ॥ ३२ ॥ इगतीस नव सय दस सहिया तिन्नि य इगारसा भागा (३१९१० । ३-११) भूविक्खभो दस सहस्स (१००००) परिहि इगतीस सहसा उ ॥३३॥ छस्सय तेवीसहिया (३१६२३) सहस पुण होइ उवरि विक्खभो (१०००) । परिही बावट्ठ सय तिन्नेव य जोयण सहस्सा ॥ ३४ ॥ (जो३१६२) । मूले मज्झुवरिंमि य बारस अड चउर जोयणे रुदा । चालीसुच्चा जिणभवणभूसिया मेरुवरि चूला ॥३५॥ दार (४) । पचेव जोयणसए उड्ढु गतूण पचसयपिहुल । नदणवण सुमेरु परिक्खिवित्ता ठिय रम्म ॥ ३६ ॥ बावट्ठी सहस्साइ पचेव सयाइ जोयणाण तु । सोमणस नाम वण पचसए होइ विच्छिन्न ॥ ३७ ॥ सोमणसाओ तीस छच्च सहस्से विलग्गिऊण गिरि । विमलजलकुडगहण होइ वण पडग सिहरे ॥ ३८ ॥ हेट्ठिमसहस्ससहिओ मेरुगिरी लक्खजोयणपमाणो । चूला दुवीस उच्चा समयकेऊहि निद्दिट्ठा ॥ ३९ ॥ इत्थ किल पिहुलत्त वणसडाण न होइ गणियव्व । उच्चत्ते पुण गणिए जोयणलक्ख हवइ मेरू ॥४०॥(१०००००) दार (५)पचसए छव्वीसे छच कला वित्थड भरहवास ५२६-५ । दस सय बावन्नहिया बारस य कला य हिमवते (१०५२-१२)॥४१॥ हेमवए पचहिया इगवीस सयाउ पच य कलाओ । (२१०५-५) दसहिय बायाल सया दस य कलाओ महाहिमवे (४२१०-१०) ॥४२॥ हरिवासे इगवीसा चुलसीइया कला य एक्का य (८४२१-१) । सोलस सहस्स अट्ठ य बायाला दो कला निसढे (१६८४२-२)॥४३॥ तेत्तीस च सहस्सा छच सया जोयणाण चउसीया । चउरो य कलासु कला महाविदेहस्स विक्खभो (३३६८४-४) ॥४४॥ भरहहिमवाइएसु छट्ठाणेसु कएसु दुगुणेसु । रिविए विदेहमाणे जबूदीवो हवइ लक्ख ॥४५॥ (१०००००) । जबूद्वीप दक्षिणवेदिकोत्तरवेदिकामध्ये लक्ष ॥ दार (६)॥ विजयाण विक्खभो बावीस सयाइ तेरसहियाइ । पचसग नक्खारा

पणवीससयं तु सलिलाओ ॥४६॥ अउणातीस सयाइं बावीसहियाइं वणमुहा दोवि। बावीस सहस्सा भद्दसाल तह दस य मेरुम्मि ॥४७॥ इय विजयनगनईणं वणमुहवणसंडमेरुसंखाणं। धरिऊण गुणह सोलस अडछगदुदुएगअंकेहि ॥ ४८ ॥ जइया तेराहियाइं बावीस सयाइं विजयपरिमाणं। पढियइ तइया दुन्नि उ फेडिज्जाहि गुणिय विजएसु ॥ ४९ ॥ बारसाहियाइं जइया बावीस सयाइं विजयाविक्खंभो। पढियइ तइया चउद्दस खिप्पंति य गुणियविजएसु ॥५०॥ जओ पढंति—सत्तगुणे विणु सोलहेहिं अट्ठाहिं सागु हरेज्ज। लद्धउं विजयहं मेल ठिउ तावहिं लक्खु करिज्ज ॥ ५१ ॥ १००००० जंबूद्वीपः पूर्ववेदिकापश्चिमवेदिकामध्ये लक्षः ॥ दारं (७) ॥ माणुसखेत्ते गब्भयमाणुसमाणं जहन्नयं समए। भणियमिह दुगो अंको दुगुणिज्जइ तत्थ चत्तारि ॥ ५२ ॥ किल हुंति तेऽवि दुगुणा अट्ठ उ ते दुगुणिया य सोलसओ। एवं दुगुणा दुगुणा कायव्वा छन्नवइ वारा ॥ ५३ ॥ छन्नवइयंमि वारे इगूणतीसं हवंति इह अंका। तप्परिमाणाइं माणुसाइं समयंमि भणियाइं ॥ ५४ ॥ अहवावि दुगो अंको वग्गिज्जइ तत्थ हुंति चत्तारि (४)। एसो पढमो वग्गो तव्वग्गे सोलस हवंति(१६)॥५५॥ तव्वग्गे दुन्नि सया छप्पन्नऽहिया (२५६) तहा य तव्वग्गे। पणसट्ठि सहस्साइं छत्तीसऽहिया य पंच सया (६५५३६)॥५६॥ तव्वग्गे पुण नेया पुव्वणुपुव्वीएँ एरिसा अंका। चउ दुन्नि नव य चउ नव छ सत्त दो नव य छच्चेव (४२९४९६७२९६)॥५७॥ एसो पंचमवग्गो एयस्सवि वग्गजाणणे अंका। पुव्वणु-पुव्वीएँ इमे नेयव्वा बुद्धिमंतेहिं ॥५८॥ इग अट्ठ चउ चउ छग सत्त चउ चउर सुन्न सत्तेव। तिग सत्त सुन्न नव पंच पंच इग छच्च इग छच्च ॥५९॥ (१८४४६७४४०७३७०९५५१६१६) एसो छट्ठो वग्गो गुणियइ एएण पंचमो वग्गो। तत्थुप्पन्नं कितगुणियनीईकुसलेहिं धीरेहिं ॥ ६० ॥ एगुणतीसं अंका पुव्वणुपुव्वीएँ हुंति नायव्वा। सत्त नव दुन्नि दुन्नि य अड इग छग दुन्नि पंचेव ॥ ६१ ॥ इग चउर दुन्नि छच्च य चउ तिय तिय सत्त पंच नव तिन्नि। पंच चउ तिन्नि नव पंच सुन्न तिय तिन्नि छच्चेव ॥ ६२ ॥ छ ति त्ति सुं पण त्ति च प

त्ति ण प स ति त्ति च छ दु च ए । प दो छा ए अ वि वे ण स पढमक्खरसतिया ठाणा ॥ १ ॥ एकोनत्रिंशदकस्थानसूचिका सक्षिप्ततरेय गाथा ॥ ७९२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ एव च इमो रासी पच्छणुपुव्वीएँ होइ गणियव्वो । एग दह सय तिय जा कोडी अट्ठमे ठाणे ॥ ६३ ॥ कोडाकोडी पन्नरसममि कोडि कोडी उ कोडी वावीसा । कोडाकोडीकोडाकोडी गुणतीसिमे ठाणे ॥ ६४ ॥ अहवा सिरिपन्नवणा-वित्तीभिप्पायओ इमे अका । कोटीकोडाकोडीहिं यावि काउ निरभिल्प्पा ॥ ६५ ॥ तप्परिनाणत्थ पुव्वपुव्वअगेहिं सेसवरिसेहि । परिसखाण कीरइ चउरासी तत्थ लक्खाइ ॥ ६६ ॥ पुव्वगमाहु त पि य गुणिय एएण चेव पुव्व तु । तत्थागयामिणमो कोडि लक्ख सयरी उ वासाण ॥६७॥ छप्पन्न च सहस्सा बोध्धव्वा हुति वासकोडीण । पुव्वपरीमाणमिण भागो एएण किल एत्थ ॥ ६८ ॥ हीरइ सत्तनवाइणुगुणतीसाण एत्थ अकाण । तत्थ इम लद्धफल भणिय वित्तीएँ गाहाहिं ॥ ६९ ॥ मणुयाण जहन्नपए एक्कारस पुव्वकोडीकोडीओ । वावीस कोडी लक्खा कोडिसहस्साइ चुलसीई ॥ ७० ॥ अट्ठेव य कोडिसया पुव्वाण दसुत्तरा तओ हुति । एकासीई लक्खा पचाणउई सहस्सा य ॥७१॥ छप्पन्ना तिन्नि सया पुव्वाण पुव्ववन्निया अन्ने । एत्तो पुव्वगाइ इमाइ अहियाइ अन्नाइ ॥७२॥ लक्खाइ एक्कवीस पुव्वगाण व सत्तरि सहस्सा । छच्चेवेगुणणउया पुव्वगाण सया हुति ॥ ७३ ॥ तेसीइसयसहस्सा पन्नास खलु भवे सहस्साइ । तिन्नि सया छत्तीसा एवइया वेगला मणुया ॥ ७४ ॥ एव परीमाणाइ समयक्खेत्तम्मि माणुसाइ धुव । सव्वजियाण मज्झे जिणेहिं थोवाइ भणियाइ ॥ ७५ ॥ समयक्खेत्ता वाहिं मणुयाण नत्थि मरणउप्पत्ती । नेवत्थि वायरग्गी नेव समयाइकालोऽवि ॥७६॥दार(८) । कालपरिन्नाणपि य वाससओवरिओण निसामेह । अइतुच्छ जरथुस्सासमाइय तपि किल गणिय ॥ ७७ ॥ नीरोगि जोव्वणत्थस्स, पसतस्स सरीरिणो । नीसास्सुसासए एगे, पाणुओ एस भन्नई ॥७८॥ थोवो य सत्तपाणूहिं, लवेण सत्त थोवए । मुहुत्ते सत्तहत्तरिए, लवाण जिणदेसिए ॥७९॥ मुहुत्तेऽगतनाणीहिं, उस्सासाण वियाहिया ।

तिसत्तरी सया सत्त, तहा य सहसत्तियं ३७७३ ॥८०॥ अहरत्ते ऊसासा लक्खो तेरससहस्स नउय सयं (११३१९०) मासे लक्खा तेत्तीस सहस पणनवइ सत्त सया (३३९५७००)॥ ८१ ॥ चत्तारि सया अडयाल सहस सत्तेव तह य लक्खा य। चत्तारि य किल कोडी ऊसासा हुंति वारेसंमी (४०७४८४००) ॥ ८२ ॥ कोडि सयाइं चउरो सत्त कोडीउ लक्ख अडयाला। सहसावि य चालीसं वाससए हुंति ऊसासा (४०७४-८४००००)॥ ८३ ॥ घाडियाणं इगवीसं लक्ख सहस्सा य सट्ठि बोद्धव्वा (२१६००००) दो लक्खा पहराणं सहसट्ठासीइ वाससए (२८८०००) ॥८४॥ वाससयआउयाणं छत्तीस सहस्स होइ दिणमाणं ३६०००। अह समयावलियाई विसेसओ भण्णए कालो ॥ ८५ ॥ दारं(९)॥ कालो परमनिरुद्धो अविभागी तं तु जाण समओत्ति । संखाई आवालिया ता संखेज्जा य उस्सासो ॥ ८६ ॥ हट्ठणगल्लुस्सासो एसो पाणोत्ति सन्निओ एक्को। पाणू य सत्त थोवो थोवा सत्तेव लवमाहु ॥ ८७ ॥ अट्ठत्तीसं च लवा अद्ध लवा चेव नालिया होई। दो नालिया मुहुत्तो तीस मुहुत्ता अहोरत्तो ॥ ८८ ॥ पन्नरस अहोरत्ता पक्खो पक्खा य दो भवे मासो। दो मासा उउसन्ना तिन्नि य रियवो अयणमेगं ॥ ८९ ॥ दो अयणाइं वरिसं तं दसगुण वड्ढियं भवे कमसो। दस य सयं च सहस्सं दस य सहस्सा सयसहस्सं ॥ ९० ॥ वाससयसहस्सं पुण चुलसीइगुणं हवेज्ज पुव्वंगं। पुव्वंगसयसहस्सं चुलसीइगुणं भवे पुव्वं ॥ ९१ ॥ पुव्वस्स य परिमाणं सयरी खलु होति कोडि लक्खाओ। छप्पन्नं च सहस्सा बोधव्वा वासकोडीणं ॥ ९२॥ पुव्वंगं पुव्वंपि य नउयंगं चेव होइ नउयं च। नालिणंगं नालिणंपि य महनलिणंगं महानालिणं ॥ ९३ ॥ पउमं कमलं कुमुयं तुडियमडडमववहुहुकमंगं। अउयंग अउय पउयं तह सीसपहेलिया चेव ॥ ९४ ॥ पुव्वनउयप्पभिई य चउद्दस नामाउ अंगसंजुत्ता। अट्ठावीसट्ठाणा चउनउयं होइ ठाणसयं ॥ ९५ ॥ पुव्वंगाईयाणं अट्ठावीसाइ एत्थ ठाणाणं। पच्छाणुपुव्वीएँ इमे नेया पत्तेयमंका उ ॥ ९६ ॥ पुव्वंगंमि पण सुन्न चउर अट्ठेव तह य पुव्वंमि। दस सुन्न छ पण सुन्नं सत्तेव य तहय नउयंगे ॥९७॥ पन्नरस

सुन्ना चउ सुन्न सत्त दो नव य पच तह नउण । वीस सुन्ना छत्तिय इग सत्त य अट्ठ मत्तव ॥९८॥ नव चउ तह नलिणग पणवीस सुन्न चउर दुग चउरो । सत्त इग इग दुग अट्ठय इग चउरो तहय नलिणम्मि ॥ ९९ ॥ तीस सुन्ना छग इग छग इग तिग सुन्न अट्ठ नव दुन्नि । इग पच तिन्नि महनलिणअगए सुन्न पणतीसा ॥ १०० ॥ चउ चउ सत्त य पण पण छग चउर तिय सुन्न नव य सुन्न च । पण नव गो महनलिणे चत्तालीस सुन्नाओ ॥ १०१ ॥ छन्नव चउ दुग अट्ठ य सुन्न इग एग नव य अट्ठव । पण सत्त अट्ठ सत्त य चउ दुन्नी तहय पउमग ॥ १०२ ॥ पणयालीस सुन्ना चउ छग छग चउर दुन्नि नव सुन्न । तिय पच अट्ठ चउ सत्त पच इग दुन्नि अड सुन्न ॥ १०३ ॥ दुन्नि य पणु य पउम सुन्ना पन्नास छन्न मत्तेय । सत्तग नव य सुन्न अड नव पचव छग सत्त ॥ १०४ ॥ अट्ठ य दु दु इग सुन्न नव चउ सत्तेग तहय कमलग । पणवन्न सुन्नाइ चउ अड इग नव य सुन्न च ॥ १०५ ॥ सत्त य नव ति दु चउर ति छगिग दु ति सुन्न सत्तिग चउर । छ चउर इग तह कमले सट्ठी सुन्नाइ छप्पन्न ॥ ६ ॥ चउ एग सत्त पच य पण तिग इग छच्च सत्त दो सत्त । इग सुन्न सत्त सुन्न तिग सुन्न एग चउ तिन्नि ॥ ७ ॥ दुग एग कुमुयग पणट्ठी सुन्न चउर सुन्न तिग । दो सुन्न सुन्न अट्ठ य अट्ठ उ ति पण नव एग इग पच ॥ ८ ॥ चउ नव य अट्ठ सत्त य पण छच्च य चउर छच्च छच्च तिग । सुन्नेग तह कुमुए सत्तरि सुन्ना छ तिग पच ॥ ९ ॥ ति नवगि गो नव पच य दुगेग चउ सुन्न सुन्न नव तिन्नि । इग तिग छग दुग इग तिग अड सत्त य सुन्न सत्तट्ठ ॥ १० ॥ तुडिगगे पणसत्तरि सुन्नाइ चउर दुन्नि सुन्न च । सत्त पण दुन्नि चउ चउ सग य सत्तेय पण छच्च ॥ ११ ॥ चउ तिग छग सत्त सग ति सुन्न इग छच्च दुन्नि अट्ठव । सत्त पण चउर इग तिग सत्त य तुडियम्मि सुन्न असी ॥ १२ ॥ छग एग सुन्न सुन्न नव पचय सत्त एग पण सुन्न । पण दुग इग इग तिग इग अट्ठट्ठ य सुन्न सत्त दुग ॥ १३ ॥ नव तिन्नि सत्त पच य चउ दुग चउ चउर एग छन्नेय । अडडगे पण असिई सुन्न चउ चउ तिगेग च ॥ १४ ॥ छप्पन्न सत्त सत्त य चउ तिय चउ सुन्न पच चउ एग ।

सुन्न तिग सुन्न चउगं पण सत्तट्ठ य नव य(पण)सुन्नं॥१५॥ दुग चउर छच्च छगिगं इग छश्च य एग पंच अडडंमि। नवई सुन्ना छन्नव य अट्ठ दुग पंच इग पंच ॥ १६ ॥ इग इग दु पंच छग तिग अट्ठिग दु ति पंच अट्ठ ति ति पंच। नव दुग छत्तिय नव सत्त नव य सत्तेव तिग पंच ॥१७॥ ति ति चउ अववंगंमी पणनवई सुन्न चउ छग दु तिन्नि। चउरट्ठ दु सत्त सत्तेव छग दुन्नि ॥ १८ ॥ चउ तिग सुन्नं सत्त य छग तिग चउ अट्ठ सुन्न अट्ठट्ठ। चउ छग छग दुग सुन्नं नवेग सत्तेग चउ छच्च ॥ १९ ॥ तिन्नि य तह अववंमी सुन्न सगं छच्च सत्त इग चउरो। तिग अट्ठट्ठिगपं च य नव पंच ॥ २१ ॥ सुन्नं तिगं हुहुयंगे पणहिय सय सुन्न चउर अट्ठेव। सत्त य सुन्नं सत्त य सुन्नं दुग अट्ठ पंचेव ॥ २२ ॥ नव पंच दु ति चउ तिगं नव सत्त य ति नव सत्त तिग नवगं। दु ति दुग नव नव ति ति सुन्न दुत्ति पण चउर नव छच्च ॥२३॥ नव पंचेव य नव छच्च पंच दो हूहुयांमि सुन्न सयं। दस अहिय छप्पण अट्ठ पंच चउर नवाति नव ट्ठयगं ॥२४॥ चउ सुन्न अट्ठ ति तिन्नि अट्ठ चउर छग अट्ठ सत्त छच्चट्ठ। सत्त य छग छग पण पंच य ति पण पंचट्ठ सुन्नं च ॥ २५ ॥ सत्त नव तिन्नि तिग चउ इग छग चउरट्ठ पंच एग दुगं। अउयंगे सुन्न सयं पनरस अहियं चउर सुन्नं ॥ २६ ॥ नव एग पंच चउ इग नव सुन्नेगेग छनवतिग सुन्नं। छ चउ छ सुन्न सुन्नं नव सुन्नं सुन्न इग छच्च ॥ २७ ॥ सत्तट्ठय नव चउ अट्ठ एग पण पंच तिपण चउ सुन्नं। छगसत्त सुन्निगतिगं इग अट्ठेग तहा अउए ॥ २८ ॥ सुन्नसयं वीसहियं छतिनव नव पंच नविग अड छश्च। इग तिति सत्त दुग तिगं सत्त य छदु चउर पण छच्च ॥ २९ ॥ पण सत्त चउ दुनव पण नव अट्ठय तिपण पंच तिन्नट्ठ। नव सुन्न अट्ठ सत्त य अडातिग सुन्नेग सुन्नतिगं ॥ ३० ॥ दो पंचिग पउयंगे सुन्न सयं पंचवीस अब्भहियं। चत्तारि दो छच्चउतिगं छ चउर अड दुन्नि इग छच्च ॥ ३१ ॥ अड पण नव चउ पणगं पण चउ अड पंच नव य चउ पंच। नव सत्त छ सत्त य पंच दुन्नि सत्तेव दुगपंचं ॥ ३२ ॥ अट्ठिग छ दु सुन्न छगं सत्तय पण दुन्नि सत्त अट्ठ दुगं। तिग नव सत्त दुगेगं पउए सुन्नाण

तीसलय ॥ ३३ ॥ छ इग चउ अट्ठ सुन्न तिग नव सुन्न च नव य सत्तेव । चउ ति दुपण छग इग छद्दु सुन्न इग पण छ इग दुन्नि ॥३४॥ अडसुन्न पच चउ छग नव अड दुग छ पण नव नविग छद्द । तिग छग नव दु इग छग तिग छग चउ सत्त सुन्नेग ॥ ३५ ॥ सीसपहेलियअगे पणतीस सय तु होइ सुन्नाण । चउ चउ नव छग सुन्न नवेग अड तिन्नि चउ दो दो ॥ ३६ ॥ सत्त नव सत्त अड सत्त नविग छग अट्ठ छद्द इग सुन्न । नव छऽट्ठिग सुन्न तिग तिन्नट्ठ दुतिन्नि छग सत्त ॥३७॥ सुन्न चउ चउर छग नव अट्ठ दु य चउर ति चउ नव छ दुग । सुन्न नव सीसपहेलियम्मि सुन्नाण चालसय ॥३८॥ छग नव दुति अट्ठ इग सुन्नदुय सुन्न अट्ठ चउ अट्ठ । छ छ नव अट्ठिग दुग छग सुन्न चउ छन्नव छ पच ॥ ३९ ॥ सत्त नव नव छ पण तिग सत्तय नव सत्त पच इग एग । चउ दुग सुन्निग सुन्न तिसत्त सुन्न ति पण दुतिग ॥४०॥ छ दु अट्ठ पच सत्त य एव चउपन्न एत्थ अकाओ। पुव्वुत्तसुन्नजुत्ता चउनवय होइ ठाणसय ॥४१॥ पुव्वगाईयाण नामविभत्ती उ अन्नहा वेसा । अणुओगदाराइसु दीसइ नो तेसु वभिचारो ॥ ४२ ॥ इय सखाण भणिय अहुणा सखाणयस्स पत्थावा । सखेज्जमसखेज्ज अणतयपि य भणिस्सामि ॥ ४३ ॥ सखेज्जमसखेज्ज अणतय तिविहमित्थ सखाण । सखेज्ज पुण तिविह जहन्नय मज्झिमु-कोस ॥ ४४ ॥ तिविहमसखेज्ज पुण परित्त जुत्त असखयासख । एक्केक्क पुण तिविह जहन्नय मज्झिमुकोस ॥ ४५ ॥ तिविहमणतपि तहा परित्त जुत्त अणतयाणत । एक्केक्क पुण तिविह जहन्नय मज्झिमुक्कोग ॥४६॥ एव तिभेयभिण्ण सखेज्ज एत्थ होइ नायव्व । असखेज्ज नवहा नवभेयमणतयपि तहा ॥ ४७ ॥ एगत्थ मीलियमी इगवीस एत्थ हुति ठाणाइ । नवर सिद्धतम्मि वीस ठाणा उ वगरति ॥ ४८ ॥ इगवीस-इम ठाण उक्कोसमणतणतय ज त । नो चेत्तव्वमियार्णि वीसइठाणाणह वोच्छ ॥ ४९ ॥ जबूदीवपमाणा चउरो पल्ला हवति तहिं पढमो । अणवट्ठियो उ पल्लो बीओ उ सलायपल्लोत्ति ॥५०॥ तइओ उ पडिसलायापल्लो तुरियो महासलायाण । पल्ला एए चउरो जोयणसहस्स च

ओगाढा ॥५१॥ रयणप्पभाएँ पढमं रयणकंडं विभिंदिउं बीए । वइरकंडंमि उवरि पइट्ठिओ जाणऽणवठप्पो ॥५२॥ ससिहा सवेइयंता एवं च ववट्टिए सुणह एवं । दो रारिसवा जहन्नं संखेज्जं होइ जिणभणियं ॥ ५३ ॥ मज्झिमसंखेज्जमिमं तु होइ तिपभीति जाव उक्कोसं । नो पावइ तस्सवि पयडणत्थ पल्ला पभन्नंति ॥ ५४ ॥ जो यऽणवाट्ठियपल्लो सरिसवपुन्नो पवत्तिओ पुव्विं । ताओ असब्भावपकप्पणाए केणावि देवेण ॥ ५५ ॥ उक्खिविय पक्खियंतो सरिस्सवा दीवसागरे सेवं । दीवसमुद्दक्खेवेण जाव सव्वेऽवि निट्ठविया ॥५६॥ तो तप्पज्जवसाणो जंबूदीवाइओ हवइ पल्लो । अणवाट्ठिओत्ति तत्तो एगो उ सलायपल्लंमि ॥५७॥ सरिसवओ परिखिप्पइ पुणरावि तं सरिसवाण भरिऊणं । अणवट्ठियंति पल्लं उखेप्पइ तओ उ दीवम्मि ॥५८॥ उयहिंमि य तो एवं पुव्वकमेणं जया य निट्ठाविओ । तइया बीय सलाया पक्खिप्पइ सलायपल्लंमि ॥५९॥ पुव्वक्कमेण खिविउं अणवाट्ठियपाल्लियं भरेऊणं । उक्खिवियनिट्ठिएसुं तइय सलागा तओ पडइ ॥ ६० ॥ तम्मि सलायापल्ले एएण कमेण जाव सो पल्लो । पडिपुन्नो उ सलायाहिं हवइ अणवाट्ठियतयाहि ॥६१॥ भरिओऽवि न ओखिप्पइ तइया अणवट्ठिओ उ पल्लोत्ति । जेणं सलायपल्लो सलाइया तत्थ नो माइ ॥ ६५ ॥ तत्तो सलायपल्लोवि चेव उक्खिप्पए तओ दीवे । उयहिंमि य पक्खिप्पइ ता जा सव्वोऽवि निट्ठविओ ॥६३॥ एगा सलाइया तो पखिप्पइ पडिसलायपल्लंमि । पुणरावि अणवाट्ठियपल्लसंतियाहि सलायाहिं ॥ ६४ ॥ भरियइ सलायपल्लो तेणेव कमेण पडिसलागक्खो । पल्लो भरियइ तम्मी भरिए अणवाट्ठिएण तहा ॥ ६५ ॥ भरिए सलायपल्ले नो उक्खिप्पइऽणवाट्ठिओ पल्लो । नेव य सलायपल्लो जत्तो नो माइ तईयम्मि ॥ ६६ ॥ पल्ले एक्कावि सलाइयत्ति तत्तो उ पडिसलागोवि । उक्खिप्प पुणरावि दीवउदहिक्खेवेण निट्ठविओ ॥ ६७ ॥ जइया होइ तया किल पल्लंमि महासलागनामंमि । पक्खिप्पइ एगसलाइयत्ति तत्तो सलागक्खो ॥६८॥ उक्खिप्पइ तम्मि य निट्ठियम्मि तत्तो उ पडिसलायम्मि । पक्खिप्पइ एगसलाइयत्ति तत्तोऽणवाट्ठियओ ॥ ६९ ॥ उक्खिप्पइ तंमि निट्ठियम्मि बीए सलायपल्लंमि । खिप्पइ सलाइया

तो गगण कमेण पढमेण ॥ १७० ॥ भरियइ पल्लो वीओ तेणवि तइओ उ तेणवि चउत्थो । भरणुद्धरणविकिरण ता कज्ज जाव चउ पुन्ना ॥ १७१ ॥ भवतीति शेष ॥ पढमतिपल्लुद्धारिया दीवुदही पल्लचउसरिसवा य । रूवूण एस रासी सव्वोऽवुक्कोससखेज्ज ॥ ७२ ॥ अणवट्ठि-आइया ते पल्ला सपुन्नया य चत्तारि । रूवजुया य जहन्न परित्तमसख तय होइ ॥ ७३॥ ज त परित्तमसख जहन्नय विवरिऊण पत्तेय । एक्के-क्कंमिय रासी तावइओ चेव कायव्वो ॥ ७४ ॥ वग्गियसवग्गियए परित्तमसख पर अइक्कमिय । जुत्तासखम्मि जहन्नगम्मि गतूण त पडिय ॥ ७५ ॥ तत्तो रूवऽवहारे परित्तमसखय हवइ परम । तट्ठाणाओ पच्छामुहाणि सव्वाणि ठाणाणि ॥ ७६ ॥ मज्झिमपरित्तअसखयाणि भन्नति जा असखेज्ज । परितजहन्न त पुण पवन्निय पुव्वगाहाए ॥७६॥ जेत्त जहन्नजुत्त आवलियाए य एत्तिया समया । सइ वग्गियमि सते जुत्तासख अइक्कमिय ॥ ७८ ॥ पडियमसखासखे जहन्नए रूवहीणय तपि । उक्कोस जुत्तासखगति पुणरवि य तट्ठाणे ॥ ७९ ॥ पच्छिमसुहाइ मज्झिमजुत्तासखेज्जगाइ भन्नति । जा जुत्तासखेज्ज जहन्नग ज पुरा भणिय ॥ १८० ॥ तोऽसखासखे जहन्नगस्स तियवारवग्गसवग्गे । पक्खिसिवि पक्खेवा लोगागासाइया दस उ ॥ ८१ ॥ लोगागासपएसा १ धम्मा २ धम्मे ३ गजीवदेसा य ४ । दव्वट्ठिया निगोया ५ पत्तेया चेव बोद्धव्वा ६ ॥ ८२ ॥ ठिइवधज्झवसाणा ७ अणुभागा ८ जोगछेयपलिभागा ९ । दोण्ह समाण समया १० असखपक्खेवया दस उ ॥ ८३ ॥ तो तिनि वार पच्छा वग्गियसवग्गिओ इमो पडइ । अइक्कमिउ उक्कोस परित्तणते जहन्नम्मि ॥८४॥ तो तम्मि रूवूणे उक्को-समसखासखय होइ । मज्झिमअसखासख होइ उ जा पच्छिमजहन्न ॥८५॥ जहन्नपरित्तणते वग्गियसवग्गियामि सतम्मि । अइक्कमिउ उक्कोसे जुत्ताणते जहन्नम्मि ॥ ८६ ॥ जाइ तो रूवहाणी जा कज्जइ ताव होइ उक्कोस । परितअणत पच्छामुहेसु सव्वेसु ठाणेसु ॥ ८७ ॥ मज्झि-मगपरित्ताणतयाति त भन्नए मुणिदेहिं । जाव परित्ताणत जहन्नग पुव्वानिद्दिट्ठ ॥ ८८ ॥ जुत्ताणतजहन्ने अभव्वजीवावि एत्तिया चेव । सइ-

वग्गियम्मि संते जुत्ताणंतं अइक्कमिउं ॥ ८९ ॥ पडियमणंताणंते जहण्णगे तस्स रूवअवहारे । उक्कोसं जुत्ताणंतयंति संपज्जए तत्तो ॥ ९० ॥ तट्ठाणाउ जहण्णं जुत्ताणंतंति जाव विण्णेयं । मज्झिमजुत्ताणंतं णंतरठाणेसु सव्वेसुं ॥९१॥ तो तमणंताणंतं जहण्णयं तिण्णि वार वग्गाहि । संवग्गियं च काउं तहवुक्कोसं न पावेइ ॥९२॥ ताहे छप्पक्खेवा अणंतया सिद्धमाइया खिविउं । काऊण तिण्णि वारा वग्गियसंवग्गियं च तहा ॥ ९३ ॥ सिद्धा १ निगोयजीवा २ वणस्सई ३ काल ४ पोग्गला ५ चेव । सव्वमलोयागासं ६ छप्पेएऽणंतपक्खेवा ॥ ९४ ॥ तहवि अणंताणंतं उक्कोसं जा न पावए कहवि । ताहे केवलनाणं पक्खिप्पइ दंसणं चेव ॥९५॥ तहवि अणंताणंतं उक्कोसं नेव होइ कइयावि । एवं च ठिए जत्थ उ सिद्धंते भन्नए बहुहा ॥ ९६ ॥ उक्कोसमणंताणंतयंति तत्थाजहन्नमुक्कोसं । घेत्तव्वमणंताणंतयंति इइ आहु सगयन्नू ॥९७॥ एवं अणंतयं पुण पुग्गलपरियट्टएसु संभवइ । तं जाणणत्थमहुणा पुराणगाहा उ भन्नंति ॥ ९८ ॥ ओरालविउव्विगतेयकम्मभासाणुपाणमणगेहिं । फासेवि सव्वपोग्गल मुक्का अह बायरपरट्टो ॥९९॥ दव्वे सुहुमपरट्टो जाहे एगेण अह सरीरेण । लोगंमि सव्वपोग्गल परिणामेऊण ते मुक्का ॥२००॥ लोगागासपएसा जया मरंतेण एगजीवेणं । पुट्ठा कमुक्कमेणं खेत्तपरट्टो भवे थूलो ॥ १ ॥ जीवो जया य एगे खेत्तपएसम्मि अहिगए मरइ । पुणरवि तस्साणंतरबीयपएसंमि जइ मरइ ॥२॥ एवं तरतमजोएण सव्वखेत्तंमि जइ मओ होइ । सुहुमो खेत्तपरट्टो उक्कमेणं नवि गणेज्जा ॥३॥ ओसप्पिणीए समया जावइया तत्तियाइं मरणाइं । जइया पत्ताइं कमुक्कमेहिं अह बायरपरट्टो ॥ ४ ॥ सुहुमो पुण ओसप्पिणिपढमे समयम्मि जइ मओ होइ । अन्नाइवि समणंतर बीए समयम्मि जइ मरइ ॥५॥ एएण कमेण पुणो ओसप्पिणिए उ सव्वसमएसु । जइ कुणइ पाणचायं कालपरट्टो मुणेयव्वो ॥६॥ जे सुहुमागणिजीवा असंखलोयाण जत्तिय पएसा । जत्तिय तेउकायठिई एएसि चिय असंखगुणा ॥७॥ कायठिईएहितो अणुभागे जाणि बंधठाणाणि । ताणि असंखगुणाणि य संजमठाणाणि तावंति ॥८॥ अणुभागबंधठाणेसु चेव सव्वेसु जइ मओ होइ । अ-

नियकसुक्कम नायर भावपरट्टो मुणेयव्वो ॥९॥ अणुभागवधठाण सव्वत्थवि मरइ कहवि जइ पढमे। तयणतर च वीए मरइ तओऽणतर तइए ॥ २१० ॥ एएण कमेण पुणो सव्वेसुवि मरइ वधठाणेसु । सुहुमो भावपरट्टो एसो नेओ समासेण ॥ २११ ॥ इय गणियविसयपगरण-मिणमो गाहाहिं सुहअपोहाहिं । रइय सिरिचक्केसरसूरीहिं परोवयारत्थ ॥ २१२ ॥ नाम पुण सिद्धतुद्धारसारो भणतु एयस्स । मोक्खत्थिणो वुहजणा सोहिंतु गुणतु चिंततु ॥ २१३ ॥ इति श्रीवर्द्धमानसूरिपादपद्मोपजीविश्रीमच्चक्रेश्वरसूरिविरचित सिद्धान्तोद्धारप्रकरण समाप्तम् ॥

॥ अथ पोसहविहिपगरण ॥

सव्वविरएहिं जेहिं सावज्ज सव्वहा परिच्चत्त । तेसिं गुरूण पाए नमामि सव्वेण भावेण ॥ १ ॥ धम्मत्थसयणकरिसाहि धम्मकरणु-ज्जएहिं सत्तेहिं । सुरसाधियसयसाहारोहट्टज्झाणरुक्खेहिं ॥ २ ॥ वावारविगहपरिवज्जिएहिं सव्वेहि सुद्धचित्तेहिं । अट्ठमिचउदसिचउमास-पज्जुसयगाइपव्वेसु ॥ ३ ॥ उवहाणतव च तहा वहमाणेहिं सपोसह किच्चा । भणिय समयमि तओ भणामि पोसहविहिं एत्तो ॥ ४ ॥ कत्थइ ताहिं पोसहविही तहय अहोरत्तकिरियकरण च । तह पोसहपारावणविहिं च सखेवओ सुणह ॥ ५ ॥ ताहिं पोसह परिगिण्हइ साहुसमीवम्मि चेइयहरे वा । पोसहसालाएँ गिहेगदेसठाणम्मि वा विहिणा ॥ ६ ॥ तत्थ नियावासाओ गुरुवसहिं गतु वदिऊण गुरु । इरिय पडिक्कमेइ कट्ठासणय च गिण्हेइ ॥७॥ तत्तो पुणोऽभिवदिय मुहपत्तिं पेहिऊण वदित्ता । सदिसह इच्छाकारेण पोसह सदिसावेमि ॥ ८ ॥ वदिय इच्छाकारेण पोसहे ठामी भणइ उट्ठित्ता । नवकार ओच्चरित्ता तो पोसहदडय भणइ ॥९॥ तत्थ करेमि भते[1] पोसह आहारपोसह देसओ (सव्वओ) सरीरसक्कारपोसह सव्वओ बभचेरपोसह सव्वओ अव्वावारपोसह सव्वओ चउव्विहेवि पोसहे ठामि सावज्ज जोग पच्चक्खामि जाव अहोरत्त पज्जुवासामि दुविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि तस्स भते[1] पडिक्कमामि निंदामि

गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ छ ॥ दिणरत्ति पोसहंमिं जाव अहोरत्त पज्जुवासामि । दिवपोसहंमि पभणइ जादिवसं पज्जुवासामि ॥ १० ॥ रत्तित्तणयम्मि जारत्ति पज्जुवासामि भणिय तो वंदे । पोत्तिं पेहिय वंदइ सामाइय संदिसावेमि ॥ ११ ॥ वंदिय सामाइयए ठायह उट्ठिसु भणइ नवकारं । अह सामाइयदंडगमुच्चरइ करेमिइच्चाई ॥१२॥ करेमि भंते ! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावपोसहं पज्जुवासामि दुविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करोमि न कारवेमि तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥छ॥ वंदिय कट्ठासणयं संदिस्सावेमि वंदिउं भणइ। कट्ठासणए ठाएह पुण वंदिय संदिसावेमि॥१३॥ सज्झायं वंदित्ता सज्झायं करह तो नमोक्कारं । तिन्नि उ वारा पभाणिय तो पंचाईहि गाहाहि ॥१४॥ सज्झायं पकरित्ता वदिय समणाइ चउविहं संघं । सज्झायाइ पकरइ समुचियसमए गुरुसयासे ॥१५॥ वंदिय पोत्तिं पेहइ वंदणयं दाउ निच्चकिच्चाणि । पकरइ आलोयण खामणाणि जहभणियविहिणा उ ॥ १६॥ तत्तो गुरुं नमित्ता उववासाई जहासमा-हीए । पच्चक्खइ गुरुवयणं अणुभासितो सणिय सणियं ॥ १७ ॥ तो वंदिऊण साहूपभिईसंघं नमित्तु गुरुपाए । पढइ गुणेइ सुणेई धम्म-कहं वा परिकहेइ ॥ १८ ॥ पउणपहरम्मि पडिलेहणाएँ वंदित्तु पोत्तियं पेहे । अह जइ तंगणियाए वच्चइ तो इरियमाउत्तो ॥ १९ ॥ गंतुं भुवं पमज्जिय उच्चाराईणि करिय नियठाणे । ठिच्चा इरियं कमई गमणागमणं च आलोए ॥ २० ॥ **तद्यथा**=इच्छाकारेण संदिसह गमणागमण आलोयहं?, इच्छं आवसी करिउ गया दक्खिणदिसिहि थंडिलभूमि पडिलेही उच्चारपासवण सौ वावार चितकी निसीही करिउ पइठ्ठा, आवतेहि जंतेहिं जे कांइ खंडण विराहण की तस्स मिच्छामि दुक्कडं । तो चेईहरे गंतुं जिणेऽभिवंदित्तु उचियठाणम्मि । जहजोगं वक्खाणं सुणेइ तो भोयणावसरे ॥ २१ ॥ वंदिय पोत्तिं पेहइ तो वंदिय भणइ भत्तपाणेणं । पारावेमो वंदिय पारावह भत्तपाणेणं ॥ २२ ॥ नवकारं उच्चरई अह उववासी तओ उ पाणस्स । पारावइ तो वंदिय विहिणा आवस्सियं भणइ ॥२३॥ तो सयणागेहे गंतुं इरियं पडिक्कमइ

भणइ सकथर। भायणहत्थमुहाइ पेहिय तो भुजए विहिणा ॥ २४ ॥ भुत्तंते उद्वित्ता मक्कथय भणिय गच्छए नियए। धम्मट्ठाण तत्थवि रिय पडिकमिय आलोए ॥ २५ ॥ आगमण तो वंदिय जहासमाहीएँ आसणे ठिच्चा। सज्झायाई पकरइ पोत्थयाइणि वा नाए ॥ २६ ॥ तइयपहरस्सते आए पडिलेहणाअवसरम्मि। वन्दिय इच्छाकारेण अम्हि पडिलेहण करिमो ॥ २७ ॥ वंदिय भणई दंडाउछय संदेसहत्ति तो वदे। मुहपोत्ति पढेमो भणिसु तो पोत्तिय पेहे ॥ २८ ॥ तलवत्थरणाईय पेहिय परिहेइ तो नियसणय। पडिलेहिय परिहेई जइ पुण उववासओ होइ ॥ २९ ॥ तो सव्वुवहिपमज्जण अणतर परिहण पमज्जेइ। ठवणगुरु तन्निसेज्ज तप्पट्टाई पमज्जेइ ॥ ३० ॥ कट्ठासण पाउछण पोसहसालाइय पमज्जेइ। लहुयतरो अन्नो वा कज्ज उद्धरइ पेहेइ ॥३१॥ परिठवइ सुद्धठाणे तत्थ य जीवाइ ज विराहियय। दीसइ तपच्छित्त समुदाइयलेस्साए किच्च ॥ ३२ ॥ इरिय पडिक्कमेई एव उच्चारपासवणमाई। भूमीए जइ करई तह हत्थसया जया वाहिं ॥ ३३ ॥ गच्छइ कम्मि कज्जे जलमाई वावि जइ विगिंचेइ। तहिं सव्वत्थवि कज्जे इरिय पडिक्कमइ उवउत्तो ॥ ३४ ॥ तो ठवणगुरु-सयासे पोत्ति पेहेइ संदिसावेइ। अज्झायतो वान्यि सज्झाय करह इय भणइ ॥ ३५ ॥ नवकारपाभिइय तो सज्झाय करइ तोऽभिवंदित्ता। इच्छाकारेणऽम्हे ओवाहिय संदिसावेमो ॥ ३६ ॥ वंदिय उवहिं अम्हहिं पडिलेहिस्सह तो समुवउत्तो। कवलअतक्कप्पाइयाइ वत्थाइ पेहेइ ॥३७॥ पक्खिय सज्झायाई करेइ तो जाइ उचियवेलाए। साहुवसहीएँ वंदिय इरिय पडिकमइ उवउत्तो ॥३८॥ आगमण आलोयइ पोत्तिं पेहित्तु देइ वन्दणय। पच्चक्खाण तो देइ वंदण भणिय विहिणा ओ ॥३९॥ पच्चक्खाण उचिय करेइ अहव काइ उववासी। तो वंदण न देइ पकरेइ नव र सवरण ॥४०॥ तो ते च्चिय वंदणय आलोयण खामणाइ पकरेइ। साहुप्पभिई वंदिय सुणेइ वक्खाणमाईय ॥४१॥ अह नत्थि गुरू अहवा अन्नत्थाणवि न जाइ समहीण। केणवि कज्जवसेण तो नियउवस्सए चेव ॥४२॥ पडिलेहणाएँ अंते जइया पोत्तिं पमज्जिउ पकओ।

सज्झाओ तस्सुवरि वंदणयं पच्चक्खाणं च ॥ ४३ ॥ काऊण तत्थ उवाहिं संदिस्सावेइ तो विहियचित्तो । वत्थाई पडिलेहिय सज्झायं कुणइ उवउत्तो ॥ ४४ ॥ घाडियदुगुद्देसंमि अत्थंते सूरिए गुरुं नमिउं । आवस्सियं भणित्ता पोसहसालाए वच्चेइ ॥ ४५ ॥ इरियं पडिक्कमित्ता अंतो वसहीए वामभागंमि । छत्थंडिलाइं पेहे दाहिणपासेऽवि एवइए ॥ ४६ ॥ तो काइयभूमीयवि छव्वामे दाहिणेवि छप्पेहे । पायं हत्थ-पमाणे दंडाउंछीण पडिलेहे ॥ ४७ ॥ एगो अन्ने चक्खू मेत्तेणं पेहयंति थंडिले । हरियतणाइविसुद्धे तत्तो अत्थंगए सूरे ॥ ४८ ॥ पडि-कमणमंडलीए ठायंती अहक्कमेण सव्वेवि । पडिकमणं देवसियं पक्खंते पक्खियं तहय ॥ ४९ ॥ चीवंदण आयरियाइवंदणं सव्ववयणमुच्चरणं । सामाइयस्स भणणं अइयारत्थं च उस्सग्गो ॥ ५० ॥ चउवीसत्थयवद्धण मुहपोत्ती वंदणं च आलोए । आलोइय उववेसिय सुत्तभणणं च विन्नेयं ॥ ५१ ॥ वंदणयं खामणयं वंदणयं चेव तहय दायव्वं । आयरियाई गाहा सामाइय तिन्नि उस्सग्गा ॥ ५२ ॥ सुयखेत्तदेवयाए उस्सग्गा दुन्नि हुंति नायव्वा । मोहपोत्ती वंदणयं इच्छामो वयणमुच्चरणं ॥ ५३ ॥ तिन्निथुई सक्कथओ छोभं तह वंदणं च दायव्वं । थोत्तं चिय विन्नेयं तिन्नेव य छोभवंदणया ॥५४॥ इति देवसियं पडिकमणं । मुहपोत्ती वंदणयं संबुद्धाखामणं तहाऽऽलोए । वंदण पत्तेयं खामणाणि वंदणय सुत्तं च ॥ ५५ ॥ सुत्तं अभुट्ठाणं उस्सग्गो पुत्ति वंदणं तहय । पज्जंते खामणया तह चउरो छोभवंदणया ॥ ५६ ॥ इति पाक्षिकम् ॥ तत्तो सोहिनिमित्तं दिवसच्चरियस्स पायच्छित्तस्स । उस्सग्गं पकरिय देवसुगुरुगुणवन्नणं काउं ॥ ५७॥ सज्झायं पुव्वंपिव संदिस्सावित्तु जह समाहीए । किच्चा सज्झायं तो वंदिय पोत्तिं पमज्जेइ ॥ ५८ ॥ वंदिय राईसंथारयंमि ठायह नामित्तु राईए । संथारयंमि ठातह तत्तो सक्कत्थयं भणइ ॥ ५९ ॥ संथारभुवं संथारउत्तरावट्टयं च पेहेइ । तो पोत्तियाएँ देहं पमज्जई भणिय निस्सीही ॥ ६० ॥ संथारगंमि निविसइ नवकारं सरिय जह समाहीए । अणुजाणउ मज्झ गुरु इच्चाई भणइ गाहाओ ॥ ६१॥ अणुजाणह मज्झ गुरू बाहुवहाणेण वामपासेणं । कुक्कुडिपायपसारण अतरंतु

पमज्जए भूमि ॥ ६२ ॥ अणुजाणह मज्झ गुरू महासमाहीएँ ठामि सथारं । नवकाराई सुमरिय पसतचित्तो सुविरसामि ॥ ६३ ॥ ता पभणि य नवकार सामाइयदडग समुच्चरइ । चत्तारिमंगल तह जइ मे छउमत्थ गाहाओ ॥ ६४ ॥ खामेमि सव्वजीवे इच्चाई गाहजुयलय पढइ । जइ मे हुज्ज पमाओ इच्चाई पढइ गाहजुग ॥६५॥ नवकारभावियमणो सुहनिद्दाए सुयइ निच्चिंतो । सुत्तविउद्धो धम्मजागरिय झायए हियए ॥ ६६ ॥ सुत्तविउद्धो रित्त सुहुमपयत्थेसु नसइ जहसत्तिं । जाए पभायसमए नवकार भणिय उट्ठेइ ॥ ६७ ॥ पकरिय सरीरचिंत सम्म इरिय पडिक्कमेऊण । कुसुमिणदुसुमिणनिग्घायणत्थमुसुमिणत्थेज्जत्थ ॥ ६८ ॥ राइयअइयारस्स य निसोहणत्थ च कुणइ उस्सग्ग । चउ-दज्जोयपमाण सकारय भणिय सज्झाय ॥ ६९ ॥ पुव्वमिव सदिसावइ सज्झाय करिय उचियवेलाए । राइपडिक्कमणेट्ठाइभत्थगा (सक्कथय) (चउ छोभणगा) उ थुति इमा ॥ ७० ॥ सामाइयस्स करण इरियावहियाइ पुव्वग नेय । उस्सग्गो कुसुमिणे सज्झाओ होइ कायव्वो ॥ ७१ ॥ आयरियाई वदण सव्वस्सुच्चारण च सक्कथओ । उट्ठित्तु गाहभणण तिन्नेव य थुति उस्सग्गा ॥ ७२ ॥ तत्थ पढमो चारित्ते दसण-सुद्धीएँ बीयओ होई । सुयनाणस्सवि तइओ नवर चिंतेइ अइयारे ॥ ७३ ॥ सुहणतगपडिलेहा वदणगालोयण च सुत्त च । अब्भुट्ठाण वदण खामणय वदण नेय ॥ ७४ ॥ आयरियाईगाहातिगस्स उच्चारण च कायव्व । छम्मासिय उस्सग्गो सुहपोत्ती वदण चेव ॥ ७५ ॥ पच्चक्खाण च तहा इच्छामणुसट्ठियवयणमुच्चरण । तिन्निथुई चीवदण पडिक्कमण राइय होइ ॥ ७६ ॥ इति राइय पडिक्कमण ॥ राइयपडिक्कमणे किल पच्चक्खाणाय कुणइ उस्सग । छम्मासिय विचिंतइ तस्स य पाढो इमो सुणह ॥ ७७ ॥ भगवतु महावीरु छम्मास उवासय तपिया कुआ, तुहु जीव छम्मास सकहि ? न सकइ, काइ न सकइ, गुरुनिउगु न वहइ, एकदिवसी ऊणा सकहि ?, गुरुनिओगु न वहइ, तिहि दिवसेहि ऊणा सकहि?, गुरुनिओगु न वहइ, तिहि दिवसेहिं ऊणा सकहि?, गुरुनिओगु न वहइ, चउदु पाच छहि सातहि आठहि नवहि

दसहि एगारहहि वारहहिं तेरहहि चउदहहि पनरहहि सोलहहि सतरहहि अट्ठारहहि इगुणवीसहि वीसहि एकवीसहि वावीसहि त्रेवीसहि चउवीसहि पंचवीसहि छावीसहि सत्तावीसही अट्ठावीसहि एगूणवीसहि सकइ?, भगवंतु महावीरु छम्मास उक्कोसयं तपिथा कउ, तुहुं जीव पांचमास सकहि ?, गुरुनिओगु न वहइं, इत्यादि. यथा छमासु तथा भाणितव्यं। एवंविध परि चउथउ त्रीजउ वीजउ मास भणेवु. ततः भगवंतु महावीरु छम्मास उक्कोसइं तपिथा कउ तुहुं जीव एकमासु सकहि ? गुरुनिओगु न वहइं, एकि दिवसिऊणउ विहिंदिवसेहि त्रिहि दिवसेहिं ऊणउ सकहि ?, गुरुनिओगु न वहइं, चउहु पंचहि छहि सातहि आठहि नवहि दसहि एगारहि वारहि तेरहि चउदहि, वत्रीसइमु सकहि?, गुरुनिओगु न वहइं, त्रीसइमुं अट्ठाविसइमुं छाविसइमुं चउविसइमु वावीसइमु वीसइमु अढारसमु सोलसमु चउदसमु दुवालसमु दसमु अट्ठमु छट्टु चउत्थु आंविलु निविउ पोरसि सकहि ?, जे कांइउं पच्चक्खिस्सइ तहि भणइ जे सकइं इति छम्मासियस्वरूपं ॥ छ ॥

तो वेलाए उचियं जिणगुरुपायाण सुमरणं काउं। अह पंडुरे पभाए जाए पडिलेहणावसरे ॥ ७९ ॥ वंदिय भणेइ संदिसह इच्छकारेण करइ पडिलेहं। पोत्तं (पुव्विं) पोत्तिं पेहइ तलवच्छरणाइ पेहेउं ॥ ८० ॥ परिहइ पेहइ नियंसणंपि परिहेसु पेहए तंपि। ठवणागुरुं पमज्जइ तन्निस्सेज्जाइयं पेहे ॥ ८१ ॥ ठवणगुरुं तो नवकारमाइणा ठवइ सम्मसुवउत्तो। वंदिय पोत्तिं पेहइ वंदित्ता संदिसावेमो ॥ ८२ ॥ ओहि वंदिय ओहिं पडिलेइह तो कमेण वत्थाई। संथाराई पेहइ कट्ठासणमाइयं च तहा ॥८३॥ पोसहसालं तत्तो पमज्जए उद्धरेइ कज्जाइ। लहुयतरो अन्नो वा चक्खुं दाउं परिठवेई ॥८४॥ समुचियभूभागंमि विराहियं कहइ सेससत्थेणं। इरियं पडिक्कमेई करेइ सज्झायमाईयं ॥८५॥ अह उग्गयंमि सूरे समुचियवेलाएँ सूरिवसहीए। वच्चइ पोसहसामाइयाण पारावणट्ठाए ॥ ८६ ॥ सूरिसमीवे गंतुं इरियं पडिकमिय भणइ

आगमण । आलोयतो वंदिय पोसहपारावणे पोत्ति ॥ ८७ ॥ पेहइ वदइ सदिसह इच्छाकारेण पोसह अम्हे । पारावह भणइ गुरू पुणोवि काय-त्रय भद्दा[1] ॥८८॥ वदिय भणेइ पोसहु पारह गुरु भणइ भद्द[1] तुब्भेहिं । नो भो मोत्तव्वो इह आयरोत्ति ते उट्ठिउ भणइ ॥ ८९ ॥ नवकार सो वदिय भूमितले निहिय जाणुकरकमलो । छउमत्थो इवाई वंदिय गाह इम भणइ ॥ ९० ॥ वदणयाई दाउ तो गच्छइ सावओ नियावास । तत्थ य स कीयजोगेहि पकुणइ गिहि गेहकिच्चाइ ॥ ९१ ॥ जो किर अट्ठमिमाइसु सड्ढो अहरत्तपोसह कुणइ । तस्सेसो किर भणिओ दिणकिच्चविही इमो सव्वो ॥ ९२ ॥ सामान्यत पौषधविधि समाप्त ॥ छ ॥ अथ उपधानपौषधे किञ्चिद्विशेषमाह—

जो पुण उवहाणस्स कारणा कुणइ पोसह सड्ढो । किंचि तव्विसए निच्चकिच्चसेस पवक्खामि ॥ १ ॥ तहिं उवहाणतव किर काउ-मणो पूइऊण देवगुरू । सुहलग्गे चदबले सुगुरुसमीवम्मि आगतु ॥ २ ॥ वदिय भणेइ इच्छाकारेण अम्हि काराह भयव[1] । उवहाणतव तो सुहगुरूवि अभिमतिग्ग वासे ॥ ३ ॥ तम्मत्थए खिवेई तो वदिय पडिकमित्तु सो इरिय । गिण्हइ पोसहसामाइयाइ तह तत्थ आसणय ॥४॥ सदिस्सावइ पकरइ सज्झाय तेविय चवीकम्म (नेइय च कीकम्म) । आलोयणाइ पुव्वक्कमेण दाऊण वदणय ॥५॥ तत्तो कट्ठासणय सदिस्सावेइ वदिउ भणइ । कट्ठासणए ठायह वदित्ता पुणरवि भणेइ ॥६॥ पव्वेयण पवेयह इच्छाकारेण सदिसह अम्हे । वदिय असुगुवहाणस्स कए य त उद्दिसावणिय ॥ ७ ॥ असुग तव करेमी एत्थ य वयणाइ जाइ किर भणइ । ताइ गइसरेहिं (सुसेहिं) भणामि मदावबोहत्थ ॥ ८ ॥ (इतस्त्रुटितामिद प्रकरण न च लब्धाऽन्या प्रतिरिति न पूर्णीकृतम्)

अथ श्रीवर्द्धमानकमकमलोपजीविश्रीचक्रेश्वरसूरिविरचित पदार्थस्थापनासग्रहप्रकरणम्, आर्यावृत्तम् ।

धम्माधम्मयरजियपुग्गलदव्वाइ सव्वपज्जाए। पेक्खइ पइक्खणं जो जिणेसरो जयउ सो देवो ॥१॥ पायाले नेरइया सत्तविहा१ दसविहा

भवणवासी २ । अट्ठविह वंतरसुरा ३ भूसुवरिं जंबुदीवाई ॥ २ ॥ अस्संखेज्जा हुंती दीवसमुद्दा४ उ लोगमज्झंमि । जंबू मज्झे मेरू५ उवरिं पंचविह जोइसिया ६ ॥३॥ बारस दिवलोगा७ नव गेवेज्जा ८ पंचऽणुत्तरविमाणा९ । लोगंते सिद्धी१० दस इय ठाणा लोगनालीए ॥४॥ १ । तिरियं चउरो दोसुं छ दोसुं अट्ठ दस य एक्केक्का । बारस दोसुं सोलस दोसुं वीसा य चउसुं च ॥ ५ ॥ पुणरवि सोलस दोसुं बारस दोसुं च हुंति नायव्वा । तिसु दस तिसु अट्ठ य छा य दोसु दोसुं च चत्तारि ॥ ६ ॥ ओयरिय लोयमज्झा चउरो चउरो य सव्वहिं नेया । तिय दुय दुय एक्केक्कगो य जा सत्तमीए उ ॥ ७ ॥ उड्ढं तिन्नि सयाइं चउ अब्भहियाइं खंडुयाणं तु । सोलुत्तरं अट्ठसया अहलोए लोगनालेसा ॥८॥ २ । सुरलोयगेवेज्जाणुत्तरेसु बासट्ठि पत्थडा हुंति । ते मज्झे इंदयवट्टरूवया हुंति बासट्ठी ॥९॥ तेसिं चउद्दिसिंपि व तंसा चउरंसवट्टय-तसाइं । चउ चउ आवलियाओ चउगुण बावट्ठि परिमाणा ॥ १० ॥ नरगपुढवीसु सत्तसु एगुणवन्नास पत्थडा हुंति । तंमज्झे तस्संखा गुणवन्नं पत्थडा हुंति ॥ ११ ॥ तेसिपि चउद्दिसिं अट्ठ अट्ठ हुंतेव आवलीयाओ । चउहि गुणे गुणवन्नं परिमाणा ताओऽवि भवंति ॥ १२ ॥ इगुणवन्नास पत्थड अहम्मि तिरियंमि जंबुदीवत्ति । उवरि बावट्ठि पत्थडजुत्ता गुरुलोगनालेसा ॥१३॥ ३ । वेसाहट्ठाणट्ठियकडित्थकरजुय-लपुरिसआगारं । निक्खुड [कोणकः] जुयपत्थडरहिय लोगनालीएँ ठवियाए ॥ १४ ॥ विग्गहगइमावन्नगजियाण पणसमयविग्गहगईए । पणसमयाए विग्गहगईएँ एसो कमो भणिओ ॥ १५ ॥ विदिसाउ दिसि पढमे बीए पइसरइ लोगमज्झमि । तइए उप्पि नीहरइ चउत्थए पंचमे ठाइ ॥ १६ ॥ ४ । वरभद्दसालतरुजुयनंदणसोमणसपंडगवणेहिं । सतरसहि चेइएहि जुत्तो मेरू हवइ लक्खं ॥ १७ ॥ ५ । न-उयसयं खंडाणं भारहखेत्तप्पमाणमेत्ताणं । जंबुद्दीवो होई सिरि (छहि) गिरिवासेहिं संजुत्तो ॥ १८ ॥ ६ । भरहेरवयाविदेहा पत्तेयं

पन पन मेरू य । तास अकम्मभूमी अड्डाइज्जसु दीवेसु ॥ १९ ॥७। अजणन्हिमुहरइकरगिरिसठियचेइयाइ जहसय । चउ सोलस
पत्तीस नद नमिरि निरन्न ॥ २० ॥ ८। सिरिउसभवद्धमाणयचदाणणवारिसेणनामाओ । चउवीसजिणपमाणा हुती नदीसरे दीवे
॥ २१ ॥ सत्ताणवइ (८५६९७४८१) सहस्सा लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ। चउसय इगसी अन्ने वतरजोइसअसखय वदे ॥ २२ ॥
ग भगिहसुमडपे छणमडययसूभपभिइहिं । ठाणेहिं सजुयाइ इह सासयचेइयाइति ॥ २३ ॥ ९। किण्हयराईमज्झे रिट्ठाविमाण चउदिसिं
दो दो। पन नव लोगतियदेवविमाणा इह नेया ॥२४॥ एव नव लोगतिय मज्झिमअविवक्खणा भणतऽह्न। ज पुण दसलोगतिय देवे विंती
तय तिंत ॥२५॥ १०। पत्तीस घराइ काउ तिरियायर्याहिं रेहाहिं । उड्ढायर्याहि काउ पच घराइ तओ पढमे ॥ २६ ॥ पन्नरस जिण
निरतर सुन्नदुग तिजिण सुन्नतियग च । दो जिण सुन्न जिणिंदो सुन्न जिणो सुन्न दुन्नि जिणा ॥ २७ ॥ दो चक्कि सुन्न तेरस पण चक्की
सुन्न चक्की दो सुन्ना । चक्की सुन दुचक्की सुन्न चक्की दुसुन च ॥ २८ ॥ दससुन्न पच केसव पण सुन्न केस सुन्न केसी य । दो सुन्न केसवोऽ-
विय सुन्नदुग केसय तिसुन्न ॥ २९ ॥ पढमप्पतीएँ जिणा वीयप्पतीय चक्किणो हुति । तइयाएँ वासुदेवा पडिविण्हुकालो य एत्थेव ॥ ३० ॥
तुरियाए देहमाण जिणाण चक्कीण वासुदेवाण । पच्चिसिपि य आउयमाण पचमियपतीए ॥३१॥ चक्की विण्हू केइवि जिणकाले किवि जिणतरेसुवि
य । इय पत्तीसघरेहिं नेयाइ जिणतराइति ॥३२॥११। साहू१ वेमाणित्थी२ साहु [साध्वी]३ तिगुट्ठाइ अग्गिकोणम्मि। भवण४ वण५ जोइदेवी
६ तिगु चिट्ठे नेरइयकोणे ॥३३॥ भवणवणजोइदेवयातिग ७-८-९ तु उववसिइ वायवे कोणे । वेमाणिय१० नर११ नारी१२ तिग तु ईसाणकोणमि
॥३४॥ इय बारस परिसाओ पायारेऽब्भितरम्मि विइयम्मि । तिरिया तइए जाणाणि ठति इय समवसरणम्मि ॥३५॥१२। अवसप्पिणीय अरया

छच्चेव हवंति कालसमयम्मि । सूसमसूसम पढमा बीया सूसमत्ति नायव्वा ॥३६॥ सूसमदुसमा य तइया दूसमसुसमा चउत्थिया भणिया । दुसमा य पंचमी छट्ठिया य तह दुसमदुसमत्ति ॥३७॥ दुसमदुसमाइ अरया ओसप्पिणीएवि छच्च विवरीया । हुंति इय वारसारं कालचक्कं सया वहइ ॥३८॥ १३। आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउप्पया । चित्तासोएसु मासेसु, तिपया हवइ पोरिसी ॥ ३९ ॥ अंगुलं सत्तरत्तेणं, पक्खेणं तु दुरंगुलं । वड्ढए हायए वावि, मासेण चउरंगुलं ॥४०॥ जेट्ठामूले आसाढ सावणे छहि अंगुलेहि पडिलेहा [बहुपडिपुन्नापोरासि] अट्ठहि बीयतियंमि तइए दस अट्ठ य चउत्थे ॥४१॥ १४। नियतणुछायाएँ नवहि उ पएहि पोसंमि पोरिसी सड्ढा । पयएक्केक्का हाणी जावासाढे पया तिन्नि ॥४२॥ अड्ढाइयदिवसेहिं पडई चडई य अंगुलं एक्कं । आसाढाओ पोसो पोसाओ जाव आसाढो॥ ४२ ॥ १५। करणाइं तिन्नि जोगा मणवइकाया उ करणसन्नत्ति । आहाराई सन्ना सोत्ताइं इंदिया पंच ॥४४॥ पुढवी आऊ तेऊ वाउ वणस्सइ तहा य वेइंदी । तेइंदी चउरिंदी पांचिंदी अजीवदसमाओ ॥४५॥ खंती मद्दव अज्जव मुत्ती तव संजमे य बोधव्वे। सच्चं सोयं आकिंचणं च बंभं च जइधम्मो ॥४६॥ एसो सीलंगरहो पंचनमोक्कारसारहिनिउत्तो । नाणतुरंगमजुत्तो नेइ परं परमनेव्वाणं ॥ ४७ ॥ १६। भावा छच्चोवसमियखइया खओवसमियउदयपरिणामा । दुनवट्ठारिगवीसातिगभेया सन्निवाओ य ॥ ४८ ॥ उदइयखओवसमियपरिणामेहिं चउरो गइचउक्के । खइयजुएहिं चउरो तदभावे उवसमजुएहिं ॥ ४९ ॥ एक्केक्को उवसमसेढिसिद्धकेवलिसुं एयमविरुद्धा । पन्नरस सन्निवाइयभेया वीसं असंभविणो ॥ ५० ॥ दुगजोगो सिद्धाणं केवलिसंसारियाण तिगजोगो । चउजोगजुयं चउसुवि गईसु मणुयाण पणजोगो ॥५१॥ इगदुगतिगसंजोगे चउसंजोगे य पंचसंजोगे। सव्वेवि य अडसट्ठी भावा जंताउ नेयव्वा॥५२॥१७। तिसु एग अट्ठपाओ तियद्धनाहिय चउत्थभागो य। चउजुयले

चउभागो दुयद्धलक्खे सहस्सद्ध ॥ ५३ ॥ ससिसूरगहनक्खत्ततार पचविहजोइससुराण । तद्देवीण य जेट्ठ आउ पढमदुपतीसु ॥ ५४ ॥
तह तइयचउत्थियपतियासु तेसिंपि देवदेवीण । आउ जहन्न नेय तिसु एगिचाएँ गाहाए ॥५५॥१८। अणदसनपुसित्थी वेय छक्क च पुरिसवेय
च । दो दो एगतरिए सरिसे सरिस उवसमेइ ॥ ५६ ॥१९। अणमिच्छमीससम्म अट्ठ नपुसित्थिवेयछक्क च । पुमवेय च खवेई कोहाईए य
सजलणे ॥ ५७ ॥२०। एगिंदियपचविहा पत्तेय सुहुमबायरा नेया । बायर दिट्ठीगम्मा सुहुमा पुण सव्वलोयम्मि ॥ ५८ ॥ केवलिगम्मा तत्थ
य धणस्सई बायरा दुविहभेया । पत्तेया य अणता सुहुमा पुणऽणतया चेव ॥ ५९ ॥ इगभेया अस्सववहारयसन्ना (असव्यवहारराशि)
उ ते विणिद्दिट्ठा । तेवि य गोलनिगोया हुती सुत्ते जओ भणिय ॥६०॥ गोला य असखेज्जा असखनिग्गोय गोलओ भणिओ । एक्केक्कमि
निगोए अणतजीवा मुणेयव्वा ॥ ६१ ॥ गोलनिगोयट्ठवणा पन्नत्तीओ विसेसओ नेया । भजलतेऊपवणा चउविह सुहुमा तहावऽन्ने ॥ ६२ ॥
पुव्वुत्तबायरा पणविहा उ सव्वेऽवि नवविहा एए । सववहारियसत्ता निद्दिट्ठा समयकेऊहिं ॥ ६३ ॥ २१ । अविभागपलिच्छेययवग्गण-
फड्डेहिं (स्पर्धक.) णतगुणिएहिं । एग सजमठाण अणतचारित्तपज्जाय ॥ ६४ ॥ सजमठाणेहिं असखएहिं इह भवइ कडग (कडक) एग ।
अस्सखकडगेहिं जायइ छट्ठाणग एग ॥ ६५ ॥ छट्ठाणएहिं अस्सखएहिं इह होइ सजमस्सेढी । एत्थ य कडगठवणा बिदुगबितिचउर-
पणगेहिं ॥ ६६ ॥ किज्जइ तत्थ उ सुन्नाण हुति सड्ढा उ बारस सहस्सा । पणवीस सया एक्काण हुति सयपच य दुगाण
॥ ६७ ॥ सयमेग च तिगाण विसई चउगा उ पचगा चउक्क । सव्वकमीलणम्मी एग छट्ठाणग होइ ॥ ६८ ॥ २२ ।
गठित्ति सुदुब्भओ कक्खड (कर्कश) दढरूढगूढगठिव्व । जीवस्स कम्मजणिओ घणरागद्दोसपरिणामो ॥ ६९ ॥ ठिइकडगाण

उवरि वहुइ सहस्सा अइच्छिया जाहे । संखेज्जइमे भागे सेसे आनियाट्टिअद्धाए॥ ७० ॥ आढवइ (आरभते) अंतरं सो अंतमुहुत्तं तु हेट्ठ उवरी य। तं पढमट्ठिइ जाणसु आईए मिच्छदलियस्स॥ ७१ ॥ अंतमुहुत्ता उवरिं किंचूणमुहुत्तगेण सरिसाओ। ठिईओ उक्किरइ तमंतरं भाणियं॥७२॥ गंठिभेयस्सरूवं भूमीए ठाविउं अहपवत्तं। अहवाऽनियट्टिअंतरकरणाईयं मुणेयव्वं॥ ७३ ॥२३। मिच्छत्तस्स गाईयाणं अट्ठावीसाए एत्थ ठाणाणं। अडवीस पंतियाहि विन्नेया अंकठवणाओ॥ ७४ ॥ अडवीसठाण उवरिं चउनउयं एत्थ होइ ठाणसयं। पुव्वंसुन्नाणं चालसएण अंकचउप्पन्नगणणाए॥७५॥२४। संखेज्जमसंखेज्जं अणंतयं तिविहमेत्थ संखाणं। संखेज्जं पुण तिविहं जहन्नयं मज्झिमुक्कोसं॥७६॥ अस्संखेज्जं नवहा अणंतयं नवविहं तु पंतीहिं। इगवीसाहिं इगवीसठाणगा इह ठवेयव्वा॥७७॥२५। अणावायमसंलोए,(जीवोत्पत्तिर्यत्र न स्थाने) परस्सणुवघाइए। समे अज्झुसिरे यावि, अचिरकालकयम्मि य॥७८॥ विच्छिन्ने दूरमोगाढे,नासन्ने विलवज्जिए। तसपाणवीयरहिए,उच्चाराईणि वोसिरे॥ ७९ ॥ दस पणयाला वीसं सयं च दुन्नि य दसुत्तरा चेव। दुन्नि सया बावन्ना दसुत्तरा दुन्नि य सया य॥८७॥ वीससयं पणयाला दसं च इक्को य भंगया सव्वे। सहसो तेवीसहिओ इगखेवे राहसु चउवीसो॥ ८१ ॥ उभयमुहं रासिदुगं हेट्ठिल्लाणंतरेण भय पढमं। लद्धहरासिविहत्ते तस्सुवरिगुणं तु संजोगो॥ ८२ ॥पयसमदुगमब्भासो माणं भंगाण एसमह रयणा। एगंतरियं लहुगुरु दुगुणा दुगुणा य वामासु॥८३॥ २६। अरिहंताई पंचप्पयाण उवरिं तु आणुव्वीणं। वीससयं तस्सकुखियपंतीहि इह ठवेयव्वं॥८४॥ पुव्वाणुपुव्वि हेट्ठा समयाभेएण कुरु जहाजेट्ठं। उवरिमतुल्लं पुरओ नसेज्ज पुव्वक्कमो सेसे॥ ८५ ॥ जम्मी किर पक्खित्ते पुणरावि सो चेव अंकविन्नासो। सो होइ समयभओ वज्जेयव्वो पयत्तेण॥८६॥२७। दुविहतिविहा य छच्चेव भंगया तह य हुंति तिन्नेव। तिन्नि दुगा इच्चाई नव चेव य भंगया हुंति॥८७॥

छभंगियाण उवरिं इगवीस भंगया मुणेयव्वा। नवभंगियाएँ उवरिं एगुणवन्नास भंगाओ ॥८८॥ एगाई एगुत्तरपत्तेयपयम्मि उवरि पक्खेवो। एकेक्कहाणिअवसाणभंगया हुंति नायव्वा ॥८९॥ अहवा पयाणि ठविउ अक्खे घेत्तूण चारण कुज्जा। इगदुग तिगसंजोगो भंगाण सव्व नायव्वा ॥९०॥ छब्भंगी नवभंगी इगवीस इगुणवन्नभंगीहिं। वयउवरिं पत्तेयं देउलिया बारस हवंति ॥९१॥२८। तेरसपएसियं खलु तावइएसु भवे पएसेसु। जं दव्वं ओगाढं जहन्नगं तं दसदिसागं ॥९२॥ तेरसपएसियं इह जंतं भूमीगं ठावइत्ताणं। जहनावगाहदव्वं विनेयं निउणबुद्धीहिं॥९३॥२९। अट्ठपएसा रुयगो तिरियं लोगस्स मज्झयारम्मि। एस पभवो दिसाणं एसेव भवे अणुदिसाणं ॥९४॥ दुपएसाइ दुरुत्तर एगपएसा अणुत्तरा चेव। चउरो चउरो य दिसा चउराइ अणुत्तरा हुंति॥ ९५ ॥ सगडुद्धिसंठियाओ महादिसाओ हवंति चत्तारि। मुत्तावली य चउरो दो चेव य हुंति रुयगनिभा ॥९६॥ इदग्गेई जंमा य नेरई वारुणी य वोधव्वा। सोमा ईसाणावि य विमला य तमा य बोद्धव्वा॥९७॥३०। उज्जुय गंतु पच्चागई य गोमुत्तिया पयंगविही (पतंगसदृशा)। पेडा य अद्धपेडा (अर्धपेटक) अब्भिंतर बाहि संबुक्का (कंबुक)॥९८॥ एएसिं अट्ठण्हवि गोयरभूमीण नियनियसरूवं। भूमीएँ ठवेऊण भावेयव्वं सइ बुहेहिं॥९९॥३१। परिमंडले य वट्टे तंसे चउरंसे आयए चेव। पंचेए संठाणा अज्जीवाण मुणेयव्वा॥१००॥३२। उसभाइजिणाणं पंच पंच कल्लाणगाइं ताणं तु। मिलियाण वीससयं तेसिं पुण वरिसमज्झंमि ॥१०१॥ चउरासीई एगासणाइं निवियाइं तेरस हवंति। दो आंबिलाइं एगो उववासो ठावणाउ पदे ॥१०२॥३३। गयवसहसीहअभिसेय दाम ससि दिणयर झय कुंभ। पउमसर सागर विमाणभवणं रयणुच्चय सिहिं च॥१०३॥३४। दप्पण भद्दासण वद्धमाण (शरावक) वरकलस मच्छ सिरिवच्छा। सत्थिय नंदावत्ता भणिया अट्ठट्ठ मंगलया॥१०४॥३५। बत्तीसलक्खणधरं समचउरंसं लिहित्तु जिणपडिमं। तप्पा-

सेसुं ठवेज्जा अट्ठ वरपाडिहाराइं ॥१०५॥ कंकेल्लि (अशोकवृक्षः) कुसुमवुट्ठी दिव्वझुणि चामरासणाइं च । भावलय भेरि छत्तं इय अट्ठ उ पाडिहेराइं ॥१०६॥३६। जीवा जीवट्ठाणा गुणमग्गणठाणगा उ पत्तेयं। चउदस जोगप्पभिई छयासियाओ मुणेयव्वा ॥१०७॥३७। बंधे वीसुत्तरसयं बावीससयं तु होइ उदयम्मी। उदीरणावि एवं अडयालसयं तु संतम्मि ॥१०८॥ बंधोदयदीरण संत जंतचउगं च अट्ठकम्माणं। संचारणस्स सव्वं कम्मथवपडाउ विन्नेयं ॥१०९॥३८-३९-४०-४१। कणगावलिरयणावलि तह मुत्तावली य गुणरयणो । जवमज्झो वज्जमज्झो लहु गुरुओ सव्वओ भद्दं ॥११०॥ तह गुरु लहु भद्दोत्तर तवोत्ति इच्चाइ तवविसेसाण। ठवणाओ सिद्धंता बुहेहि सम्मं मुणेयव्वा ॥१११॥५०।लोगनालीण चउगं४ मेरू ५ जंबू ६ य माणुसं खेत्तं७। नंदीसर८ सासयचेइयाइं९ तह किण्हराई१० य ॥११२॥ जिणअन्तर ११ ओसरण १२ कालचक्कं १३ च पहरचक्क च १४। सड्ढपहरस्स चक्क १५ सीलंगरहो १६ य तह भावा १७ ॥ ११३ ॥ जोइसियाणं आउं १८ उवसमसेढी य खवगसेढी २० य। गोला २१ फड्डगरूवं २२ गंठिभेयस्सरूवं च २३ ॥ ११४ ॥ पुव्वंगाइं २४ पल्लय (संखेज्ज) २५ परूवणा शंडिला २६-णुपुव्वि २७ वया २८। तेरसपएसिय २९ अडपएसियं ३० गोयरवणी (गई) य ३१ ॥ ११५ ॥ संठाणाई ३२ कल्लाणगाइ ३३ सुमिणाइ ३४ मंगलाइं च ३५। पाडिहेर ३६ छयासिय ३७ कम्मत्थयठावणं ४२ चेव ॥ ११६ ॥ कणगावलि ४३ रयणावली ४४ तहेव मुत्तावली४५ य गुणरयणो४६। जवमज्झ४७ वज्जमज्झो४८ तह लहु गुरु सव्वओ भद्दो४९ ॥११७॥ तह गुरु लहुओ भद्दोत्तरोत्ति ५० एवं पयत्थठवणाओ। सव्वाओवि पन्नास भणियाओ पयत्थसंगहणे ॥ ११८ ॥ एयं पयत्थठावणसंगहअभिहाण पगरणं रम्मं । सिद्धंताओ सिरिमं क्केसरसूरिणा लिहियं ॥ ११९ ॥ इति श्रीवर्द्धमानक्रमक्रमलोपजीविश्रीचक्रेश्वरसूरिविरचितं पदार्थस्थापनासंग्रहाख्यं प्रकरणम् समाप्तम् ॥

॥ ७

॥ अथ सूक्ष्मार्थसत्तरीप्रकरणप्रारम्भः ॥ आर्यावृत्तम् ॥

सिद्धो बुद्धो अमलो रम्मो सोमो सिवो गुरु तरणो । अयउ सिरिरिसहजिणो अणाइनिहणो चिर जयउ ॥१॥ कृत्वाऽन्त्यपदस्य कृतिं शेषपदे द्विगमन्त्यमभिहन्यात् । उत्सायात्मार्थं पदान्त्रेय चोत्सारयेत् कृतये ॥ २ ॥ सदृशद्विराशिघातो रूपादिद्विचयपदसमासेनी । प्राहा नयुतवधो वा(?) तन्मिवर्गान्तितो वग ॥ ३ ॥ वर्गोदाहरणानि—१।२।३। ४। ५। ६। ७। ८। ९।

१।२।३। ४। ५। ६। ७। ८। ९।

एषां क्रमेणागत—१।४।९।१६।२५।३६।४९।६४।८१।

तथा—२। ४। १६। २५६ । ६५५३६।

२। ४। १६। २५६ । ६५५३६।

एषां क्रमेणागतानि—४।१६।२५६।६५५३६।४२९४९६७२९६

इत्या दयादि वर्गोदाहरणानि ज्ञातव्यानि, वग समाप्त ८। विषमात्पदतस्त्यक्त्वा वर्गस्थानच्युतेन मूलेन। द्विगुणेन भजेच्छेष लब्ध विनिवेशयेत्पंक्त्या ॥४॥ तद्वर्गं संशोध्य द्विगुणीकुर्वीत पूर्ववल्ल ब्धम । उत्सार्य ततो विभजेच्छेष द्विगुणीकृत दल या ॥ ५ ॥ वगमूलतदुदाहरणानि १।४।९।१६।२५।३६।४९।६४।८१।एषां क्रमेणागतानि—१।२।३।४।५ ६।७।८।९।

४।१६।२५६।६५५३६।४२९४९६७२९६।

अत्रागत—२।४ । १६ । २५६ । ६५५३६।

इत्याद्यनेकानि वर्गमूलोदाहरणानि द्रष्टव्यानि२ ॥छ॥वर्गमूलं समाप्तम् । विक्खंभवग्गदहगुणकरणी वट्टस्स परिरओ होइ । विक्खंभपायगुणिओ परीरओ तस्स गणियपयं ॥६॥ परिही तिलक्ख सोलस य सहस्स दो य सय सत्तवीसहिया । कोसातियं धणुहसयं अडवीस तेरंगुलद्धहियं ॥७॥ परिधिः ।· सत्तेव य कोडिसया नउया छप्पन्न सयसहस्साइं । चउणउयं च सहस्सा सयं दिवड्ढं च साहीयं ॥८॥गाउयमेगं पन्नरस धणु सया तह धणूणि पन्नरस । सट्ठिं च अंगुलाइं जंबुदीवस्स गणियपयं ॥९॥ गणितपदम् । एगा जोयणकोडी (अढीद्वीपनी परिधिः१४२३०२४८ योजन) लक्खा वायाल तीसइसहस्सा । समयक्खेत्तपरिरओ दो चेव सया अउणपन्ना ॥१०॥ सोलस (अढीद्वीपनुं गणितपद) कोडीलक्खा नवकोडिसया तिकोडि लक्खेगं । पणवीससहस्साइं गणियपयं समयखेत्तस्स ॥११॥ पणयालीसं लक्खा सीमंतय माणुसं उड्डु सिवं च । अपइट्ठाणो सव्वट्ठ सिद्धि जंबूदीवो लक्खं ॥१२॥ रयणमओ मेरुगिरी जोयणसहसं च भूमिगो होइ । नवनउईउव्विद्धो नाभिसमो सव्वलोयस्स ॥१३॥ मेरु मूले दसिगार सभागा नउया य जोयणसहस्सा । दस एसो विक्खंभो परिही पुण जोयणसहस्सा ॥ १४ ॥ इगतीसं नव सय दसहिया य तिन्नि य इगारसी भागा । भूविक्खंभो दससहस्स परिही इगतीस सहसाओ ॥१५॥ छसयतेवीसहिया सहसं पुण होइ उवरि विक्खंभो । परिही बावठ्ठसयं तिन्नेव य जोयणसहस्सा ॥ १६ ॥ तेवठ्ठं कोडिसयं चउरासीयं च सयसहस्साइं । नंदीसरस्स एसो विक्खंभो चक्कवालेण ॥ १७ ॥ एत्थ य जंबूदीवो लक्खं दो लक्ख लावणसमुद्दो । एवं दुगुणा दुगुणी कायव्वा जाव पन्नरसो ॥ १८ ॥ नंदीसरवरदीवो एव पमाणाण दीवउदहीणं । पच्छिमपुरिमंताणं विशाले एस विक्खंभो ॥ १९ ॥ छक्कोडिसया पणवन्नकोडि तेत्तीसलक्खपरिमाणं । इय विक्खंभा परिही गणियपयं निय गणेयव्वं ॥ २० ॥ जो ६५५३३००००० दोन्नि उ कोडिसहस्सा बावत्तरि कोडिलक्ख तेत्तीसं । चउप्पन्न सहस्साइं नउयसयं गाउयं एगं ॥ २१ ॥ धणुहसहस्सं इगवन्नसमहियं अंगुलाइं पन्नासं । एगो य जवो परिही नंदीसर

अतिगा गमा ॥ २२ ॥ जो० २०७२३३५४१९० गा० ६ ध० १०५१ अ० ५० ज० १ कोडाकोडी लक्खा तिन्नि उ तह कोडीकोडी सहस्साओ। एगुणत्तीसा पर उ कोडाकोडी सया हुंति ॥ २३ ॥ कोडाकोडी पन्नरस एगुणनवईउ कोडि लक्खाओ। कोडिसहस्सा पणवीस हुंति कोडी सया तिन्नि ॥ २४ ॥ पणणवई कोडी छावट्ठी लक्खा सहस्स तिगसयरी। पणवीससय गाउयमग धणुहाण पर सया ॥ २५ ॥ छप्पन्नहियाइ तो अंगुलाइ एगूणतन्न गणियपय। जंबूमुहुत्तीवाण नईसरअतिमाणेय ॥ २६ ॥ जो ३३९६८५८९२५३९५६६७३१२५ गो० १ ध० १०६ अ ४९। सार॥ जोयणमयदीहाइ पन्नाम वित्थडाइ रम्माइ। नायत्तरूसियाइ तहि चेइहराइ चावन्न ॥ २७ ॥ मणुआण जहन्नपए एगुणतीस हवंति ठाणाइ। तहिय पढमवग्गो गुणिज्जए छट्ठवग्गेण ॥ २८ ॥ छन्नउई चाराओ अहव गुणिज्जइ दुगो उ तो तत्थ। गुणतीसठाणगस्स हवंति मणुया जहन्नेण ॥ २९ ॥ दुग अको दुगुणिज्जइ चारा छन्नवइ तत्थ दुइयमि। रासिम्मि पढमवग्गो पडरूवो होइ नायव्वो ॥ ३० ॥ रासिम्मि चउत्थम्मि वग्गो सोलस य बीयओ होइ। अह रासीए तइओ वग्गो छप्पन्न तह दुसया ॥ ३१ ॥ पणसट्ठि सहस्स पणसय छत्तीसा सोलसम्मि रासिम्मि। तुरिओ वग्गो बत्तीसमम्मि रासिंमि पणवग्गो ॥३२॥ तत्थ य अंका एगाहिणहुता चउ दु नव नउ नव छ सत्त। दुग नव छग इय रूवा इय अंको पचमे वग्गे ॥३३॥ तह चउसट्ठिमरासीए छट्ठवग्गो उ होइ नायव्वो। तत्थ य अंका एगाहिणहुताओ कमेणिमे हुंति ॥३४॥ इग अट्ठ चउ चउ छग सत्त य चउ चउर सुन्न सत्तेव। तिग सत्त सुन्न नव पच पच इग छन्च इग छन्च ॥३५॥ एसो छट्ठो वग्गो गुणियइ पणण पचमो वग्गो। तत्थुप्पन्ना अंका गुणतीस ते य रासिम्मि ॥३६॥ छन्नवइयमि नेया एगाहिणहुत्ता कमगिमे सुणह। सत्त नव दुन्नि दुन्नि य अड इग छग दुन्नि पचेव ॥३७॥ इग चउर दुन्नि छन्च य चउ तिय सत्त पच नव तिन्नि। पर नउ तिन्नि तर पर सुन्न तिय तिन्नि छन्चेव ॥३८॥ एयाइ जहन्नपए समयकुखेत्तम्मि माणुसाइ धुव। सव्वजियाण मज्झे

जिगेहि थोवाइं भणियाइं ॥३९॥ समयक्खेत्ता बाहिं मणुयाणं नत्थि मरणउप्पत्ती। नेवऽत्थि वायरग्गी नेव य समयाइकालोऽवि ॥४०॥ नीरोगिजोव्वणत्थस्स, पमंतस्स सरीरिणो । नीसासुस्सासए एगे, पाणुओ एस भन्नए ॥४१॥ थोवे य सत्त पाणूहिं, लवेण सत्त थोवए । मुहुत्ते सत्तहत्तरीए, लवाणं जिणदेसिए ॥४२॥ मुहुत्तेऽणंतनाणीहिं, ऊसासाणं वियाहिया । तिसत्तरी सया सत्त, तहा य सहसत्तियं ॥४३॥ अहरत्ते ऊसासा लक्खो तेरस सहस्स नउय सयं । मासे लक्खा तेत्तीस सहस पणनवइ सया सत्त ॥४४॥ चत्तारि सया अडयाल सहस सत्तेव तहय लक्खा य । चत्तारि य किल कोडी ऊसासा हुंति वरिसम्मि ॥४५॥ कोडिसयाइं चउरो सत्त उ कोडीउ लक्ख अडयाला । सहस्सावि य चालीसं वाससए हुंति ऊसासा ॥४६॥ घडियाणं इगवीसं लक्खा सहसा य सट्ठि बोद्धव्वा । दो लक्खा पहराणं सहसट्ठासीइ वाससए ॥४७॥ वाससयआउयाणं छत्तीससहस्स होइ परिमाणं । अह समयावलियाई विसेसओ भन्नए कालो ॥४८॥ समयावलियमुहुत्ता दिवस अहोरत्त पक्ख मासा य । संवच्छरजुगपलिया सागर ओसप्पिपरियट्टा ॥ ४९ ॥ तह वाससयसहस्सं चुलसीइगुणं हवेज्ज पुव्वंगं । पुव्वंगं पुव्वंगेण ताडियं होइ किर पुव्वं ॥५०॥ पुव्वस्स उ परिमाणं सयरिं खलु हुंति कोडिलक्खाओ । छप्पन्नं च सहस्सा बोद्धव्वा वासकोडीणं ॥५१॥ पुव्वंपि य चउरासीलक्खेहिं गुणं हविज्ज नउयंगं । एवं नउयप्पभिइसु अट्ठावीससुवि ठाणेसु ॥५२॥ चउरासीलक्खेहिं गुणकारो तोंऽतिमे हवइ ठाणे । चालसयं सुन्नाणं अंका य हवंति छप्पन्ना ॥५३॥ पुव्वनउयप्पभिई य चउदस नामा उ अंगसंजुत्ता । अट्ठावीसं ठाणा चउनउयं होइ ठाणसयं ॥ ५४ ॥ पुव्वंगं पुव्वंपि य नउयंगं चेव होइ नउयं च । नलिणंगंपिय नलिणं महानलिणंगं महानलिणं ॥५५॥ पउमं कमलं कुमुयं तुडियं अडडं च अववं हुहुयं च । अन्नं च अउय पउयं तह सीसपहेलिया चेव ॥५६॥ खुड्डभवा साहिया सत्तरस हवति एगपाणुंमि । पाणू एगमुहुत्ते तिसत्तरी सत्ततीस सया ॥५७॥ पणसट्ठिसहस्सपणसय छत्तीसा इगमुहुत्ति खुड्डभवा । दो य सया

छप्पन्ना अवलिया एगखुड्डभवे ॥५८॥ एगमुहुत्तनखुड्डभवरासीण इगमुहुत्तपाणूण । सतण रासिणा अवहियम्मि भागमि सत्तरस ॥५९॥ हुति भवग्गहणाइ उवरि तेरमनया उ पणनउया । असाण तेवि तगया तिसयर सगतीस सयगाण ॥६०॥ एगमुहुत्तगपुग्गलभवकरासिम्मि ताडणम्मि कए । इगपुग्गलभवसतियआवलियारासिणो हुति ॥६१॥ सोलुत्तर दुन्नि सया सत्तत्तरि सहस लक्ख सगसट्ठी । एगा कोडी भणिया आवलियाण मुहुत्तमि ॥६२॥ सखेज्जमसखेज्ज अणतय तिविहमित्थ सखाण । सखेज्ज पुण तिविह जहन्नय मज्झिमुक्कोस ॥६३॥ तिविहमसखेज्ज पुण परित्तजुत्ता असखयासख । एक्केक्क पुण तिविह जहन्नय मज्झिमुक्कोस ॥ ६४ ॥ तिविहमणतपि तहा परित्तजुत्तअणतयाणत । एक्केक्क पुण तिविह जहन्नय मज्झिमुक्कोस ॥६५॥ एव तिभेयभिन्न सखेज्ज एत्थ होइ नायव्व । असखेज्ज नवहा नवभेयमणतयपि तहा ॥६६॥ एगत्थ मीलियम्मी इगवीस एत्थ हुति ठाणाइ । एएसिं वक्खाण जीवसमासस्स वित्तीओ ॥६७॥ अहवा दिवढसयाउ अहवा सिरिचक्कसूरिरइयाओ । सिद्धतुद्धारभिहाणपगरणाओ मुणेयव्व ॥ ६८ ॥ दव्वे खेत्ते काले भावे चउह दुह बायरो सुहुमो । होइ अणतुस्सप्पिणिपरिमाणो पोग्गलपरट्टो ॥६९॥ चउरगुरुगवज्जपाणत्तणेण परिणमिय मुयइ सव्वअणू । एगजिओ भवभमिरो जत्तियकालेण सो थूलो ॥७०॥ सत्तण्हऽन्नयरेण उ इयकुमणे सुहुमदव्वपरियट्टो । अन्ने चउतणुकमउक्कमेण त विति दुविहपि ॥७१॥ लोगपएसोसप्पिणिसमया अणुभागबधठाणा य । पुट्ठा मरणेण जया कमुक्कमो बायरोत्ति तया ॥७२॥ पुट्ठाणतरमरणेण पुणो जया ते तया हवइ सुहुमो । पोग्गलपरियट्टो खेत्तकालभावेहि इय नेओ ॥७३॥ पोग्गलपरियट्टो इह अट्ठविहो जइवि वन्निओ तहवि । अविसेसियसरूवो उ दव्वओ बायरो नेज्जो ॥ ७४॥ विक्कमओ पणपन्नकहसरसवरिसमि चक्कसूरीहिं । सावयराहडवयणा लिहिया सुहुमत्थसत्तरिया ॥७५॥ इतिसूक्ष्मार्थसत्तरिणाम प्रकरण समाप्तमिति ॥ छ ॥ श्रीवर्द्धमानसूरिपादपद्मोपजीविन कृतिरिय श्रीमच्चक्रेश्वरसूरे ॥ छ ॥

अथ चरणकरणमूलोत्तरगुणप्रकरणम् । आर्यावृत्तम् ।

वंदिय तिजयररत्ने गुरुणो वरचरणकरणसंपत्ते । चरणकरणाइविसए किंचि वियारं पवक्खामि ॥१॥ वय ५ समणधम्म १० संजम १७-वेयावच्चं च १० बंभगुत्तीओ ९ । नाणाइतियं ३ तव १२ कोहनिग्गहाई ४ चरणमेयं ॥२॥ वयमाईणऽट्ठण्हं ठाणाण जहक्कमेणिमे अंका । पण दस सतरस दसनव तिग बारस चउर संखाओ ॥३॥ पाणाइवाय तह मुसावाया य अदिन्न मेहुणे चेव । सव्वं परिग्गहं चिय इय पंच वयाइं नेयाइं ॥४॥ खंती य मद्दवऽज्जव मुत्ती तव संजमे य बोद्धव्वो । सच्चं सोयं आकिंचणं च बंभं च जइधम्मो ॥५॥ पुढवि दग अगणि मारुय वणप्फइ बितिचउ पणिंदि अज्जीवे । पेहोप्पेह पमज्जण परिठवण मणोवईकाए ॥६॥ संजमठाणा सत्तरस पायं सुगमा तहावि किर पेहा । एसा वुच्चइ सीसं जं चोयइ संजमाईसुं ॥ ७ ॥ उप्पेहा अस्संजमवावारेसुं निवारई जंतु । सेसा संजमठाणा सुयाउ विउसेहि नायव्वा ॥ ८ ॥ दसविहवेयावच्चं सूरिउवज्झायथेरसाहूसु । बालगिलाणसधम्मियकुलगणसंघाण विसयंमि ॥ ९ ॥ वसहिकहनिसेज्जिंदियकुड्डंतरपुव्वकीलियपणीए । अइमायाहार विभूसणा य नव बंभगुत्तीओ ॥ १० ॥ नाणाइतियं भणियं नाणं तह दंसणं चारित्तं च । रयणत्तयमेय वन्नियं तु मोक्खस्स मग्गो उ ॥ ११ ॥ अणसणमूणोरिया वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ । कायकिलेसो संलीणया य वज्झो तवो होइ ॥ १२ ॥ पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ । झाणं उस्सग्गोऽवि य अब्भिंतरओ तवो होइ ॥ १३ ॥ कोहोवलक्खणाओ कसायचउगस्स दुक्खमूलस्स । सोलसभेयाविभिन्नस्स निग्गहो चरणमूलं तु ॥ १४ ॥ एवं वयमाईणं अट्ठट्ठाणाण विवरणंकेसु । एगत्थ मीलिएसु चरणं सत्तरिविहं होइ ॥१५॥ पिंडविसोही समिई ५ भावण १२ पडिमा १२ य इंदिय ५ निरोहो । पडिलेहण २५ गुत्तीओ ३ अभिग्गहा ४ चेव करणं तु ॥ १६ ॥ पिंडविसोहिप्पभिईण अट्ठट्ठाणाण जहक्कमेणं तु । चउ पंच बार बारस पण पणवीसा तिय

चउक ॥ १७ ॥ उग्गमदोसुप्पायणदोसा तह एसणाएँ दोसा उ । मडलिदोसा एव पिंडविसोही भवे चउहा ॥१८॥ सोलस उग्गमदोसा सोलस उप्पायणाएँ दोसा उ । दस एसणाएँ दोसा मडलिदोसा उ पंचेव ॥१९॥ इरिसमिइ भाससमिई एसणसमिई तहोवगरणम्मि । गहणट्ठावणसमिई परिट्ठावणसमिइ पचमिया ॥ २० ॥ पढममणिच्चमसरणय ससारो एगया य अन्नत्त । असुइत्त आसव सवरो य तह निज्जरा नवमी ॥ २१ ॥ लोगसहावो बोहीएँ दुलहो धम्मसाहओ अरहा । एयाओ सइ बारस जएण भावणीयाओ ॥ २२ ॥ मासाई सत्तता पढमा वियतइय सत्तराइदिणा । अहराइ एगराई भिक्खूपडिमाण बारसग ॥ २३ ॥ फरिसण रसण घाण चक्खू सोत्ता य इन्दिया पच । तन्निग्गहो निणेहि भणिओ करणस्स मज्झम्मि ॥ २४ ॥ देहपडिग्गहकबलवत्थाईय जया उ पडिलेहे । तइया ठाणा पडिलेहणाएँ पणवीसई हुति ॥ २५ ॥ नइविहु तणुपत्ताइसु वत्थाइसु अनहेव पणवीसा । समयपसिद्धा तहविहु गेज्झा एकेन पणवीसा ॥ २६ ॥ सुविसुद्धमणोवइतणुजोगा गुत्तीतिग इम होइ । दव्वे खेत्ते काले भावे य अभिग्गहा चउरो ॥ २७ ॥ पिंडस्स जा विसोही ४२ समिईओ ५ भावणा १२ तवो १२ दुविहो । पडिमा १२ अभिग्गहावि ४ य उत्तरगुणमो वियाणाहि ॥ २८ ॥ पिंडविसोहिप्पभिई अट्ठट्ठाणाण अक्कमत्ताए । एगत्थ मीलियाण करण सत्तरिविह होइ ॥ २९ ॥ चरण करण दुविहपि होइ सत्तरसभेयसभिन्न । अहवा चरण करण पत्तेय सत्तरिविह तु ॥ ३० ॥ वयसमणाई अट्ठ उ पिंडविसोहियमाइ अट्ठेव । ननरभिह सपयाया वयसमणाईयगाहाए ॥ ३१ ॥ वेयावच्च च इहप्पयम्मि चसद्दयाउ सज्झाओ । नवमो इय सजोगो सत्तरसहा चरणकरणाइ ॥ ३२ ॥ चरण करण सत्तरसविह तु इय वयसच्चकरणत्थ । वयगाहाएँ चसद्दा सज्झाओ आसि जो गणिओ ॥ ३३ ॥ सो इह नो गणियव्वो तत्तो वयमाइअट्ठठाणाण । विवरम्मि सत्तरिविह चरण किर बेति समयन्नू ॥ ३४ ॥ सव्व पाणइवाय सव्व मोस अदिन्नदाण च । सव्वपि मेहुण परिग्गहपि निसिभोयण सव्व ॥ ३५ ॥ जावज्जीवाएँ तिविह तिविहेण तिका-

लियंपि जं वज्जे । ते हुंतिह मूलगुणा समणाण महव्वया पंच ॥ ३६ ॥ पिंडस्स जा विसोही इच्चाइ छठाणगे इमे अंका । बायाल पंच पणवीस बार तह बारं चउरो य ॥ ३७ ॥ पिडस्स जा विसोही सा बायाला इहुत्तरगुणेसुं । विन्नेया समिईओ पंच य समए पसिद्धाओ ॥ ३८ ॥ पाणाइवाइयाणं पंचण्ह महव्वयाण उवरिम्मि । हुंतीह भावणाओ पत्तेयं पंच ता य इमा ॥ ३९ ॥ वत्थाइठवणगहणे समिई इरिएसणाए समिई य । मणवयणे गुत्तिदुगं पढमवए भावणा पंच ॥ ४० ॥ कोहा वा लोहा वा भया व हासा व नो वए मोसं । अणुचिंतिय भासेज्जा दुइयवए भावणा पंच ॥ ४१ ॥ उग्गहजायण उग्गहनिसामणं उग्गहस्स सीमा य । साहम्मिउग्गहो गुरुअणुन्नाए भोयणं पंच ॥ ४२ ॥ इत्थिकह-इत्थिइंदिय-निरिक्खणाऽऽहार-गिद्धिपरिहारो । संथवभूसअकरणं चउत्थवए भावणा पंच ।॥ ४३ ॥ इंदियविसए सद्दे रूवे गंधे रसे य फासे य । गेहिपओसं न करे पंचमवय भावणा पंच ॥ ४४ ॥ अणसणमाई य तवो बारसहा होइ समयसंसिद्धो । मासाई सत्तंता एमाई पडिमबारसगं ॥ ४५ ॥ दव्वे खेत्ते काले भावे य अभिग्गहा चउविगप्पा । नाणापयारभेया निद्दिट्ठा समयकेऊहिं ॥ ४६ ॥ पिंडस्स जा विसोही इमाइ गाहाए पंजलगईए । विवरे कयम्मि होई सयमेगं उत्तरगुणाणं ॥ ४७ ॥ अन्नेसुं किर गंथंतरेसु छन्नवइ उत्तरगुणा उ। जं निसुणिज्जए वक्कं तहि दव्वाईचउक्कम्मि ॥ ४८ ॥ यमराज्झाओ उद्धारियम्मि सेसाउ होइ छन्नवई । दव्वाइचउगसुतरगुणेसु भिन्नंपि गणियव्वं ॥ ४९ ॥ तह अन्नेसुं गंथंतरेसु नवनउइ उत्तरगुणा ओ । इय वक्कं दीसइ तत्थ सुणह एयस्स भावत्थं ॥ ५० ॥ छन्नवइए मज्झे गुत्तित्तिगे पाडियम्मि नवनउई । होई इत्थ विभिन्नं दव्वाइचउक्कयं गेज्झं ॥५१॥ तो सूलिगगाहाए बीयपए वायणाविसेसोऽयं । भणियव्वो समिइगुत्तितिभावणाईणि तह चेव ॥ ५२ ॥ अन्नेवि य उत्तरगुणा अणागयप्पच्चक्ख णमाईया । भेयपडिभेयाभिन्ना सुत्ताउ बुहेहि नायव्वा ॥ ५३ ॥ इय उत्तरगुणविसयं विवरणमेयं समासओ लिहियं । किंची सुत्ताओ गुरुहराण उवएसओ किंची ॥ ५४ ॥ इय चरण-

करणउत्तरगुणविसयाओ इमाओ गाहाओ । लिहियाओ चक्केसरसूरीहिं सुहववोहत्थ ॥ ५५ ॥ इति श्रीचरणकरणमूलोत्तरगुणप्रकरण सम्मत्त ॥

॥ अथ सभापश्चकप्रकरणम् ॥ ३५ ॥

पच सभा पत्तत्ता उववायसभा तहाभिसेय सभा । तइयाऽलकारसभा ववसायसभा चउत्थी ओ ॥ १ ॥ पचमिया सोहम्मा देवो पढमाएँ तत्थ उववज्जे । आउस्सतो देवा वीयाएँऽभिसिचइ ते उ ॥ २ ॥ तइयाएऽलकरिज्जइ ववसायसभाएँ धम्मिय सत्थ । वायइ तत्तो उत्तरपुरच्छिममी दिसाभागे ॥ ३ ॥ सोहम्माए स ठेय सिद्धायथणस्स वदणनिमित्त । चल्लइ तत्तो ण्हायइ चेइयतणयाए वावीए ॥ ४ ॥ नदापुस्करणीए पुव्वद्दारेण पविसइ तत्तो । सिद्धाययण तत्थवि वन्देइ जिणाण आलोए ॥५॥ आलोयम्मि पणाम करेइ पडिलेह लोमहत्थेण । ताओ पमज्ज गधोदग्ग ण्हावेइ सुरहेण ॥ ६ ॥ कासाईए गायाइ लूहई चदणेण लिंपइ य । अहयाइ जुयलयाइ नियसई देवदूसाण ॥ ७ ॥ पकरइ पुप्फारुहण मल्लारुहण च गधआरुहण । चुन्नाण कलसाण वत्थाभरणाण आरुहण ॥ ८ ॥ पकरेइ सुविउलघणपमाणमालाउल च पुप्फहर । करयलपभट्ठदसअद्धवन्नकुसुमुक्कर किरइ ॥ ९ ॥ जिणपडिमाण पुरओ रययामयएहि सण्हअच्छेहिं । अच्छरसतदुलेहि तुसारगोखीरसेएहि ॥ १० ॥ दप्पण १ भद्दासण २ वद्धमाण ३ वरकलस ४ मच्छ ५ सिरिवच्छा ६ । सोत्थिय ७ नदावत्त ८ लिहेइ अट्ठट्ठमगलए ॥ ११ ॥ धूयकडुच्छुयएण धूव दाऊण जिणवरिंदाण । अट्ठसएण सुविसुद्धगथवित्तेहि सथुणइ ॥ १२ ॥ (जहा) देवाहिदेव परमेसर वीयराय, सव्वण्णु तित्थयर सिद्ध महाणुभाव । तेलोक्कनाह मुणिपुगव वद्धमाण, गभीरधीर सुचिर जय देवदेव ॥१३॥ सत्तट्ठपयाइ ओसरिउ अचेइ वामजाणु तु । दाहिणजाणु धरणीयलसि किच्चा मुभत्तीए ॥१४॥ तिक्खुत्तो मुद्धाण भूमीएँ निहितु ईसि नमइत्ता । अजलिमउलियहत्थो सक्कथय भणिय वदेइ ॥ १५ ॥ वदित्ता नीहरई दाहिणदारेण गब्भगेहाओ । दाहिणमुहमडवमज्झभायय तत्थ पूएइ ॥ १६ ॥ पच्छिमदार

तत्तो दाहिणमुहमंडवस्स पूएइ । तो उत्तरिल्लखंभे पूयइ तम्मंडवाट्ठियओ ॥१७॥ पुव्वं दारं पूयइ दाहिणमुहमंडवस्स तणयं तु । मुहमंडवस्स
ताणियं दाहिणवारंपि पूएइं ॥ १८ ॥ तेणं चिय नीहरई तो दाहिणपेच्छमंडवयमज्झं । पच्छिमदारं तत्तो उत्तरिल्लखंभे उ पुव्विल्लं ॥१९॥ दारं॥
तत्तो दाहिणदारं पूएइत्तुं च नीहरइ तेणं । तत्तो दाहिणचेइयथंभे पूएइ संतप्पा ॥ २० ॥ थुभाभिमुहीओ चउदिसिपि [तत्थ] चत्तारि
संति जिणपडिमा । तासि पढमं पच्चित्थिमिल्लपाडिमं नमंसेइ ॥ २१ ॥ तो उत्तरिल्लपडिमं वंदइ तत्तो उ पुव्वतणयं तु । तत्तो दाहिणपाडिमं
थूयइ अंचेइ वदेइ ॥ २२ ॥ दाहिणचेइयरुक्खे दाहिणचेइयधयं च दाहिणया । नंदा पुक्खरणीऽविय पूयइ अंचेइ संतप्पा ॥ २३ ॥
तत्तो सिद्धाययणं पयाहिणीकरिय जाइ उत्तरियं । नंदा पुक्खरणी चेइयरुक्ख चेइयधयं रम्मं ॥ २४ ॥ चेइयथूभं तस्संमुहाउ पडिमाउ पुव्व-
नीईए । वंदित्ता पविसेई उत्तरपेच्छणयमंडवए ॥ २५ ॥ तत्थवि पुव्वकमेणं पूयइ दाराइं पविसइ तत्तो । उत्तरमुहमंडवए तत्थवि पुव्वं व
दाराइं ॥ २६ ॥ पूइत्ता नीहरई सिद्धाययणस्स पुव्वदारेणं । पविसेइ पुव्वमुहमंडवंमि पूएइ तम्मज्झं ॥ २७ ॥ दाहिणदारं थंभाण पंतिया
पच्छिमाइ उत्तरियं । दारं पूयइ पुव्वं दुवारयं तंपि पूएइ ॥ २८ ॥ तेणं चिय नीहरई पुव्वपेच्छणयमंडवे सव्वे । पुव्वमुहमंडवे इव करेइ तो
एइ पुव्विल्ले ॥ २९ ॥ चेइयथूभे तत्थवि पुव्वकमेणं जिणाण पडिमाउ । पूइत्ता चिइरुक्खं चेइधयं नंदिवावी य ॥ ३० ॥ सोहम्माएँ सभाए
पुव्वद्दारेण पविसई तत्तो । मज्झे धयचेइखंभे वइरामयगोलवट्टेसु ॥ ३१ ॥ जिणसकहाओ पूयइ थंभं पूइत्तु देवसयणीयं । खुड्डागमहिंद-
ज्झय पहरणकोसं च सुंवालं ॥ ३२ ॥ सोहम्मसभागब्भं पूइत्ता जाइ तत्थ पडिमाए । उववायसभाएँ तओ हरगं अंचित्तु वीयाए ॥ ३३ ॥
अभिसेयाए वच्चइ तत्तोऽलंकारियाए तइयाए । तत्तो ववसायाए सभाएँ पूएइ वरपोत्थं ॥ ३४ ॥ तत्तो सोहम्मसभापुरच्छिमिल्लाए नंद-
नामाए । पुक्खरिणीए साज्जिय सज्जो वालिसज्जणं करइ ॥ ३५ ॥ देवा देवीओऽविय सिंघाडगमाइ तत्थ पूयंति । तम्मि कए सम्माणे पवि-

सइ पुत्तिव्वदाए ॥ ३६ ॥ साहम्मार्ग सभाए निसीय सिहासणमि रम्मम्मि। पुव्वाभिमुहो तत्तो सामाणियपभिइ परिवारो ॥ ३७ ॥ पुरओ निसीयइ पहरणगायडहत्थो पसतमुहसोहो । जयजयनदा जयजयभद्दा इइ जपिरो रम्मो ॥ ३८ ॥ इय पुव्वसुकयकम्माणुभावजणिय विसिट्ठविसयसुह । भुजतो वरसरसत्त्राहि सद्धि गमइ काल ॥ ३९ ॥ सिद्धाययणगमेण मुहमडवपभिइ वित्थरा सव्वो । पाय पचसभासुवि उववायाईसु विन्नेओ ॥ ४० ॥ सव्वोसि दुवाराण तह चिइरुक्खाइयाण उवरिम्मि । छत्ताइछत्तधयमगलाइ सव्वत्थ नेयाइ ॥ ४१ ॥ एमा गुरुवइन्नविही उववायप्पसेणईयाओ । भणिओ अहिणवजायाण सव्व इदाण देवाण ॥ ४२ ॥ सिरिवद्धमाणसूरीण पायकमलेसु भमरसारिच्छेहिं । सिरिचक्कमरसूरीहि भासियमिण पगरणममेय ॥ ४३ ॥ इति देवोपपत्तिस्वरूपप्रकरण समत्त ॥

अथ सूक्ष्मार्थसप्ततिटीप्पनम् ३६ ॥

नत्वा जिन समीचीनवस्तुसद्भावभापकम् । सूक्ष्मार्थसप्ततेः किञ्चिट्टिप्पणकमभिधीयते ॥ १ ॥ विक्खभवग्गदहगुणकरणी वट्टस्स परिरओ होइ । विक्खभपायगुणिओ परिरओ तस्स गणियपय ॥ २ ॥ अनया करणगाथया जम्बूद्वीपस्य परिधे गणितपदस्य चानयनार्थं गणितप्रक्रिया उच्यते, यथा जम्बूद्वीपविष्कम्भ लक्ष १००००० अस्य वर्गे तस्याग्रे बिन्दुदशक दीयते, दशगुणे तदग्रे एकादशमो बिन्दुर्दीयते, अस्य करणीतिवर्गमूले लब्ध योजन ३१६२२७ एप जम्बूद्वीपपरिधियोजनराशि , अत्रोद्धरितराशिरय ४८४४७१, एप योजनराशिः गव्यूतकरणाय चतुर्भिर्गुण्यते, तत्रागत १९३७८८४ अस्य राशेरधो द्विगुणितपरिधियोजनराशिर्ध्रियते स इत्थ १९३७८८४।६३२४५४ तत अनया अधोराशिना उपरिराशेर्भाग , तत्र लब्ध गा३, अत्रोद्धरितराशी ४०५२२ एप गव्यूतराशि धनु करणार्थं सहस्रद्वयेन गुण्यते, तत्रागत ८१०४४०००।६३२४५४ अस्य राशे पूर्ववत् द्विगुणीकृतपरिधियोजनराशिना भागे लब्ध १२८ अत्रोद्धरितराशी ८९८८८ एप

राशिः अंगुलकरणार्थं पण्णवत्या गुण्यते तत्रागतं ८६२९२४८।६३२४५४ अस्य राशेः पूर्ववत् परिधियोजनराशिना भागे लब्धं अंगुल १३ अत्रोद्धरितराशिः ४०७३४६ एषोऽङ्गुलराशिरद्धांगुलकरणार्थं द्विकेन गुण्यते, तत्रागतं८१४६९२--६३२४५४अस्य राशेः पूर्ववत् परिधियोजनराशिना भागे लब्धं अंगुलं १ तच्च अद्धांगुलं द्रष्टव्यं, अत्रोद्धरितराशिः अद्धांगुला १८२२३८ अनयोद्धरितराशिना न किमपि प्रयोजनं, अत्रैतावन्मात्रस्यैव विवक्षितत्वात्, यदा तु यवयूकादिरपि कोऽपि आनेतुमिच्छति ततस्तत्रेयं प्रक्रिया-उद्धरितांगुलराशिः अष्टाभिर्गुणनीयः, परामिह अद्धांगुलराशिरुद्धरितस्तिष्ठति, ततः सोऽगुलकरणार्थं अद्धींक्रियते, तत्र जातोऽयं अंगुलराशिः ९१११९, एषोऽगुलराशिर्यवीकरणार्थं अष्टभिर्गुण्यते, तत्रागतं ७२८९५२।६३२४५४ अस्य राशेर्द्विगुणितपरिधियोजनराशिना भागः लब्धं जवु १ अत्रोद्धरितराशिः ९६४९८ इत्यादि उद्धरितराशिषु सर्वत्र अष्टभिर्गुणकारः आगतेषु सर्वत्र द्विगुणितपरिधियोजनराशिना भागे लब्धं यूका लिक्षा वालाग्रादिर्भवति ॥ सुखार्थं पुनरपि परिधित आगतं लिख्यते योजन ३१६२२७ गा ३ ध १२८ अंगुल १३ उपरि अद्धांगुलं ॥ परिही तिलक्ख सोलस सहस्स दो य सय सत्तवीसहिया । कोसतियं धणुह सयं अडवीस तेरंगुलद्धऽहिया ॥१॥ (जम्बूद्वीपपरिधिः) अथ जम्बूद्वीपगणितपदानयनार्थं गणितप्रक्रिया उच्यते-तत्र प्रथमं अद्धांगुलं एककस्वरूपं पञ्चविंशतिसहस्ररूपेण विष्कम्भपादेन गुण्यते, एकगुणं तत्तियं चेवत्ति जातं अद्धांगुल २५००० अस्य राशेरंगुलकरणार्थं राशिद्विकेन भागः तत्र लब्धं१२५००, एतानि च विष्कम्भपादगुणितत्रयोदशांगुल १३ स्वरूपराशौ मध्ये क्षिप्यंते, स च राशिरयं ३२५००० एतन्मध्ये द्विभागलब्धांगुलक्षेपे जातं अंगुल ३३७५०० अस्य राशेर्धनुष्करणार्थं पण्णवत्या भागे लब्धं धनूंषि ३५१५ उद्धरितगणितपदे अंगुल ६० एतानि च (धनूंषि) विष्कम्भपादगुणितअष्टाविंशत्यधिकशत १२८ रूपराशिमध्ये क्षिप्यंते, स च राशिरयं ३२००००० एतन्मध्ये पण्णवतिभागलब्धधनुःक्षेपे जातं धनुः ३२०३५१५ अस्य राशेर्गव्यूतकरणार्थं

सहस्रद्वयेन भागे लब्ध गव्यूतानि १६०१, उद्धरित च गणितपदे धनु १५१५ एतानि च पाश्चात्यगव्यूतानि विष्कम्भपादगुणितगव्यूतत्रय३रूपराशिमध्ये क्षिप्यन्ते, स च राशिरय ७५००० एतन्मध्ये सहस्रद्वयभागलब्धगव्यूतक्षेपे जात गव्यूत ७६६०१, अस्य राशेर्योजनकरणार्थं चतुष्टयेन भागे लब्ध योजन १९१५० उद्धरितगणितपदे गा १ तत य पूर्व कथित ३१६२२७ एवंविधपरिधिमकयोजनराशि स विष्कम्भपादेन गुण्यते, तत्र जात ७९०५६७५००० ततः एतन्मध्ये पाश्चात्यस्य ७६६०१ गव्यूतराशे चतुर्भागे लब्ध १९१५० एवंविधयोजनक्षेपे जात गणितपदे योजन ७९०५६९४१५० ॥छ॥ सुखार्थं पुनरपि गणितपद आगत लिख्यते ७९०५६९४१५० गा १ धनु १५१५ अ ६० सत्तेव य कोडिसया नउया छप्पन्न सयसहस्साइ । चउणवई य सहस्सा सयपन्नास च बोद्धव्व ॥१॥ गाउयमेग पणरस पनरसअहिय धणूण नायव्व । सट्ठि च अगुलाइ जबुद्दीवस्स गणियपय ॥२॥ जम्बूद्वीपगणितपद । विक्खभवग्गदहगुणकरणी वट्टस्स परिरओ होइ । विक्खभपायगुणिओ परिरओ तस्स गणियपय ॥१॥ अनया गाथया समयक्षेत्रस्य परिधेर्गणितपदस्य चानयनार्थं गणितप्रक्रियोच्यते, तत्र पञ्चचत्वारिंशल्लक्षा समयक्षेत्रस्य विष्कम्भ ४५०००००अस्य वर्गो २०२५०००००००००० दशगुणे एतदमत एकादशभिर्बिन्दुर्दीयते, करणीति वर्गमूले लब्ध परिधि योजन १४२३०२४९ अत्रोद्धरितराशिः १३३९७९९९ एष न गण्यते, परिधिगाथाऽत्र चैषा एगा जोयण कोडी लक्खा बायाल तीसइसहस्सा । समयक्खेत्तपरिरओ दो चेव सया अउणपन्ना ॥१॥ समयक्षेत्रपरिधि. । अथ गणितपदविधिरुच्यते समयक्षेत्रविष्कम्भपादेन समयक्षेत्रपरिधियोजनानि गुण्यते, तद्विष्कम्भपादश्चाय ११२५००० अनेन १४२३०२४९ एवंविधपरिधियोजनराशिर्गुण्यते, तत्रागत गणितपदे १६००९०३०१२५००० अत्र गाथा-सोलस कोडी लक्खा नव कोडी सयाइ तिकोडिलक्खेग । पणवीससहस्साइ गणियपय समयखेत्तस्स ॥ १ ॥ समयक्षेत्रगणितपद ॥ विक्खभवग्गदहगुणकरणी

वट्टस्स परिरओ होइ इति गाथार्द्धेन मेरोर्मूलतले भूमितले उपरितले च परिधेः आनयनार्थं गणितप्रक्रियोच्यते, तत्र मेरुर्भूमितले दशसहस्रा नवत्यधिकाः योजनैकादशभागानां च दश भागाः विष्कम्भः १००९०-११-१० अत्र संपूर्णराशिः एकादशभिर्गुण्यते, दश च भागा मध्ये क्षिप्यन्ते, जातं १११००० अस्य वर्गो १२३२०००००० दशगुणे तदग्रे सप्तमो बिन्दुर्दीयते, करणीति वर्ग्गमूले लब्धं परिधियोजनलक्षत्रयं एकपञ्चाशत् सहस्रा द्वादशाधिकाः,संप्रदायात् न्यूनयोजनस्य संपूर्णस्य विवक्षणात् त्रयोदशाधिकाः द्रष्टव्याः३५१०१३ अत्रोद्धरितराशिः५७५८५६ एष न गण्यते, लब्धयोजनराशेः एकादशभिर्भागः लब्धं एकत्रिंशत्सहस्राः नव शतानि दशाधिकानि योजनैकादशभागानां च भागत्रयं ३-११ मेरोर्मूलतले परिधिः, तथा मेरोर्भूमितले विष्कम्भः सहस्रा दश १००००, अस्य वर्गे एककस्याग्रे बिन्दुअष्टकं दीयते, दशगुणे तदग्रतो नवमो बिन्दुर्दीयते, करणीतिवर्ग्गमूले लब्धं एकत्रिंशत्सहस्राः षट् शतानि द्वाविंशत्यधिकानि, संप्रदायात् न्यूनयोजनस्य संपूर्णस्य विवक्षणात् त्रयोविंशत्यधिकानि द्रष्टव्यानि ३१६२३, अत्रोद्धरितराशिः ४९११६, एष न गण्यते, तथा मेरोरुपरितले विष्कम्भः सहस्रं १०००, अस्य वर्गे एककस्याग्रे बिन्दुषट्कं दीयते, दशगुणे तदग्रतः सप्तमो बिन्दुर्दीयते, करणीति वर्ग्गमूले लब्धं सहस्रत्रयं शतं द्विषष्ट्याऽधिकं ३१६२, अत्रोद्धरितराशिः१७५६,एष न गण्यते, मेरोरुपरितलपरिधिः॥ विक्खंभवग्गदहगुणकरणी वट्टस्स परिरओ होइ। विक्खंभपायगुणिओ परीरओ तस्स गणियपयं ॥ १ ॥ अनया गाथया जम्बूद्वीपादितः पञ्चदशमनन्दीश्वराभिधद्वीपान्तरालवर्तिक्षेत्रस्य परिधेः गणितपदस्य चानयनार्थं गणितप्रक्रियोच्यते, तत्र प्रस्तुतक्षेत्रस्य विक्खम्भोऽयं षट्कोटिशतानि पंचपंचाशत्कोटयः त्रयस्त्रिंशल्लक्षाः ६५५३३००००० अस्य वर्गो ४२९५७४०८९, १० बिन्दवः, दशगुणे पाश्चात्यअंकानां अग्रे बिन्दुर्दीयते, अस्य करणीति वर्ग्गमूले लब्धं योजन २०७२३३४५१९० प्रस्तुतक्षेत्रस्य एष परिधियोजनराशिः, अत्रोद्धरितराशिः १५०९४४३९०० एष योजनराशिर्गव्यूतकरणार्थं चतुर्भिर्गुण्यते, तत्रागतं ६३२३७७५-

६२ २११६७ ८३८ अस्य राशेरधो द्विगुणीकृतपरिधियोजनराशिर्ध्रियते, स च एष एव, ततोऽनेन अधोराशिना उपरिमराशेर्भाग, तत्र लब्ध गा १ अत्रोद्धरितराशि २१७९१०६७२२० एष गव्यूतराशिर्धनु करणार्थं सहस्रद्वयेन गुण्यते, तत्रागत ४३५८२१३४४४-०००००४४११४६७०८३८० अस्य राशे पूर्ववत् द्विगुणीकृतपरिधियोजनराशिना भागे लब्ध धनु १०५१ अत्रोद्धरितराशिः २१६४३९३२६२ एष धनुराशिरगुलकरणार्थं षण्णवत्या गुण्यते, तत्र आगत २०७७८१७५३१५२०-४१४४६७०८३८० अस्य राशे पूर्ववत् भागे लब्ध अगुल ५० अत्रोद्धरितराशि ५४८२११२५२० एष अगुलराशिर्यवकरणार्थं अष्टाभिर्गुण्यते, तत्रागत ४३८५६९००१६०४१४४६७०८३८० अस्य राशे पूर्ववत् भागे लब्ध जवु १ अत्रोद्धरितराशि २४१२१९१७८० अनेन उद्धरितराशिना न किमपि प्रयोजन, यदि तु कोऽपि यूकादिरपि आनेतुमिच्छति तत अष्टाभि सर्वत्र गुणकार पूर्ववत् भागे लब्ध यूकादिर्भवति, सुखार्थं पुनरपि परिधिसख्या लिख्यते, परिधियोजनानि २०७२३३५४१९० गा १ धनु १०५१ अगुल ५० जवु १, अत्र गाथे-दुन्नि उ कोडिसहस्सा बावत्तरिलक्खकोडितेत्तीस । चउपन्न सहस्साइ नउयसय गाउय एग ॥ १ ॥ धणुह सहस्स इगवन्न समहिय अगुलाइ पन्नास । एगो यवो य परिही नदीसर अतिमा एसा ॥२॥ नदीश्वर परिधि. । अथ प्रस्तुतक्षेत्रस्य गणितपदानयनप्रक्रियोच्यते तत्र प्रस्तुतक्षेत्रसत्केन १६३८३२५००० एवविधविष्कम्भपादेन एको जवो १ गुण्यते, तत्र 'एगगुण तत्तिय चेव' इति वचनात् विष्कम्भपादसम एष जवराशिर्भवति १६३८३२५००० अस्य जवराशेरगुलकरणार्थं अष्टभिर्भाग, तत्र लब्ध अगुला २०४७९०६२५ एतानि च विष्कम्भपादगुणितपञ्चाशत्रूपागुलराशीमध्ये क्षिप्यन्ते, स च राशिरय ८१९१६२-५०००० एतन्मध्ये अष्टभागलब्धागुलक्षेपे जात अगुल ८२१२१०४०६२५ अस्य राशेः धनु करणार्थं षण्णवत्या भाग लब्ध धनूषि ८५५४२७१०६ तत्रोद्धरित गणितपदे अगुल ४९, एतानि च विष्कम्भपादगुणितएकपञ्चाशदधिकसहस्ररूप १०५१ धनूराशिमध्ये

क्षिप्यन्ते, स च राशिरयं १७२१८७९५७५०००, एतन्मध्ये षण्णवतिभागलब्धधनुःक्षेपे जातं धनुः १७२२७३५००२५०६ अस्य राशेर्गव्यूतकरणार्थं सहस्रद्वयेन भागः, लब्धं गव्यूतानि ८६१३६७५०१, अत्रोद्धरितं गणितपदे ५०६ एतानि विष्कम्भपादगुणितगव्यूतैकराशिमध्ये क्षिप्यन्ते, स च राशिः एककस्य विष्कम्भपादगुणने विक्खंभपादसम एव भवति, गव्यूतानि, स चायं १६३८३२५०००, एतन्मध्ये सहस्रद्वयभागलब्धगव्यूतक्षेपे जातं गणितपदे गव्यूत २४९९६९२५०१ अस्य राशेः योजनकरणार्थं गव्यूतचतुष्टयेन भागे लब्धं योजन ६२४९२३१२५ उद्धरितं गा १ ततः यः पूर्वकथितः २०७२३३५४१९०एवंविधपरिधिसत्को योजनराशिः स विष्कम्भपादेन गुण्यते, तत्र जातं ३३९५१५८९२५३३३१७५०००० एतन्मध्ये चतुर्भागलब्धयोजनक्षेपे जातं गणितपदे योजन ३३९५१५८९२५३९५६६७३१२५ गणितपदसंख्या सुखार्थं पुनः एकत्र लिख्यते, तथा योजन ३३९५१५८९२५३९५६६७३१२५ गा १ धनुः ५०६ अंगुल ४९ अत्र गाथाः कोडाकोडी लक्खा तिन्नि उ तह कोडिकोडि सहसा ओ। एगुणचत्ता पंच उ कोडाकोडी सया हुंति ॥ १ ॥ कोडाकोडी पनरस एगुणनवई उ कोडिलक्खाओ। कोडीसहस्सा पणवीस हुंति कोडी सया तिन्नि ॥ २ ॥ पंचाणवई कोडी छावट्ठी लक्ख सहस तिगसयरी। पणवीससयं गाउयमेगं धणुहाण पंचसया ॥ ३ ॥ छस्सयमाहिया तह अंगुलाइं एगूणवन्न गणियपयं। जंबूमुहदीवाणं नंदीसरअंतिमाण इमं ॥४॥ नंदीश्वरगणितपदं। सूक्ष्मार्थप्रतिपादकसप्ततिकोपरि गुरूपदेशेन गणितविधिश्चक्रेश्वरसूरिवरैरभिहितो रम्यः ॥ १ ॥ जंबूद्वीपपरिधेर्गणितपदस्य समयक्षेत्रस्य परिधिर्गणितपदस्य च मेरोर्मूलतले ३ परिधेर्नंदीश्वरद्वीपस्य परिधेर्गणितपदस्य च विस्तरतो गणितप्रक्रियेति ॥ छ ॥ इति सूक्ष्मार्थसप्ततिकाकतिपयपदगणितटिप्पणमिदं, कृतिः श्रीचक्रेश्वरसूरेरिति ॥ छ ॥

॥ अथ आत्मतत्त्वचिन्ताभावनाचूलिका ३७ ॥

कल्याणशस्यपाथोदं, दुरितध्वान्तभास्करम्। श्रीमत्पार्श्वप्रभुं नत्वा, किञ्चिज्जीवस्य दिश्यते ॥ १ ॥ नाहं वक्ता कविर्नैव, सतां नाक्षेप-

क कचित । अपूत्र नैव भापिप्ये, श्रव्य किञ्चित्तथाऽपि मे ॥ २ ॥ व्युत्पत्तेर्भाजन काव्य, रसप्राणस्य मन्दिरम । वक्रोक्ते परम धाम, वैद-र्भ्या लास्यमण्डप ॥ ३ ॥ शब्दार्थयो परो गुम्फ , प्रसत्तेस्तु सुधारस । गुरोस्तुल्येन केनाऽपि, लभ्यते लीलया स्फुटम ॥ ४ ॥ सर्वमेतत् वृथा मन्ये, तत्त्वबुद्ध्या विवेचयन । यत कर्तु भवोच्छेद, चेतश्चेन्न प्रगल्भते ॥ ५ ॥ ससारानित्यता धन्य ! , त्वया स्वतोऽन्यतोऽपि वा । दृश्यते ज्ञायते भूय , श्रूयते चानुभूयते ॥ ६ ॥ भोगतृष्णी कृतध्यानेरसपूर्णमनोरथे । जल्वुद्वुदसादृश्य, प्राप्य के केन गम्यते ? ॥ ७ ॥ जैनधर्मगुणोपेता, सामग्रीं प्राप्य निर्मलाम् । धर्मोद्यमस्तथा कार्य , प्रमादो न यथा भवेत् ॥८॥ भावितात्मा क्षण भूत्वा, स्थित्वैकान्ते सगाहित । नाशावशे दृशौ धृत्वा, भावयार्थं [भाव्यमर्थं] मुहुर्मुहु ॥९॥ आयातोऽस्मि कुत स्थानाद्गन्तव्य क पुनर्मया । सुरत्वे कविधो हेतु , को वा तत्र भविष्यति ? ॥१०॥ पुण्य पापमिहोपात्त, भुत्र परत्र भुज्यते । इति मत्वा महाभाग! , प्रमादो नेव युज्यते ॥११॥ फेल ते मानुष जन्म, चिन्तितार्थप्रसाधकम । धर्मसाधनसामग्री,काऽपी सर्वापि हस्तगा ? ॥ १२ ॥ तूर्णं तूर्णं तु धावस्त्व, कृत्यकोटिसमाकुल । विस्मृत्य प्रप्तत कोटीं, पुर पश्यसि काकिनीम् ॥१३॥ सूर कातरता यातो, जैनैरूचे (जघन्यश्च) स उत्तम । एतद्द्वयविहीनस्तु, मध्यम प्रणिगद्यते ॥१४॥ मिथ्यादृग् श्रावको भाव्यश्चारुचारित्रवान् यति । जानीहि व्यवहारेण, मध्यमोत्तमहीनकान ॥ १५ ॥ के के वैराग्यसवेगो, नाऽऽरयान्ति पोपयन्ति च? । व्यवहार्यौ तौ याप्परोमाख्ये , पुण्याद् हर्षेऽपि कस्याचित् ॥१६॥ हर्षेऽपि बहुश स्याता, नित्य तौ वा महात्मन । उत्थायोत्थाय तस्यास्य, द्रष्टव्य पुण्यमिच्छुभि ॥१७॥ जानन्त शतशोऽप्यर्थं, शमादेर्बहवो जना । यतो वैराग्यसवेगो, तमर्थं तु न जानते ॥१८॥ नैवादात्मनह जाने, प्रमादीति यदि स्वकम् । तथाप्युद्धर्तुमासेव्य , सदा स्वान्ते न कन्दल ॥ १९ ॥ मा वधीरय मे वाच, कुरु किञ्चित्तथाविधम् । जन्मान्तर गतो येन, वत्स वत्स ! न शोचासि ॥२०॥ हहो चित्त ! प्रकटविकट मोहजाल किमेतच्छून्य लापे प्रलपितामिद कार्म्य-

हीनं विजाने । स्मारं स्मारं किमिति मुषितं सुप्रसिद्धं यदेतत्, लोभार्त्तस्य क्षुदपगमनं दृष्टमात्रे न भोज्ये ॥ २१ ॥ (मंदाक्रान्ताछंदः) मज्जिह्वायै ततश्चेतो, यच्छादेशं सदाशय !। हित्वा कंडूलतां वक्तुं, मूकत्वं येन सेवते ॥२२॥ भावनां तत्त्वतः कर्तुं, न शक्तश्चेत्तथाप्यहम् । रत्नधान्येषु (रत्नधारिषु) मन्ये स्वं, यत्तस्यां व्यसनी सदा ॥२३॥ श्रीरत्नोपपदाः सिंहाः, सूरयो धर्म्ममङ्गलम् । तत्तत् किञ्चित्तथाऽऽचख्युः, प्राप्यते निर्वृतिर्यथा ॥ २४ ॥ इत्यात्मतत्त्वचिन्ताभावनाचूलिका ॥

॥ अथाऽऽत्मानुशास्तिसंज्ञिका पञ्चविंशतिका २८॥

प्राकृतः संस्कृतो वाऽपि, पाठः सर्वोऽप्यकारणम् । यतो वैराग्यसंवेगो, तदेव परमं रहः ॥ १ ॥ अहो मूढ! जगत्सर्व्वं, भ्राम्यत्येतद्बहिर्बहिः । आकुलव्याकुलं नित्यं, धिक्किमाश्रित्य धावति ॥ २ ॥ संप्राप्य शासनं जैनं, युक्तं किं मे न नार्त्तितुम् । किं वा प्रमादतो युक्तं, रोदितुं मे मुहुर्मुहुः ॥ ३ ॥ आत्मन्नहो न ते युक्तं, कर्त्तुं गजनिमीलिकाम् । प्रातर्गतं तु सन्ध्यायां, स्थातुं कस्तव निश्चयः? ॥ ४ ॥ एवं भवं परत्राहो, तव स्मृत्वा प्रमादिनः । बाढमाक्रन्दतो मूढ !, मूर्द्धा यास्यति खण्डशः ॥५॥ कस्मैचिन्नाऽस्मि रुष्यामि, रुष्याम्यात्मन एव हि । यद्वाऽस्मि तन्न जानामि, तत्सम्बोध्यः परः कथम् ? ॥ ६ ॥ ये वाचा ख्यांति वैराग्यं, यान्ति भेदं न मानसे । हहा हा का गतिस्तेषां, कारुण्यास्पदभागिनाम् ॥ ७ ॥ किं करोमि क्व गच्छामि, क्व तिष्ठामि शृणोमि किम् । संसारभयभीतस्य, व्याकुलं मे सदा मनः ॥ ८ ॥ ध्यात्वा किं वच्मि किं तूष्णीकोऽहं भीतोऽपि निर्भयः । अहो मे नटविधेयं, हहाहु कान्यलोकिकी ॥ ९ ॥ विमुच्य निष्फलं खेदं, धर्म्मे यत्नं ततः कुरु । एवं जातं न चेत्किञ्चिच्छक्तो दैवं न लङ्घितुम् ॥ १० ॥ यः कोऽपि दृश्यते कश्चित्, श्रद्धानुष्ठानबन्धुरः । तत्रानुमोदनं युक्तं, कर्त्तुं त्रेधाऽपि नित्यशः ॥ ११ ॥ आत्मारामं मनो यस्य, मुक्त्वा संसारसंकथाम् । अमोघामृतधाराभिः, सर्वाङ्गाणं स सिच्यते ॥ १२ ॥ एवं ध्यानरता येऽत्र, तेऽपि धन्या गुणोन्मुखाः । वेषमात्रेण ये तुष्टास्तेऽनुकम्प्या मनस्विनाम् ॥ १३ ॥ उद्यमे धर्तुमात्मानं, ध्येयं स्मर्त्तुं प्रातिक्षणम् । हित्वा-

न्धो जर सर्वोऽप्येतद्ध्यानपरो भवेत् ॥ १४ ॥ धर्म्मं कर्तुं यदीच्छाऽस्ति, तदा वीक्षस्व सादरम् । आत्मानुशासन सूरे', श्रीजिनेश्वर-सज्ञित ॥१५॥ ससारानित्यता बुध्वा, ये तिष्ठन्ति निराकुला' । ते नून वन्हिना दीप्ते, शेरते निर्भर गृहे ॥१६॥ योवनैश्वर्यभूपालप्रसाद-प्रमुखैर्मदे । भूयास स्व स्थिर मत्वा, कोट्या गृह्णन्ति काकिनीम् ॥ १७ ॥ गतानुगतिको भूत्वा, मा त्व स्वपिहि निर्भरम् । पतन्त वीक्ष्य कूपेऽन्ध, सज्जाक्षस्तत्र किं विशेत् ? ॥१८॥ देहो यन्त्रमिद मूढा, बह्वपाय प्रतिक्षणम् । दृष्टान्त शकट दृष्ट्वा, बुध्यध्व कि न सत्वरम्? ॥१९॥ हु हु हा ! दैव ! धिग् धिग् मे, जानतोऽपि न चेतना । बद्धायु श्रेणिक किं वा, नागच्छत्प्रथमा महीम् ? ॥ २० ॥ भुक्त्वाऽनावधि धिग् भोगान्महद्भिर्निन्दित तथा । यथा देही विदेह. सन, निर्वृत्तो निर्वृत कुतः ? ॥२१॥ राकाशशाङ्कसङ्काश, प्राप्य जैनेश्वर वचः । जन्तो ! सद्भावपी-यूषस्ततेर्भ्रान्त विनाशय ॥ २२ ॥ दृष्टादृष्टैर्मम त्रेध, क्षन्तव्य सर्वजन्तुभिः । स्वल्पेनाप्यपराधेन, सिद्धा मे सन्तु साक्षिणः ॥ २३ ॥ सर्व्वमप्येतदारख्यातमयोग्यो नैव सेवते । क्षुत्क्षामापि जलोका. किं, पाषाण चुम्बितु स्पृशेत् ? ॥ २४ ॥ सूरि श्रीरत्नसिंहाख्य. , सवेगा-मृतभावनाम । चक्रे स्वस्योपकारार्थमात्मानुशास्तिसज्ञिकाम् ॥ २५ ॥ इत्यात्मानुशास्तिसज्ञिका पञ्चविंशतिका ॥ अथ आत्मनिज्ञप्ति ३९ ॥

जय जय भुवणदिवायर' तिहुयणगुणरयणसायर! जिणिद' । सिरिरिसहनाह' सामिय विन्नत्तिं मज्झ निसुणेहिं ॥१॥ जोऽसि तुम जय-धय' थुणिओ सुररायफणिवइगुरूहिं । तस्स तुह नियहियय पयडतो किंपि जपेमि ॥२॥ भवभमणभीरुओऽह कापिरगत्तो जिणिद' तुह पुरओ । सरिउपिहु अतरतो हियययदुह तहवि साहेमि ॥ ३ ॥ नरयाईण दुहाण अच्छउ दूरे कहावि किर ताव । गब्भमिवि जाऽवत्था कलमलय भावित जणई ॥ ४ ॥ जेण न पावेमि रइ कत्थवि लीणो खणपि हे नाह' । ता अहह कुण परित्त अणतसामत्थकारुणिया' ॥ ५ ॥ तुह सपत्तिरहगीराहिओऽह नाह' चक्कवाउव्व । ससारसार सुइर भमिओ दीणाइ विलवतो ॥ ६ ॥ मह मणउदयगिरिम्मी सूरम्मि व सपय तए

फुरिए । आसासिओ तहाऽहं जह पुव्वि नेव कइयावि ॥ ७॥ सिद्धंतभावणाहिं भाविंतोऽविहु सयावि अप्पाणं । भूएण व रागेणं होहामि कहं छलिज्जंतो ? ॥८॥ वइरसिलाए नूणं मह हियय नाह ! निम्मियं विहिणा । जं मरणं नाऊणं सयखंडं फुडइ न तडत्ति ॥ ९ ॥ जम्मंतरसयदु-लहं सासणमेयं जिणिंद! तुह पत्तं । पत्तंपि पुण न पत्तं पमायरिउकिंकरो जमहं ॥ १० ॥ भवकूवमज्झगेणं हत्थालम्बो मए तुमं पत्तो । मोह-वसा उच्छालिउं निवडंतं अहह मं रक्ख ॥ ११ ॥ जइ सम्मं मह सामिय! सव्वंग फुरइ भवदुहसरूवं । ता नीरंपि न पाउं कमइ मणे किं पुणऽन्नकहा ? ॥ १२ ॥ तुह आणाए सामिय! एगत्तो अम्ह माणसं फुरइ । अन्नत्तो विसएसुं डमरुयगंठिव्व किं करिमो ? ॥ १३ ॥ पवण-पणुल्लिरनीरे रविपडिबिंबंकचंचलं भुवणं । अणुसमयंपि नियंतो जं नवि रज्जामि ही विसया ॥ १४ ॥ अवहीरिओऽवि तुमए पत्थेमी तहवि कलुणवयणेहिं । पइमुको अहह भवे सामिय! होहं कहमहंति ? ॥१५॥ अहह अहं नो सामिय! सरणागयवच्छलेऽवि तइं पत्ते । मह जं न परि-त्ताणं ताऽइं दीणो कहं होइं ? ॥ १६ ॥ कत्थ कया कह पुणरवि इमाइ सव्वाइं नाह! तं दच्छं । तो मज्झ हे दयालुय! दिट्ठिपसायं पणा-मेसु ॥ १७ ॥ जं किंपिहु संसारे पगरिसपत्तं मणम्मि सुहज्झेयं । तह जीहाइ थुणिज्जंतंपिहु मह नाह! तं चेव ॥ १८ ॥ तुह पयसेवं मुत्तुं नहु अवरं किंपि नाह! पत्थेमि । ता किं मं अवहीरसि ? करुणाभरमंथरं नियसु ॥ १९ ॥ जइ तुडिवसेग तुम्हं नयणंवुयकरपरायपिंजरिओ । होहं कहमवि ता जिण! धन्नो धन्नो जए नूणं ॥ २० ॥ तुह सिद्धंतरहस्सं नाउं संवेगसंगयमणोऽवि । विसएसु जं घुलावी तं सल्लं हल्लइ महल्लं ॥२१॥ वट्टंतोवि उवाए जमहं न तरामि लंघिउं देव्वं । का तत्थ मज्झ अरइ? पुणो पुणो तहवि मज्जामि ॥२२॥ तुह समयसमुद्दाओ मइमंदरमंथणेण सामि! मए । उवसमरयणं लद्धं बद्धं नियहिययगंठीए ॥ २६ ॥ तिहुअणरज्जाओविहु अहिओ मह अज्ज फुरइ आणंदो । विसयाइतक्करेहिं ता हीरइ ही नियंतस्स ॥२४॥ ता किं करेमि कस्स व कहेमि! इय पुण पुणोवि रुंटंतं । दुक्खपलित्त धावइ मह हिययं दस-

तुवि दिमासु ॥ २५ ॥ ग्गणो सुमतजीहो भमतनयणो घुलतसव्वगो । विसयतिसातविओऽहं हरिणोव्व न निवडिओ कत्थ ? ॥ २६ ॥ दुहग्गउभाविययो नहम्मि सुन्ने करे भमाडतो । कत्थवि रइमलहंतो तुह विरहे नाह ! कह होह ? ॥ २७ ॥ एयपि वियाणंतो ज न सहो रजिउ खणपि मण । ता नाह ! कालडसो हीटी पविसामि कत्थ अहं ? ॥ २८ ॥ इय विन्नत्ति सोउ जइ अप्पा आरुहइ रागं रंगे । जह नवणीय जलणे तह ता विलयइ गुड कम्म ॥ २९ ॥ इय तिहुयणभाल रयणसूरीहि जिणिंद ! विन्नविज्जंत । निरुवमकल्लाणनिहिं कुणसु असेसपि जियलोय ॥ ३० ॥

॥ इति आत्मविज्ञप्ति ॥ अथ आत्मानुशासनकुलकम् ४० ॥

सिरिधम्मसूरिसुगुरु पुणो पुणो पणमिऊण भावेण । तिहुयणसार तत्त अप्पहिय किंपि जपेमि ॥ १ ॥ गीय अमिय इट्ठ नहु मिट्ठ किंपि जीवलोगमि । पुरिसविसेसस्स मुहे जह मिट्ठा भारईदेवी ॥ २ ॥ उवसमविवेयसवरपयाण अत्थ न कोइ सुणइ किंसु । सुव्वइ न कोइ अवरो निलाइपुत्तो जहा भव्वय ॥ ३ ॥ तरतमजोगा भेए रसो पयासेइ धाउविसयम्मि । ता जाव सहवेहे अओ पर नत्थि रससिद्धी ॥ ४ ॥ धाउव्व उवसमाई रसोव्व चित्त इमाण सजोओ । ता जाव सिद्धी सिद्धी सो भन्नइ सहवेहविही ॥ ५ ॥ वक्खाणंति मुणीयं सुणंति तत्त सिरंपि धूणंति । रोमंच वहइ दढ भिज्जइ न मणो न तो किंपि ॥६॥ जो पुण विरत्तचित्तो भावणवसग्गसंठिओ होउ । अप्पाण शूरतो स इलापुत्तो धुव होइ ॥ ७ ॥ मुत्तूण लोयचित जइ जिय ! झाएसि अप्पणो तत्त । ता तुह जम्मो सहलो अहवा झूरेसि बहु पच्छा ॥ ८ ॥ भवचारयवेरग्ग विसयाइदुगुछण च इच्चाई । वयणच्चिय सव्वेसि हियए केसिंचि धन्नाण ॥ ९ ॥ जे एव जपंति पमायवेरि छलेह भो लोगा ! । तेवि छलिज्जति जया तया अहं तस्स किं काहं ? ॥ १० ॥ अन्नोऽन्न जायता मन्नता अत्तणो य धन्नत्त । ससारइंदयाल दरिसंता जे भणंति इम ॥ ११ ॥ वेइ य न कोइ हियए वयणेहिं अणिच्चय भणइ सव्वो । अन्नह मणवइकाए अन्नोऽन्न कह विसवाओ ? ॥ १२ ॥

एएवि कहं कहगा अत्तपमायं न चिंतयंति फुडं । जं दूसमाइ सव्वं छोढुं वट्टंति वज्जसिरा ॥ १३॥ परगरिहं मुत्तूणं अहवा चिंतेसु अत्तणोऽ न्नत्तं । अन्नह तुमंपि होहिसि पुव्वाणं मूढ! सारिच्छो ॥ १४ ॥ जा न विहाई रयणी तावय चिंतेसु जीव! किंपि तुमं । अन्नह आउंमि गए कीण। चिंताइ तुज्झ कहा? ॥ १५ ॥ कामवियारविहूणो धन्नो इह चितए परं तत्तं । जइ पत्तोऽवि वियारं चिंतइ धन्नाण सो राओ ॥ १६ ॥ काऊण गुरुपइन्नं मणमोहणकरिवरम्मि जह चडिओ । चुक्कइ नियवयणाओ धन्नोऽवि तहा वियारगओ ॥ १७ ॥ ता पढमंपि वियारं मणमोहणकरिवरस्स सारिच्छं । वारह दुहसयमूलं जइ इच्छह सुहसमिद्धीओ ॥ १८ ॥ पंचहिंवि इंदिएहिं अणंतसो नत्थि जं किर न भुत्तं । तहवि न जाया तत्ती ता चेययसि हा कया मूढ! ॥१९॥ अह चेययसि कइयाविहु थेवोऽविहु जत्थ नत्थि कोइ गुणो। एसा पुण सामग्गी कयायि होहित्ति को मुणइ? ॥ २० ॥ सयलंपि भवसरूवं नाऊणं गुरुमुहाओ मुणिणोवि । वट्टंति जे अकज्जे अहह महामोहविप्फुरियं ॥ २१ ॥ भणसि मुहेणं सव्वं तत्तं अइसुंदरं तुमं जीव! । जं न कुणासि काएणं तं मन्ने गरुयकम्मोऽसि ॥ २२ ॥ चिट्ठइ राई पाराइ न कोइ हवउ जह तहवऽणुट्ठाणं । इय मूढ! लोयरंजय कुणमाणो किंपि न लहेसि ॥२३॥ जइ एगोच्चिय रागो निग्गहिओ होज्ज जीव! संसारे । अट्ठण्हवि कम्माणं ता उच्छेओ कओ झत्ति ॥२४॥ को दिव्वं लंघेउं अहवा सक्कइ विगाणमाणोऽवि । तहविहु उज्जमसीलो होज्ज सया रायविजयम्मि ॥२५॥ जो चिंतइ न परतत्तं देइ कुबुद्धिं वयाउ भंसेइ । तेण समं संसग्गी वज्जह दूरेण मणसावि ॥२६॥ पाएण दूसमाए धम्मे संसग्गिया इह पमाणं । तेण सुमित्तेहिं समं संसग्गिं कुणसु जाजीवं ॥ २७ ॥ जइ पुच्छह निच्छयओ न गिही साहूवि पावइ भवंतं । भावेण केवलं पिहु लद्धूणं जाइ निव्वाणं ॥ २८ ॥ गाहाण सिलोगाणं अत्थं नाऊण सव्वभंगेहिं । तत्थवि तं महुनायं भावण अमियं जओ झरइ ॥२९॥ सव्वगुणाणं जोग्गं अप्पाणं अवहियहियओ होउं खणे खणे अप्पयं विभावेसु । कत्तो अहमायाओ गंतूण कहिं कमणुहोहं ? ॥ ३० ॥

जिय ! पमाइग नाउ । किं न रुयत्तो विरमसि सत्तीए उज्जम काउ ? ॥३१॥ धम्म परमरहस्स रे जिय ! सवेगचोयणासार । चूरिय जुयल झायसु जइ अप्पा वेरिओ नेत्र ॥ ३२ ॥ धम्मुज्जमामि सत्ती जइ जिय ! तुह नत्थि काइ किर ताव । अप्पाण झूरतो मा विरमसु तहवि कइयावि ॥ ३३ ॥ एएणवि बीएण कयावि धम्मुज्जमोऽवि तुह होज्जा । अन्नह दुहसयवुड्डो पायाल जासि सत्तमय ॥ ३४ ॥ कीय आहा-कम्म नीयावासो गिहीसु पडिबधो । अभिओ परिग्गहो तह हुति जईण इमे दोसा ॥ ३५ ॥ एक्केकोविहु गरुओ मिलिया सव्वेऽवि जइ पुणो हुति । अइसणेण तेसिं साहूग मह नमोकारो ॥ ३६ ॥ नामेण चिय साहू साहूसु न ताण होइ अन्नयारो । किं परविकत्थणेण? अहवा चिंतेसु अप्पाण ॥ ३७ ॥ अहयपिं एरिसो अह सुद्ध मग्ग च इह परूवतो । सविग्गपक्खियत्ता धन्न मन्नामि अप्पाण ॥ ३८ ॥ एव ठियस्स सयय मम मणभावस्स पत्तियइ को वा? । पच्चाइएण किं वा ? अप्पच्चिय सक्खिओ एत्थ ॥ ३९ ॥ ज पुण वायाए च्चिय भणामि काएण किंपि न करेमि । तत्थत्थि गरुयदुक्ख मणमदिरसोठय मज्झ ॥ ४० ॥ सुद्धालोयणदाण काउ मित्तिं च सव्वसत्तेसु । अप्पाण गरिहतो भावेमु अह कया तत्त ॥ ४१ ॥ एग चिय मह सल्लइ जन्न सहाए लहामि मणइट्ठे । एव झायतस्स उ को जाणइ किंपि होहित्ति ॥ ४२ ॥ आणद दाऊण समग्गसघस्स गहियआसीसो । अप्पाण भावेंतो विहरेमु जया तया अहय ॥ ४३ ॥ अह कहवि जाइ दियह रत्ती न हु जाइ अप्पाचिताए । थोवजले मच्छस्सव तल्लोवल्लिं कुणतस्स ॥ ४४ ॥ चेयहु ! चेयहु !! चेयहु !!! ह हो मूढमइ !, कहिय कहाणिय सव्वप्पयारेहिं तुम्ह मइ । हियडइ ताविय पुण पुण सोढे सहु धराणि, परित न कोणवि होसइ तहिं पत्तइ मरणि ॥ ४५ ॥ हियडइ रगु न जाह तह सउ वकुसु पडिहाइ । जइ पुण केवइ रगु तउ नयणिहिं नीरु न माइ ॥ ४६ ॥ जलणसम कामीण नीरसलोयाण तुसवुससमाण । विरयाण अभि-यसम एय सव्वपि ज भणिय ॥ ४७ ॥ गतव्व कत्थ मए कहि एसो वादिणो य जियेलोआ । कह माइसयणविहवो इय झूरसि हा !

८ ॥ एयाए भावणाए जइ अवसाणंपि मज्झ किर होज्जा । ता अहयं चिय धन्नो नहु अन्नं पत्थणिज्जंति ॥ ४९ ॥ भावण-. अहवा कम्मवसा मा समुल्लसउ मज्झ । अन्नस्सावि दट्ठूणं एयं घुंटेसु किं कइया ? ॥ ५० ॥ वेरग्गभावणाए किंवा वञ्चंतु मज्झ दियहाइं । नियहिययचिंतियाइं लब्भंति नवत्ति को मुणइ ? ॥ ५१ ॥ एयं भावणतत्तं सव्वंगं तुज्झ जीव ! जइ फुरइ । पंचुत्तरवासीणावि सोक्खं मन्नामि ता तुच्छं ॥ ५२ ॥ एगंते होऊणं मुहुत्तमेत्तं विसिट्ठमंतं व । पइदियहं झाएज्जह एयं उवएसवरतत्तं ॥ ५३ ॥ जह दीवाओ दीवो बोहिज्जइ भावणाएँ तह भावो । इय पढह गुणह झायह भविया एयं सया सत्थं ॥५४॥ सिरिरयणसिंहसूरी भावणसिहरम्मि आरुहेऊणं । अप्पाणुमासणं भो जंपइ जिणसासणे सारं ॥ ५५ ॥ बारसअउणत्ताले (१२४९) वइसाहे सेयपंचमिदिणम्मि । अणहिल्लवाड-नयरे विहियमिणं अप्पसरणत्थं ॥ ५६ ॥ इति आत्मानुशासनकुलकम् ४० ॥

॥ अथ आत्महितकुलकम् ४१ ॥

नियगुरुपायपसाया नाउं संसारविलसियविवागं । सम्मं विरत्तचित्तो अप्पहियं किंपि चिंतेमि ॥१॥ कालोचिय जिणआणं काउं तण्हालुयस्स मह सययं । हा ! जिय ! पमायवेरी न देइ धम्मुज्जमं काउं ॥ २ ॥ जइ एयं सामग्गिं धम्मे लहिऊण कहवि हारेसि । ता तं पच्छायावा वि-हलं विलवेसि परलोए ॥ ३ ॥ रागंधो मोहंधो कज्जाकज्जं न याणासि हयास ! । धत्तूरभामिओ इव सव्वं पिच्छसि सुवन्नमहो ॥ ४ ॥ वेर-ग्गमग्गलीणं खणमेगं जइ करोमि अप्पाणं । चंचलचित्तेण पुणो विहालिज्जइ ही नियंतस्स ॥ ५ ॥ एक्को चेव दुरंतो नियचरियं जो वियाणई अप्पा । सो ताव रंजियव्वो जइ इच्छसि साहिउं धम्मं ॥ ६ ॥ जइ इच्छसि अप्पसुहं खिन्नोऽसि दुहाण ता कुण उवायं । मा कोद्दवे ववंतो सालीण गवेसणं कुणसु ॥ ७ ॥ जं आसि धम्मबीयं पुव्वभवे वावियं तए जीव ! । तं इह लुणासि संपइ वावियामिण्हिं लुणासि अग्गे ॥८॥ इय नाऊण अकज्जं दूरे वज्जेसि किं ? नहु अणज्ज ! । अह कालपासबद्धो जुत्ताजुत्तं कह मुणेसि ? ॥ ९ ॥ इंदियचोरेहिं अहं मा भवरन्नंमि

भणसु ज गुसिओ । नाणिय चोरेहिं तुम जो गहिओ तस्स किं भणिमो ? ॥ १० ॥ परजणरजणहेउ भणेसि अन्न करेसि अवर च। तत्थवि पगइ करउ ह्य दीसइ तुम्ह सव्वत्थ ॥ ११ ॥ लहुगवि धम्मकज्जे तइया साहूहिं चोइओ सतो । असमत्थो भणिय ठिओ अहुणा सोगसि किं तम्हा ? ॥ १२ ॥ चिट्ठइ राई पासइ न कोइ हरउ जह तह वत्थुट्ठाण । इय मूढ ! लोयरजय कुणमाणो किं न लज्जेसि ? ॥१३॥ गुणिएसु मच्छरिओ वहसि पओस न निग्गुणजणम्मि। पररिद्धीए तम्मसि परपरिवाय तह करेसि ॥ १४ ॥ निच्च पमायसीलो सुहाभिलासी य चोइओ कुप्पसि । सोहग्गमजणीय अप्पमि तहावि वग्गमगो ॥ १५ ॥ इय सयल जाणेमी काउ न तरामि भणासि गुरुकम्मो । कठमणसोसणेण धि-रत्थु तुह मूढ ! नाणेग ॥ १६ ॥ अज्ज करेमि कल्ल करेमि धम्मुज्जम तुम भणासि । इय निप्फलवच्छाहिं समप्पिही जम्मपरिवाडी ॥ १७ ॥ पेच्छतो पच्चक्ख जियलोय जीव ! इंदयालसम । ठगिओ इव धुत्तेहिं 61 " चेयसि किं ! न अप्पाण ? ॥ १८ ॥ सउणाण जह रुक्खे पहि-याण जह य देसियकुडीरे । मेलावगो अणिच्चो मणुयाण तह कुडुंबम्मि ॥ १९ ॥ अज्जवि किंपि न नट्ठ जइ चेयसि हदि किंपि अप्पाण । विलयणमित्तठिओ पुण अत्तरुन समायरसि ॥ २० ॥ सुगहाई तिरियाविहु भोए भुजति भोयण तह य । परिभचारिय नराण को सत्त कुण-इ पुरिसेसु ? ॥२१॥ जे एव जपती पमायनेरिं छलेह भो लोया ! । तेवि छलिज्जति जया तया अह कस्स किं काह ? ॥२२॥ पाहुलेग लोओ पेच्छइ नयणोहिं नेव हियएग । तेण विसएहिंतो कह विरत्तो कुणउ धम्म ? ॥२३॥ एयाइ दुम्मईए माहप्प भजिऊग रे जीव ! । धम्मारामे रम्मे उज्जमरुक्खफल चरसु ॥ २४ ॥ गुरुआणाए सम्म परोवयारम्मि सजमे नाणे । खाओवसमियभावे सयावि एएसु उज्जमसु ॥२५॥ एय खु धम्मरज्ज कहमवि लहूण गाणिय दियहाइ । सपरोवयारहीणो खणपि मा सुयह वीसत्थो ॥ २६ ॥ अह पत्तियभणिएणवि होइ अह-न्नाण को गुणो भणसु ? । असुइ मुत्तूण किमी अन्नत्थ रइ कह करेइ ? ॥ २७ ॥ एय मुत्तूग भव पत्तो ससारसायरे घोरे । को जाणइ किर

कइया गुरुपाएहिं लहिस्सामि ? ॥ २८ ॥ ओ ! तं जीव' अलज्जि ! भणिओ धम्मोवएसलक्खेहिं । जइ नेव किंपि लग्गं ता सरणं मज्झ किर मोणं ॥ २९ ॥ विसयविरत्ता मुणिणो कालोचियसंजमंमि जे निरया । आजम्मंपि तिसंझं पयधूलिं वंदिमो ताणं ॥ ३० ॥ पइदियहं पइसमयं खणंपि मा मुयसु एयमुवएसं । जइ भवदुहाण तित्तो तिसिओ उण परमसोक्खाणं ॥ ३१ ॥ सिरिधम्मसूरिपहुणो निम्मलकित्तीइ भरियभुवण-स्स । सीसलवेहिं कुलयं रइयं सिरिरयणसूरीहिं ॥ ३२ ॥ इति श्रीआत्महितकुलकम् ४१ ॥

अथ मनोनिग्रहभावनाकुलकम् ४२ ॥

सिरिधम्मसूरिपहुणो उवएसामयलवं मुणेऊणं । तं चेव तिहा नामिउं मणनिग्गहभावणं भणिमो ॥ १ ॥ संसारभवणखंभो नरयानलपावणंमि सरलपहो । मणमाणिवारियपसरं किं किं दुक्खं न जं कुणइ ? ॥ २ ॥ वायाए काएणं मणरहियाणं न दारुणं कम्मं । जोयणसहस्समाणो मुच्छिममच्छो उयाहरणं ॥ ३ ॥ वइकायाविरहियाणवि कम्माणं चेत्तमेत्तविहियाणं । अइघोरं होइ फलं तंदुलमच्छोव्व जीवाणं ॥ ४ ॥ गालियाविवेयाण मणो निग्गहिउं दुक्करं फुडं ताव । संजायाविवेगाणवि दुक्करमेयंपि किर होति ॥ ५ ॥ करयलगयमुत्तीणं तित्थयरसगाण चरण-भावाणं । ताणंपि हु जं दुक्करमेयमहो मह मच्छरियं ॥ ६ ॥ मणनिग्गहवीसासो कइयावि न जुज्जए इहं काउं । अप्पडिवायं नाणं उप्पन्नं जा न जीवाणं ॥ ७ ॥ थेवमणदुक्खियस्सवि जाणंतो अइवदारुणविवागं । जइ कहवि खंचिय मणं धारेमी एगवत्थुंमि ॥ ८ ॥ पाणिपुडनिविडपीडियरसं व पेच्छामि तहवि उत्तिगयं । अह ओवायं पुणरावि केरिसमन्नं अणुसरामि ? ॥ ९ ॥ मयमत्तंपिव हत्थिं धम्मारामं पुणोऽवि भंजंतं । दट्ठुं विवेयमिंठो सुहझाणक्खंभमालियइ ॥ १० ॥ उल्लासिओ आणंदो खणमेगं जाव ताव चिंतेमि । ता सिद्धमंतिओ इव दीसइ अन्नत्थ किं करिमो ? ॥ ११ ॥ मणमक्कडेण सुइरं मह देहं तावियं अहो बाढं । ता कह निग्गहिऊणं होहामि अहं सुही एत्थ ? ॥१२॥ सिद्धिपुरीए सिद्धी जाव फुडं तुज्झ होइ रे जीव ! । ता मणराएण समं मा विग्गहउवरमं कुणसु ॥ १३ ॥ अह विग्गहंमि चत्ते पत्ते निक्कंटगम्मि र-

ज्जम्मि । एस तुह त काही मयाचि जह दुक्खिओ होइ ॥ १४ ॥ जह इन्दजालिएण काउ मुट्ठीइ दासिय वत्थू । धारिओ जणेण मुट्ठी दिट्ठ नट्ठ तय वत्थू ॥ १५ ॥ एव चिय मणवत्थू सजममुट्ठीइ धारिय कहवि । सुहभावलोयधरिओ ही नट्ठ हीनपुन्नस्स ॥ १६ ॥ न हु अत्थि किंपि नूण नचलमन्न मणाउ भुवणम्मि । त पुण उवमामेत्त पवणपडागाइ ज भणिय ॥ १७ ॥ साहूण सावगाण य धम्मे जो कोइ वित्थरो भणिओ । सो मणनिग्गहसारो ज फलसिद्धी तओ भणिया ॥ १८ ॥ जत्थ मणो तरलिज्जइ सो सगो दूरओऽवि चइयव्वो । बहुरयणसगाहेण मुज्जगचोराण जह पथो ॥ १९ । जिय[1] अज्ज अह कल्ले परलोए तुह पयाणय होही । दीहरससारकए निरकुस कह मण कुणासि ? ॥२०॥ किमह करेमि कस्स व कहेमि चितेमि अहव कि तत्त ? । जेण मणो पसरत धारेमी मत्तहत्थिव्व ॥ २१ ॥ सपइ सत्थसरीरे सुमरसि न जीव[1] पुव्वदुक्खाइ । कह एसु न उव्वेओ कह होहिसि त न याणामि ? ॥ २२ ॥ जाणिय तत्तपि मणा धारिज्जइ दुक्कर सरलमग्गे । दुक्कर च सिक्खविज्जइ एसो अप्पा दुरप्पा हु ॥२३॥ आनाडिए जिय! दुक्करे जाणासि फिर सजमो हवइ धम्मो । सपइ पुण गयधम्मो परलोए होसि अहह कह ? ॥ २४ ॥ इदियलोलो कोऽविहु वट्टइ सद्दाइएसु विसएसु । तहविहु न होइ तित्ती तण्हाच्चिय वित्थरइ नवर ॥ २५ ॥ इदियधुत्ताण अहो तिलतुसमित्तपि देसु मा पसर । अह दिनो तो नीओ जत्थ खणो वरिसकोडिसमो ॥ २६ ॥ धत्तूरभामिओ इव ठगधुत्तेण व धुत्तिओ सतो । भूएण व सगाठिओ वाएण व दिट्ठिमोहेण ॥ २७ ॥ जह एए अवरेहि जुत्तिसहस्सेण पन्नाविज्जता । ताणविय गाहिलत्त अवियप्प याहराति सया ॥ २८ ॥ तह रागाइनसत्तो न मुणसि थेवपि कज्जपरमत्थ । अह मुणासि तो पयपह चरिएण कह विसवयसि ? ॥२९॥ दुग्गधअसुइपुन्नो थाहि सव्वत्थ चित्तिओ करगो । पट्टसुयनत्त (ढक) णय दाउ पिहिओ य पुप्फेहिं ॥३०॥ दिट्ठो हरेइ चित्त गधो असुईए सरइ त चेव । मूढोऽवि त न गहिउ उणइ मण किं पुण विवेगी ? ॥ ३१ ॥ एव चिय नारीसु वत्थालकारभूसियगीसु । आवायमेत्तरूव पेच्छिय

तत्तं विभावेसु ॥ ३२ ॥ असुईए अट्ठीणं सोणियाकिमिजालपूईमंसाणं । नामंपि चिंतियं खलु कलमलयं कुणइ हिययम्मि ॥ ३३ ॥ पच्चक्खमिणं पेच्छह वन्नियामित्तं तु जइ न पत्तियह । एक्कारससोएहिं नीहरमाणं सया चेव ॥ ३४ ॥ इय तत्तभावणगओ सयावि मणनिग्गहं करेमाणो । पच्चक्खरक्खसीणं नारीण न गोयरो होसि ॥३५॥ जिणवयणभाविएणं सुत्तत्थसमग्गपारगेणंपि । भवभमणभीरुगेणं सुहसंसग्गिपवन्नेणं ॥३६॥ अवगयपरमत्थेणं निच्चं सुहझाणझायगेण मए । कहवि गयं चिय अपहे मणमेयं ही कहं दिट्ठं? ॥३७॥ जह लद्धलक्खचोरो हरमाणो नेव नज्जए दविणं । तह विगयं चिय दीसइ मणंपि एयं कहं होमि? ॥ ३८ ॥ हु दुक्करेऽवि मग्गो विमग्गि एत्थेव अत्थि हूवाओ । खणमित्तंपि न दिज्जइ मणपसरो जं पमायस्स ॥ ३९ ॥ परमत्थं जाणंतो दंसियमग्गो सयावि वट्टंतो । जइ खलइ कोइ कहमवि सरणं भवियव्वया तत्थ ॥ ४० ॥ कित्तियमित्तं वहुसो मणनिग्गहकारणं पयंपेमि । धन्नाण एत्तियंपिहु जायइ चिंतामणिसमाणं ॥४१॥ गुरुकम्माणं एयं पुणरवि जाणावयंपि किर कहवि । पत्तंपि वरनिहाणं वियलियपुन्नस्स व न ठाइ ॥ ४२ ॥ पइदियहं जइ एवं झाएमी तुह जिणिंद ! आणाए । तो जयथुयपायपउम! नाहं वीहेमि भवरन्ने ॥ ४३ ॥ सद्धासंवेगजुओ मणनिग्गहभावणं इमं जीवो । झायंतो निव्विग्घं कल्लाणपरंपरं लहइ ॥ ४४ ॥ इति **मनोनिग्रहभावनाकुलकम्** समाप्तम् ४२ ॥ अथ **धर्माचार्यबहुमानप्रकरणम्** ४३ ॥

नमिउं गुरुपयपउमं धम्मायरियस्स नियमसीसेहिं । जह वहुमाणो जुज्जइ काउमहं तह पयंपेमि ॥ १ ॥ गुरुणो नाणाइजुया महणिज्जा सयलभुवणमज्झंमि । किं पुण नियसीसाणं आसन्नुवयारहेऊहिं ? ॥ २ ॥ गरुयगुणेहिं सीसो अहिओ गुरुणो हविज्ज जइ कहवि । तहविहु आणा सीसे सीसेहिं तस्स धरियव्वा ॥ ३ ॥ जइ कुणइ उग्गदंडं रूसइ लहुएवि विणयभंगंमि । चोयइ फरुसगिराए ताडइ दंडेण जइ कहवि ॥ ४ ॥ अप्पसुएवि सुहेसी हवइ मणागं पमायसीलोऽवि । तहवि हु सो सीसेहिं पूइज्जइ देवयं व गुरू ॥ ५ ॥ जुम्मं । सोच्चिय

सीसो संसो जो नाउ इंगिय गुरुजणस्स । वट्टइ कज्जम्मि सया सेसो भिच्चे वयणकारी ॥ ६ ॥ जस्स गुरुम्मि न भत्ती निवसइ हिययम्मि वज्जरेहव्व । किं तस्स जीविएण ? विडंबणामेत्तरूवेण ॥ ७ ॥ पच्चक्खमह परोक्खं अवन्नवायं गुरूण जो कुज्जा । जम्मंतरेऽवि दुलहं जिणिंदवयणं पुणो तस्स ॥ ८ ॥ जा काओ रिद्धीओ हवंति सीसाण एत्थ संसारे । गुरुभत्तिपायवाओ पुप्फसमाओ फुडं ताओ ॥९॥ जलपाणदायगस्सावि उवयारो नेव तीरए काउं । किं पुण भवन्नवाओ जो तारइ तस्स सुहगुरुणो ? ॥ १० ॥ गुरुपायरजणत्थं जो सीसो भणइ जयपभेत्तेण । मह जीवियंपि एयं जं भत्ती तुम्ह पयमूले ॥ ११ ॥ एयं कहं कहंतो न सरइ मूढो इमंपि दिट्ठंतं । साहेइ अगणि चिय घरस्स अब्भिंतरं लच्छि ॥ १२ ॥ एस च्चिय परमकला एसो धम्मो इमं परं तत्तं । गुरुमाणसमणुकूलं जं किज्जइ सीसवग्गेण ॥१३॥ जुत्तं चिय गुरुवयणं अहव अजुत्तं च होज्ज दइवाओ । तहविहु एयं तित्थं जं कुज्जा तंपि कल्लाणं ॥ १४ ॥ किं ताए रिद्धीए चोरस्स व वज्झमंडणसमाए ? । गुरुवयणमणं विराहिय जं सीसा कहवि वच्छति ॥ १५ ॥ कंडूयणनिट्ठीवणऊसासपमोक्खमइलहुयकज्जं । बहुवेलाए पुच्छिय अन्नं पुच्छेज्ज पत्तेयं ॥ १६ ॥ मा पुण एगं पुच्छिय कुज्जा दो तिन्नि अवरकिच्चाइं । लहुएसुवि कज्जेसु एसा मेरा सुसाहूण ॥१७॥ काउं गुरुपि कज्जं न कहंति य पुच्छियावि गोविंति । जे उण एरिसचारिया गुरुकुलवासेण किं ताण ? ॥१८॥ जोग्गाजोग्गसरूवं नाउं केणावि कारणवसेण । सम्माणाइविसेसं गुरुणो दंसति सीसाण ॥१९॥ एसो सयावि मग्गो एगसहावा न हुंति जं सीसा । इय जाणिय परमत्थं गुरुम्मि रोसो न कायव्वो ॥ २० ॥ मा चिंतह पुण एयं किंपि विसेसं न पेच्छिमो अम्हे । रत्ता मूढा गुरुणो असमत्था एत्थ किं कुणिमो ? ॥ २१ ॥ रयणपरिक्खगमेगं मुत्तु समकतिवन्नरयणाणं । किं जाणंति विसेसं ? मिलिया सव्वेऽवि गामिल्ला ? ॥ २२ ॥ एयं चिय जाणमाणा ते सीसा साहयंति परलोयं । अयरे उयरं भरिउं कालं वोलिंति महिवलए ॥ २३ ॥ एयंपिहु मा जपह गुरुणो दीसंति तारिसा नेव । जे भज्झत्था होउ

जहाठियवत्थुं वियारंति ॥ २४ ॥ समयाणुसारिणो जे गुरुणो ते गोयमं व सेवेज्जा । मा चिंतह कुविकप्पं जइ इच्छह साहिउं मोक्खं ॥२५॥ वक्कजडा अह सीसा केविहु चिंतंति किंपि अघडंतं । तहविहु नियकम्माणं दोसं देज्जा नहु गुरूणं ॥ २६ ॥ चक्कित्तं इंदत्तं गणहरअरहंतपमुहचारुपयं । मणवंछियमवरंपिहु जायइ गुरुभत्तिजुत्ताणं ॥२७॥ आराहणाओ गुरुणो अवरं नहु किंपि अत्थि इह अमियं । तस्स य विराहणाओ वीयं हालाहलं नत्थि ॥ २८ ॥ एयंपिहु सोऊणं गुरुभत्ती नेव निम्मला जस्स । भवियव्वया पमाणं किं भणिमो तस्स पुण अन्नं ?॥२९॥ राहूण साहूणीणं सावयसड्ढीण एस उवएसो । दुण्हं लोगाण हिओ भणिओ संखेवओ एत्थ ॥ ३० ॥ परलोयलालसेणं किं वा इहलोयमत्तसरणेणं । हियएण अहव रोहा जह तह वा इत्थ ससीसेणं ॥ ३१ ॥ जेण न अप्पा ठाविओ नियगुरुमणपंकयम्मि भमरोव्व । किं तस्स जीविएणं ? जम्मेणं अहव दिक्खाए ? ॥ ३२ ॥ जुम्मं । जुत्ताजुत्तवियारो गुरुआणाए न जुज्जए काउं । दइवाओ मंगुलं पुण जइ हुज्जा तंपि कल्लाणं ॥३३॥ सिरिधम्मसूरिपहुणो निम्मलकित्तीएँ भरियभुवणस्स । सिरिरयणसिंहसूरी सीसो एवं पयंपेइ ॥३४॥ इति ॥ गुरुबहुमानकुलकम् ४३ ॥

॥ अथ पर्यन्ताराधना ४४ ॥

सुहिओ वा दुहिओ वा थोवं जीवितु अहव बहु लोए । गा सो करेउ सेयं जइ पावइ पंडियं मरणं ॥ १ ॥ जे संसारे पुव्वं मणुयभवा पाविया तएऽणंता । सव्वाणवि ताण अहो एसोच्चिय लहइ तिलयत्तं ॥ २ ॥ जेण ना सामग्गी पत्ता तुमए अणंतसुहजणणी । ता धीरत्तं काउं ठावसु चंदे नियं नाम ॥ ३ ॥ परहत्थगएण तए पुव्विं रे जीव ! किं न जं सहियं । सपइ सुहडो होउं किं न हु गिण्हेसि जयपडायं ? ॥ ४ ॥ जइ पडिाए तुज्झं विहुरत्तं अत्थि जीवि' अइगरुय । तहविहु कन्नं दाउं एगं चिय सुणह मह वयणं ॥ ५ ॥ अइकडुओऽविहु लिंबो अच्छी निमिलित्तु साहसं काउं । खणमेगं घुंटिज्जइ जह दीहं जीवियत्थीहिं ॥ ६ ॥ तह सुहभावो होउं परामिट्ठि सरसु कुणसु धीरत्तं । चइउं

दुदुम्मोह परिभाविसु एरिस तत ॥७॥ जुम्म ॥ जिणधम्मो मह सरण गुरुणो भावओ नमसामि । सव्वजिएसु मित्ति नियदुच्चरिय च गरिहामि ॥ ८ ॥ आगम्म ज तुमए तीसुवि सयासु मग्गिय भद्द । राहावेहसम त साहिय गिण्हेसु जयपडाय ॥९॥ जइ जिय तुह नवकारो होहिइ हिययमि भावणासहिओ । ता सग्गसिवसुह मह जाणसु करसठिय अज्ज ॥ १० ॥ एय परमरहस्स त निसुण महाणुभाव एकमणो । निग्गयभावियचित्तो ज अज्ज करेमि सुहडत्त ॥ ११ ॥ दाण दाऊण वहु तवपि तविड सुदीहर काल । सील चरिऊण चिर पढिउ नह पागमत्थाइ ॥ १२ ॥ कारिउ जिणभवणाइ सङ्घाए सेविऊण गुरुपाए । सव्वसमवि फलमेय ज अज्ज करेसि धीरत्त ॥ १३ ॥ एय नाऊण तुम मा पत्थसु मणुयसग्गरिद्धीओ । मग्गसु पुणोऽवि एय सुहाण सव्वगवरवीय ॥ १४ ॥ मगलनिहिपायपउमनाहामि जिणे इगेन्न पढिनित्ती । जिणधम्मामि गुरूसु य निविज्ज तुम इम जीव ॥ १५ ॥ इय त पडियविहिणा काउ आराहण चरिमसमए । त नत्थि किंपि पुण कल्लाण ज न पाविहिसि ॥ १६ ॥ ॥ इति पर्यन्तसमयाराधनाकुलकम् ४४ ॥

॥ अथोपदेशकुलकम् ४५ ॥

चितसु उवायमेय ससारे गरुयमोहनियलाओ । चिरकालसेवियाओ रे मुच्चसि इह कह जीव ॥ १ ॥ मोहविस अवणेउ गुरुदेसणमतमग्गयमाओ । परिभाविंतो तत्त उवएसामयरस पियसु ॥२॥ कुणसु दय भणसु पिय मुच परधण चएसु परमहिल । इच्छ निरुभिऊण इदियपसर तह निणेसु ॥ ३ ॥ सयलपि हु सामग्गि धम्मे लहिऊण करवि रे जीव । सयय चोइज्जतो मा हारह एरिस जम्म ॥ ४ ॥ कह एय मणुयत्त कह एसो तुज्झ जीव निणधम्मो । हद्धी पमायजडिओ मा वच्चह घोरससार ॥ ५ ॥ का माया को य पिया को पुत्तो पणइणीवि का तुज्झ ? । जह विज्जुज्जुणो दीसइ एय तहा सयल ॥ ६ ॥ किं नेह किं दविण देहपिहु तुज्झ जीव किं एय ? । नडपेच्छणयसरूव नाउ त चयसु मयमोह ॥ ७ ॥ एत्तोच्चिय जीव तुम भमिओ अइदुक्खिओ अणाहो य । तो तुज्झ परित्ताण निहिय कोणइ मणागपि ?

॥ ८ ॥ निसुणंतो जिणधम्मं हुंकारं देसि वायराहिउव्व । थेवंपि जं न कज्जे वट्टासि तं अहह मूढत्तं ॥ ९ ॥ पेच्छासि तुच्छे भोए नो पासासि नरयगरुयदुक्खाइं । जीव! बिरालेव्व तुमं पेच्छासि दुद्धं न उण लट्ठिं ॥ १० ॥ अन्नभवे विहुरमणो कंपंतो दुस्सहाय वेयणए । हा हा करुणसरेणं पच्छा बहुयं विझूरिहिसि ॥ ११ ॥ सव्वोऽवि तुहुवएसो दिन्नो तत्तंसि जाइ जह बिंदू । पेरिज्जंतो सययं नहु चेयसि कीस अप्पाणं? ॥ १२ ॥ दूरे सहणं दंसणमच्छउ नरउब्भवाए वियणाए । सुव्वंतीएवि जिए उकंपो जायए गरुओ ॥ १३ ॥ सावि तए सहि-यव्वा कहं तए हियय! कहसु सब्भावं । कंटेणावि परिभग्गे जं कंदंतो तहा दिट्ठो ॥ १४ ॥ जइ वियरासि परपीडं नाऊणावि दुक्खकारणं विउलं । तं जाणिय पाणहरं हा परिभुंजासि विसं मूढ ! ॥ १५ ॥ इह काउणं पावं संपत्तो घोरणरयठाणेसुं । नो दीणं विलवंतो छुट्टासि चोरो इव सलोत्तो ॥ १६ ॥ भणसि मुहेणं सव्वं तत्तं अइसुंदरं तुमं जीव ! । जं न कुणासि काऊणं तं मन्ने गरुयकम्मोऽसि ॥ १७ ॥ जाव य इंदियगामो वट्टइ आणाएँ तुज्झ रे जीव! । ता सुमरसु अप्पाणं मा तम्मसु अहव पच्छा उ ॥ १८ ॥ रे गिहकज्जेसु सया दक्खो छेओ अईव सूरोऽसि । भविउं कायरदेहो सुत्तोऽविय सुणासि गुरुवयणं ॥ १९ ॥ कि चिंताए किं पलविएण कि तुज्झ जीव! रुन्नेणं ? । नो कत्थइ कल्लाणं धम्माउ विणा तुमं लहसि ॥ २० ॥ देहामिणं गेहंपिव जं गहियं भाडएण पणादियहं । झरइ सया सव्वत्थवि पडिपुन्नं असुइधाऊहिं ॥ २१ ॥ निच्चं अपोसियं पुण जं मेल्लइ झत्ति नियमज्जायं । तत्थवि का तुज्झ रई ? रे जीव! निल्लक्खणसहाव ! ॥२२॥ जं जं भणामि अहयं सयलंपि बहि पलाइ तं तुज्झ । भरियघडयस्स उवरिं जह खिवियं पाणियं किंपि ॥ २३ ॥ इय जीय! मुणासि परलो-यसंसारे तं विडंबणं सयलं । मन्ने जं न विरज्जासि तं वंछासि नरयदुहाइं ॥ २४ ॥ वयणेणं भणिउमिणं तरामि नो सिक्खिउं चवेडाए । सम्मं विभाविऊणं जं जुत्तं तं करेज्जासु ॥ २५ ॥ एयं उवएसकुलं जो पढइ सुणेइ अहव सद्धाए । सो उवमिज्जइ तेए दुहणेण रयणसिंहे-

ण ॥ २६ ॥ ॥ इत्युपदेशकुलकम् ४५ ॥ ॥ अथ संवेगामृतपद्धतिम् ४६ ॥

शिष्या श्रीधर्मसूरीणा, श्रीरत्नसिंहसूरय । कुर्वते स्वान्तरङ्गाय, संवेगामृतपद्धतिम् ॥ १ ॥ निद्रामुद्रां समुन्छिद्य, द्रव्यभावविभेदत । सावधान क्षण भूत्वा, किञ्चिदात्महित शृणु ॥ २ ॥ धम्माहम्मे आउ पल्लसरूवेण किंपि भन्नत । एगते होऊग परिभावसु निउणबुद्धीए ॥३॥ येनामरयातकेनात्र, केश क्रियेत रण्डश । श्रद्धान तत्र गच्छामि, जिनोक्तादेव नान्यथा ॥ ४ ॥ आयुः सागरदृष्टान्ताद्, यत्पूर्वं भापित जिनै. । दूरे तिष्ठतु तत्तावदत्यन्ताश्चर्यकारकम् ॥ ५ ॥ पल्योद्धारेऽपि मे चित्रमायुपः परिचिन्तनम् । अत्रायुपि कथ तस्मादल्पानल्पत्वचिन्तनम् ॥ ६ ॥ अणवट्ठियपल्लाओ नाऊणमसगय तओ पल्ल । चिंततो नरयदुह कह पाव जीव ! आयरसि ? ॥ ७ ॥ यत'पुण्यान्निछ्रय सर्व्वो , प्रत्यह हन्त भापसे । तत्रापि त्व निराकाक्षो, मूढाना भासि भूपतिः ॥ ८ ॥ बाह्ये रूपे दृशा दृष्टे, यथा चेत. प्रगल्भते । स्वस्यातश्चेत्तथा पश्यन्, धर्मे लिप्येत कोऽपि किम् ? ॥ ९ ॥ संवेगामृतसपूर्णाः, स्फूर्जद्राष्पाम्बुलोचनाः । वैराग्यार्त्ता स्खलद्वाचो, धिग् धिग् मुह्यन्ति तेऽपि यत् ॥ १० ॥ धिगस्त्वाहारनीहारौ, धर्म्मं विनेह दु सदौ । वशामे यद्वदारोहावरोहौ स्त पुन पुन' ॥ ११ ॥ वक्तु जानति भूयासस्तत्त्व जैन मुहुर्मुहु । कार्यत' कोऽप्यनुष्ठातु, धन्यः शक्तो महीतले ॥ १२ ॥ फल्गुवल्गुनरूपाभिर्वाग्भिरस्ताभिर्न किञ्चन । कर्णजाह न या प्राप्ताश्चेतो विध्यन्ति धीमताम् ॥ १३ ॥ प्रायेणामङ्गल मत्वा, न प्रच्छेत्प्रेत्यसकथाम् । ज्योतिर्विदात्थ किं मे स्यादेपमत्त्वाह मूढधीः ॥ १४ ॥ चपेटातोऽपि सिंहस्य, मृत्योर्नाम्नोऽपि भीयते । तथाप्यात्मगता चिन्ता, शक्त. कर्तुं न कोऽप्यलम् ॥ १५ ॥ मेपोन्मेपसमे सौख्ये, सरम्भस्तेऽत्र कीदृश ? । मोक्ष विनापि कल्पादौ, गतु धर्म्मं समाचर ॥ १६ ॥ ताला दत्त्वा क्षणेनैव, मूढ ! यास्यसि पश्यताम् । अत्यर्थं भण्यमानोऽपि, किं न निरुप' बुध्यसे ? ॥ १७ ॥ ज्ञात्वा चक्रे मन पाणौ, दीपिका ज्ञानरूपिकाम् । पश्यन्नपि न

पश्यामि, हहा मे कर्म्मचित्रता ॥१८॥ हस्तप्राप्यः पुरो याति, मृगोऽसौ कनकच्छविः। यथा मे नैति संयोगं, धर्म्माप्तिस्तत्त्वतस्तथा ॥१९॥
शृण्वन्तोऽपि न शृण्वन्ति, जानन्तोऽपि न जानते। पश्यन्तोऽपि न पश्यन्ति, धर्म्मतत्त्वं भवे रताः ॥ २० ॥ शून्यं शून्येन गुण्यं स्यात्,
शून्येन भागहारकः। युक्तेर्दूरे यथैवैतदयोग्ये शिक्षणं तथा ॥ २१ ॥ धर्म्मजागरिकां नित्यं, यां करोमि निशि क्षणम्। मन्येऽहं तामपि
प्रीति, प्रमादं यद्यपि श्रितः ॥ २२ ॥ अहो ध्यान्ध्यमहो ध्यान्ध्यं, जनानां जगतीतले। नाज्ञासिपुः क यास्याम, इत्यन्तर्मुखया धिया ॥२३॥
नापि निद्रां च तन्द्रां च, भोज्यं नापि सुरञ्जतः। जानान्ति चेत्तदा चिन्हं, धर्म्मादन्यत्र रोचते ॥२४॥ वक्तैवार्थस्य चेदस्य, तदा धिग् मेऽस्तु
जीवितम्। धन्योऽस्मि वाञ्छयाऽन्यत्र, वाच्यं स्यात्किं पुनः कृतौ ! ॥ २५ ॥ यःकश्चित् पृच्छ्यतेऽस्माभिः, साम्प्रतं स्थीयते कथम् ?।
अत्यन्तमार्त्त एवेति, सर्व्वस्याप्येकमुत्तरम् ॥ २६ ॥ ऋणरोगकुटुम्बेन, राजतस्करगोत्रजैः। दारिद्र्यधनरक्षादिक्रियापारैर्दुस्थितो जनः ॥ २७ ॥
जानन्नपि न जानाति, वहत्येव हि केवलम्। सर्वमेतदहो मूढः, स्वार्थं कर्त्तुमनादरः ॥ २८ ॥ प्रतिभान्ति स्त्रियो दृष्टा, निर्विकारेण चेतसा।
केषां प्रस्तरसङ्काशाः, केषां विष्ठेकभस्त्रिकाः ॥ २९ ॥ दासीकृतैकपीयूषाः, वैकारिणां पुनः स्त्रियः। विकारतस्तो वैरी, नान्यः कश्चन देहिनाम्
॥ ३० ॥ यात्यवश्यमवशः सन्नखर्वगर्वपर्वतम्। स गन्ता दुर्गतिं सर्वापर्वार्वाग्भागभाविनीम् ॥ ३१ ॥ निश्चयव्यवहाराभ्यां, साक्षाद् दृष्टापि
कोटिशः। संसारमिन्द्रजालं धिग्बुध्यन्ते नैव जन्तवः ॥३२॥ बुद्ध्वाऽलीकभ्रमं सौख्ये, संवेगापूर्णमानसः। तथापि कोऽपि कामेभ्यः, पुण्या-
त्मा विनिवर्त्तते ॥ ३३ ॥ धर्म्मसर्व्वस्वमाख्याय, शिक्षां जीव! वदामि ते। यावज्जीवं त्वयाऽध्येयमेतत् श्लोकचतुष्टयम् ॥ ३४ ॥ औषधं नेत्र-
दानं च, विरेकश्चित्रकर्म्मकः। यथैव पृष्ठतो रम्यं, धर्म्माख्यानमिदं तथा ॥ ३५ ॥ संसारनाटकं सर्वं, पश्यत्युत्फुल्ललोचनः। स्वदेह-
नाटकं स्पष्टं, कश्चिन्नेक्षेत मूढधीः ॥ ३६ ॥ बाल्यतारुण्यवृद्धत्वहास्यरोदनखेदनम्। विषादानन्दकोपादि, कोटिशः पश्य कौतुकम् ॥ ३७ ॥

रहस्य भण्यसे वत्स', मा भून्छिद्रघटोपम । मा कार्षी पृष्ठत' खेद, कालष्टो न चेच्छ्रणु ।। ३८ ।। स्वस्थोऽपि वत्स' नो वेत्सि, मयाऽऽ ख्यात मुहुर्मुहु । जातजातिस्मर प्रेत्य, कर्त्ताऽसि हस्तघर्षणम् ।। ३९ ।। कल्याण मङ्गल कर्त्तुमिहामुत्र च मानवे । मन्यमाने सुधापान, श्रोतव्या धर्मदेशना ।। ४० ।। सुलभा धर्मवक्तारो, यथा पुस्तकवाचका । ये कुर्वन्ति स्वय धर्म्म, विरलास्ते महीतले ।। ४१ ।। (अथ अन्यकृत) कुर्वन्तोऽपि विलोक्यन्ते, सामग्रीवशत कचित् । ये दृश्यास्ते पुन' केऽपि, संवेगामृतपूरिता ।। ४२ ।। संवेगामृतहीनोऽपि, धर्म्मरत्नविनाकृत । विधत्तेऽमीपु य: श्रद्धा, सोऽपि धन्य कलौ किल ।। ४३ ।। त्रिभि कुलकम ।। इति संवेगामृतपद्धति ४६ ।। छ ।।

।। अथ प्राकृते संवेगामृतपद्धति ४७ ।।

शिष्या' श्रीधर्म्मसूरीणा, श्रीरत्नसिंहसूरय' । कुर्वते प्राकृते पद्ये , संवेगामृतपद्धतिम् ।।१।। वेरग्गरगसंगो लग्गइ सव्वगचगिमाचगो । फरसइ धन्नस्स जाण जणयतो जयजयाराव ।। २ ।। जिणसासणसव्वस्स जाणतोविहु जईवि सो विरलो । जा सवेग जतो पुणो पुणो वहइ रोमच ।। ३ ।। जो आममल्लगपिव भिज्जइ भावणजलेण सव्वग । तेण चिय विन्नाओ मन्नेऽह सत्थपरमत्थो ।। ४ ।। जो चूडकवडनाडिओ नडोव्व पयडेइ कोइ रोमच । वेरग्गरगरहिय तपि हु छेया वियाणति ।। ५ ।। ज सव्वेऽवि वियारे सव्वपयारेहि सव्वया नाउं । भाविय-मइणो मुणिणो विसग्गु चुलति त चोज्ज ।। ६ ।। जह अब्भगब्भलीणा विज्जुल्या झलझलेइ पुणरुत्त । पाय धम्मे भावो एसोवि हु केसि धन्नाण ।। ७ ।। हा पुत्तो हा घरणी दविणपियासाइवाउलो तहय । मरणभएण भासतपिहु गिण्हइ जहा लोओ ।। ८ ।। ता वह धम्म सोउ पत्थावो होउ मदपुन्नस्सा? । मन्ने तस्स निउड्डो पुण दुलहो धम्मजोहित्थो ।। ९।। दाऊण हासियाइ भूयाविद्धोव्व कहवि ज छूढो । मदगुरुम-तियाण सो दोसो अहव कम्मस्स ।। १० ।। सट्ठी चिय घडियाओ ठविया धम्मत्थकामभोगेसु । अभयपमा(सा)एण सया जह तह भाविया

ह्वह तुज्झे ॥ ११ ॥ दारुमइउव्व होउं पायं अहुगा जगो सुणइ धम्मं । जेण न भावगइंदं दीसइ केणावि अंगेणं ॥ १२ ॥ धाउसु सुवन्न-
धाऊ संवेगरसोव्व दीसए थोवो । परदेहेवि निविट्ठो तेण न दिट्ठो पिओ कस्स ? ॥ १३ ॥ धाऊसु कणय थोवं परदेहाठियंपि जणइ जह
हारिसं । सव्वरसेसु तहच्चिय संवेयरसोऽवि पुण दुलहो ॥१४॥ संवेगभावणाए रसचव्वगमणुरवणंपि कुणमाणो । पावेमि जं न तत्ति मुत्तिसुहं
तं मह इट्ठंपि ॥ १५ ॥ इय वयणमणुसरंती किरियावेहु जह मणं सुहावेइ । तिहुयणसिरीवि ता नणु करपंकयगोयरं पत्ता ॥ १६ ॥ निद्दा-
घुम्मिराहियओ मन्ने लोओ सुणेइ धम्मझुणिं । जेणुज्झियसंसारो पव्वज्जं नो पवज्जेइ ॥ १७ ॥ गहियाइवि दिक्खाए अज्जावि मन्नामि तं
तहच्चेव । जं उल्लसंतचित्तो नियसत्तिं नो तुलइ धम्मे ॥ १८ ॥ सेविज्जंतं निच्चं सक्करपमुहंपि जणइ उव्वेयं । वन्नसरेणं सव्वं धम्मं
सुत्तूग सुहजगयं ॥ १९ ॥ निरवच्चावेहु धूया दूहवविहवा सवत्तिसंजुत्ता । गयसीला मयपुत्ता धिरत्थु जा एरिसी महिला ॥ २० ॥ हा
दिव्व ! दिव्व! तुमए ईसे महिलाइ किं कओ जम्मो ? । किं न विलीणा गब्भे जं न अखंडो कओ धम्मो ॥ २१ ॥ भणावि भणावि जो इय
धम्मु न कान्नि धरेसि । जीवि तुट्टंति धणुइ जिम्व, वहु पच्छा झूरेसि ॥ २२ ॥ एउ तहारुं एउ महु, एउ करंतु म अच्छि । समहि पलो-
याणि गुणानिह, जइ इच्छहि निवलच्छि ॥ २३ ॥ मणवयणह संवाओ तुहं, जइ जिय! धंमि करेसि । ता मइ माणि वद्धावणउं, अज्जइ
जणु रंजेसि ॥ २४ ॥ एयं झायंतस्स उ पइदियह जस्स वोलए जम्मो । जिणवयणसवणरत्तो धन्नाण सिरोमणी सोऽत्रि ॥२५॥ वायावित्थरु
मत करहु, मा वहुत्तरु देहु । जीविय जम्मण गुरुतणउ, लहु लहु लाहउ लेहु ॥ २६ ॥ जं वालत्तुतकुंपली जोवणु विहासिउ फुल्लु । जाइ
भिलाणी वुड्ढ पणु कइ जिय! विसइहिं भुल्लु ? ॥ २७ ॥ को को न गणेइ मए सगगे अन्ने य संखयं काउं । मूढो न गणेइ पुणो
अप्पाणं तत्थ पविसंतं ॥ २८ ॥ अवियारो वालत्तं होइ वियारो य जुव्वणं पुरिसे । जो उ विवेगपवासो सो वुड्ढत्तं अहन्नाणं ॥ २९ ॥

गाह पडइ वियड्ढो पुच्छिज्जंतो न याणई अत्थ । कह दुद्ध कह दहिय कह महिय कंजिय होई[1] ॥३०॥ दुद्ध होइ कुमारी दहिय उम्मत्त-जुव्वणा नारी । गज्झत्था पुण महिय वुड्ढा पुण कंजिय होइ ॥३१॥ (अन्यकृतमेतत् गाथाद्वयम) कह दुद्ध कह दहिय कह महिय कंजियति रागधा । ह पुण भणामि महिला सव्वाओ कंजिय चेव ॥३२॥ जमि दिणे इय बुद्धी महिलासु तुज्झ जीव! किर होही । तमि दिणे जाणि-ज पु मोक्खाभिमुहो अह जाओ ॥३३॥ एयाण कए पाय पाव पाविंति पाणिणो भुवणे । तह सव्वपिव तम्हा उद्धर एयासु इयबुद्धिं ॥३४॥ विज्जुज्जुलुका मनि रुह, एकह जम्म हरेसि । चिंतहि किंपि न अप्पहिउ, वहु पच्छा झूरेसि ॥ ३५ ॥ नाण विणओ किरिया पियवयण उज्जमो खमा सील । एयाइ जस्स निच्च सकयत्थ जीविय तस्स ॥३६॥ निद्दा वत्ता तत्ती भवण मित्ताणि कोउग जस्स । अइपन्नरसानि निज्जा खिविणेऽवि न समुहा तस्स ॥ ३७ ॥ उज्जमतुरयारूढो पइदिणपढण कस व जो एइ । प वइ जडोऽवि सो इह पडिच्चपुर जयपसिद्ध ॥ ३८ ॥ सव्वरसाण लवण धम्मस्स पभावणा जहा सार । तह गुरुभत्ति मुत्तु नहु अन्न तिहुयणे सार ॥ ३९ ॥ जिणसासणनवणीय धम्म-रहस्स इम पर तत्त । जीवदया गुरुभत्ती परउवयारुत्ति सव्वमय ॥ ४० ॥ सयलोऽवि गुणकलावो अच्चतमहग्घदुल्लहसरूवो । गयनयण वयणपिव न सोहग्ग सीलपरिमुक्को ॥ ४१ ॥ मणिमतमूलियाहिं मूढा जपंति इह वसीकरण । मन्नेऽह पुण नूण जीहाविन्नाणसभूय ॥ ४२ ॥ घत्तालो झसालो वहुथोह्लो होइ इत्थ जो पुरिसो । उचियपि तस्स वयण पाय घिप्पइ न केणावि ॥ ४३ ॥ एय सोउ कहिउ अहवा को को न पडिओ एत्थ ? । विप्फुरइ तस्स सिक्खा सुकय परभवकय जस्स ॥ ४४ ॥ इगु मणु साराहि देहु रहु, इंदियतुरय नभंति । जीउ चडेविणु जाइ तहिं, जइ कम्माइ भगंति ॥४५॥ जीव[1] पराइयतत्तडिय लाविय नलिय करेहि । घरधवइ पुण माहियइ अप्प माणि न धरेहिं ॥ ४६॥ अज्जह कल्लु व नीयडउ इहजम्मह परजम्मु । इय जाणतुवि कइ कराहि दुग्गइगमणह कम्मु ? ॥ ४७ ॥ हुलहुलु रोइ म असुइहिं, भवभीरु

य तुहु जीव ! । समइ वहंतइ किंपि करि जिंव न झूरहि कीव ! ॥४८॥ धम्मुवएसं दाउं अहं जणे संभवंतवयणेहिं । चित्तलिहिउव्व होउं संपइ मूयत्तणं पत्तो ॥४९॥ धम्मागिरं सुणिरेहिं अंतोहासिरेहिं हुंतिभाणिरेहिं । विउसित्तिगव्विरेहिं इह केहिवि पयडिओ भावो॥५०॥ अप्पं निंदहिं परु थुणहि, ईण विरंगु म काहि । कज्जदुवारिं रंगु जइ तो जिय! तुट्ठउ थाहि ॥ ५१ ॥ किं चिंताए किं पलविएण किं तुज्झ जीव ! रुन्नेणं । नो करथइ कल्लाणं धम्माउ विणा तुमं लहसि ॥ ५२ ॥ जाणंतो सिक्खाविओ अवायदंसीहि सुयहरेहिंपि । दुक्खं खु संठविज्जइ एसो अप्पा दुरप्पा हु ॥५३॥ धम्मह सारु परूवियं दंसिउ सिवपुरमग्गु । निद्दलंतिहि लोयाणिहिं, हियडइ किंपि न लग्गु ॥५४॥ ओ ! ताण दुरंताणं धी धी जीवाण जीवियव्वेणं । परगेहपेसणरओ जाणं जम्मो कओ विहिणा ॥५५॥ हियडइ भाउ समुच्छलिओ, जिणि लंघेउ संसारु । जइ मणु होइवि थिरु कहवि चिंतइ एक्कु जि सारु ॥५६॥ भावावियक्खाणि गुरुवयणि, विलसंतइ सवणेहि । गुरुयचमक्कगमकियाहि इय चिंतिउं भविएहि ॥५७॥ जह जह जिज्झइ हियडुलं, कयकज्जिहि छन्नेहिं । किं गुरु अइसयनाणियउ, किं कहिओ अन्नेहि?॥५८॥ मइं अवगन्निउ गुरुवयणु, धम्मि न दिन्निय दिट्ठि । अहह गयउ चिरकालु महु, कीय कुडुंबह विट्ठि ॥५९॥ लच्छि करेविणु पल्लिकरि, सीसं खल्लीकरेहि । विल्लीदुहेविणु अत्थिकरि विणु पुन्निहि न लहेहिं ॥६०॥ मंगलमुहलो लोओ दट्ठुं सोउंपि मंगलं महइ । ईहेइ मंगलाइं कुणइ पुण अमंगलं सयलं ॥६१॥ अंचणरहियं दुद्धं नहु जम्मइ भूरिमंगलेहिंपि । तह हयधम्मे न सुहं धम्मे पुण मंगलं सउगो ॥ ६२ ॥ लिहियं लब्भइ लोइ, काहुं देहिं ऊरियइ । अप्प-समाणा जोइ, जइ पुणु काइं धीरियइ ॥ ६३ ॥ परभवि जिन किय धम्मुला, तह एत्तिउ एउ जोइ । हिवहि पुत्ता! चाग्गियइ, मन रोवइ तुहुं रोइ ॥६४॥ मन्नइ न चेव चोरो चोरियवत्थूणि पुच्छिओ संतो । जाव न जज्जरियंगो विहिओ घोरेहिं घाएहि ॥६५॥ धम्मुज्जमं न काउं मन्नइ साहूहिं चोइओ एत्थ । जाव न नरयं पत्तो विहलं पुण तत्थ मन्तयणं ॥ ६६ ॥ खइरहलट्ठि न फरहरइ जणुहुं उप्परि जाव । खरिहिं

पियारिहि जोइ पउ, किं वेयहि ताव ॥ ६७ ॥ कर जोडिवि अब्भत्थिया, सघह यह हियकार। कान्नि चहुट्टिय चोयणहु, महु दिज्जउहु सइ वार ॥ ६८ ॥ तुहुवि न चेयहिं रे कहग, जइ पुच्छहि परमत्थु। एउ सउ सव्वह नीरिच, चरहु जु रुच्चइ वत्थु ॥ ६९ ॥ इय ससारह दाविउ, दीसइ निच्चु वहतु। परजिउ कोइ न उव्वियइ, तउ पुणु जणइ महतु ॥ ७० ॥ निच्चु विहाणइ मूढ[1] जिय, मइ तुह दिन्निय सिक्ख। अप्प परुवि न रजिय, इयइ सेवियवेक्ख ॥ ७१ ॥ हूअ वलक्खी जीहडी, गहु जापिर सिवमग्गु। किं मह कण्णु कि जणहु, कसुवि ज किंपि न लग्गु ॥ ७२ ॥ भारियकम्मउ जीव[1] तुहु, जइ बुज्झइ ता बुझ। सयलु कुडुव राइसइ, मत्थइ पडिसइ तुज्झ ॥ ७३ ॥ (अन्यक्तेय)। नीयचउक्किहिं मइ भणिओ, धम्मि न लग्गिउ भइ[1]। घोररउदिहिं ठाणि गओ, करुग म काहिसि सइ ॥७४॥ विउसह अचलु दक्खियइ, एहुव ए विणु मग्गु। कुडुवि पयपिउ धम्मु मइ, पुणु कणियावि न लग्गु ॥ ७५ ॥ हा हुलि करिवि मिलेइ जणु, देउलि जोयइ कोडु। जिम्ब उरकुट्टइ तहिं न कि, तेम्ब कुडुविनि कोडु ॥ ७६ ॥ तियलोएऽवि न नज्जइ दुल्लहलभ कयाणय अन्न। संवेग गुणूण नऽन्नो जम्हा सिवोवाओ ॥ ७७ ॥ किं सोया गुरुकम्मो किं व भणिरो अह अणाइज्जो। किं थाऽहमसमयन्नू किं परिवाओ न दइवस्स ॥ ७८ ॥ एयपि हु सोऊण संवेगामयरस पियतोऽवि। ज न जणो असुजल मेल्लतो उज्जमइ धम्मे ॥ ७९ ॥ युग्म ॥ नियमणेण त जिय! पडियरग्ग तण व मनेसि। उम्मग्गगामिओ तह जह सिक्खाए पुण न जोग्गो ॥ ८० ॥ जइ सच्च चिय भीओ भवाउ हिययट्ठियपि ता भाव। असुजलेण दसह कइयाविहु जइ न निच्चपि ॥ ८१ ॥ आयरणपिहु दसह पइदियह गुणगणेहिं वड्ढत। अनह पलावियमेत्त ग्य सयलपि मन्नेमि ॥ ८२ ॥ धम्मपरस्सवि चिंताउरस्स दिन्नोऽवि धम्मउवएसो। सुन्नघरे दीवो इव सुनिप्फलो तस्स नायव्वो ॥ ८३ ॥ अणुवट्ठियस्स धम्म मा हु कहिज्जाहि सुट्ठुवि पियस्स। विच्छाय होइ मुद्द विज्झायग्गि धमंतस्स ॥८४॥ (अन्यक्तेय) गरुयासणे न गरुओ

नहु गुरुओ चारुविविहवत्थेहि । जइ पुण गुणेहिं गरुओ ता गरुयं मुणसु अप्पाणं ॥ ८५ ॥ मा लंघसु ववहारं जइ अप्पा भाविओ फुडं धम्मे । जम्हा लोयाविरुद्धं धम्मपरात्रिहु परिहरंति ॥ ८६ ॥ दुलहंपि वयं घेत्तुं विज्जो नेमित्तिओ य जोइसिओ । जइ होसि गिहत्थेसुं धी धी जम्मो तया तुज्झ ॥ ८७ ॥ जोइसिओ नेमित्ती वेज्जो तह मंतिओ य साउणिओ । जो होज्ज गिहीसु जई हा तेणं हारिओ जम्मो ॥ ८८ ॥ सूईवेहसमाणे अववातपए कयावि कहऽवुत्तो । तुरियकसायवसट्टा मुसलाइ खिवंति नामजई ॥ ८९ ॥ आवडिए मालिन्ने कयावि पुण दंसणस्स अइगुरुए । एयंपि पउंजंतो पभावगो वइरसामिव्व ॥ ९० ॥ जं मह परेहि किज्जइ पायपणामो न तेण तूसामि । अप्पाणमप्पणच्चिय पणमेसु जया तया तोसो ॥ ९१ ॥ तइया वद्धावयणं रसासिद्धीविय महंतया जाया । कयकिच्चं मन्नंतो अमियरसेणं च सित्तोऽहं ॥ ९२ ॥ किं लज्जोसि परोसिं लज्जह नियइंदियाण पंचण्हं । वज्जंतो य अकज्जं सज्जो सज्जोऽसि जइ सुहेसु ॥ ९३ ॥ रयगाओ गुरुकम्मा जे साहू सोहयंति वत्थाइं । सारिसवमेरुवमाणं ताणं सड्ढेहि विवरीयं ॥ ९४ ॥ सामायारि मुत्तुं कयविक्कयधंधयंमि जे पंडिया । किं न ठिया गिहवासे ते साहू जइ विसीयंता ॥ ९५ ॥ पूगीफलपत्ताइं भुत्तु निसि पाणियं धरिय मुहं । वरसियभमीरमुणीणं धिरत्थु पाणे धरंताणं ॥९६॥ ओगाहिमाइदव्वं निसि धरिउं भुंजिराण वीयदिणे । मुणिवेसविडंबीणं किं ताणं नामगहणेण ? ॥ ९७ ॥ ताउ वहंत जि मुणिवरह, कारिवि आणेहि भोज्ज । तिहिं मुणिहिवि तत्थ जइ, तो गोमंसितुलिज्ज ॥ ९८ ॥ एउ जहट्ठिउ मइं कहिउ, मुणिजणु दिक्खि कुणंतु । अवरु वहंतहं पुण हवइ, फुडु संसार अणंतु ॥९९॥ जिणमयरहंमि जुत्ता दो उसग्गाववाय वरतुरया । संविग्गो जाइ तहि जाहि निज्जइ गीयसारहिणा ॥ १०० ॥ विहिलइयहिं जइ जिय भमिसि, ता तुह कज्जह सिद्धि । वलिएण वि पुण एक्कलइ, कारिसि न चिंतिय सिद्धि ॥ १०१ ॥ वालत्तरूव-जुव्वणधणवंतंपि हु खिवंति भूमीए । गयजीवं नाऊणं पुत्तावि धिरत्थु संसारो ॥ १०२ ॥ अप्पाणमप्पणच्चिय वोहेउं भावगब्भवयणेहि ।

जइ ताद ताद तिरि र तो मभे जम्मानहरत्थं ॥ १०३ ॥ पडाउवयसहियय जल व महभवडु-ग्गिसताविय । विरियारहियस्स व वाहियस्स
निरगइ न भावेण ॥१०४॥ सम्मयमाणिहिं ओयरादिं जिण रिद्धओ परलोउ । तिय जइ अप्प ओलखहि, ता सिद्धउ परलोउ ॥ १०५ ॥
ताद अनु रि पंडिय इ, पुणि गुणादि न भेऊओ । धंपइ लोइ पयासिर र, जिण हुउ पडिय पेऊँओ ॥ १०६ ॥ सासिगुलसइ धम्मु करि,मणवायारसु
गोयरु । ईं थक्किरइ हुं दुकरइ, पउ म मारिरि गुरगु ॥ १०७ ॥ सहकिओ गुणिओ से गुणि, घिमाहुरा गुरु देरु । सुमरावताह ज न भणहि,
भाविइ प त म तेरु ॥ १०८ ॥ ज जाव तिहिं जिणवरिदि, स पर सारेसु होइ । पउमाणि धोलिभि पुरगु ज, एओ पहतु न कोइ ॥१०९॥
सालोभि मार्द इअंति भाभि, भणइ फउंगर एभो । सद जि र गुडुतइ भद तागुं, गुणिहुउ न पर पाडु तेईं ॥ ११० ॥ जीर तहारी रिसयी, मजझनि
पमाहि । ने सार्ने । तं मेरिअर आगरि गुर्द्ध पुण गे अपमाहि काभि ॥ १११ ॥ अन लुतेश । तिण पाणिय जिय मच्छली सालोविति करेइ । विगु
पुविनि ले र देहधी,फोधी गुणि र करेइ ॥११२॥ संगुणसेजमोरुविगु गुन्नतो पाभिपदि पुलमार । सहगणि जइ न सोरा आद पदिहरा गुणउग-
पसो ॥ ११३ ॥ सा लिपजेतोहि ओयाव लिलिह कर मंगोहि । केतिलि निरंतेहि समाणिसो सोगुदं पडगर ॥ ११४ ॥ नगणिधी आहारो तस्थं
पुण जे प ते म पस्सकार । पासो प भावार ? संजमजोगं पसाहतो ॥ ११५ ॥ निराए सदू रोसो तोसो तेण पव्वगणदरसाण । गामाइसु तिहि-
रंतो कस्स न तोदं प त्यदितो ! ॥११६॥ तं नहि तिहार पुणो पुणो भोयणोहि मादमु इ । सद सतसेवाए पसाअम भोइ गोडणि जिओ ॥११७॥
निरुविनाय केइ जई सामजईणं मु बहिर वद सेन्ना । गुरु पसणिसाजे सागर पिरोगु भणाणि ॥ ११८ ॥ सूतणसुतण ममा रविरहअरासदी ग
तिण तिरसा म । सद र सउणभउण स अरनाण भ उरसणा भावस ॥ ११९ ॥ भडाणि म भावाभो पमाहरमेण सति प ताभो । पग गुणोइ
पड तो पमाहत्थं न सं सदव ॥ १२० ॥ जव तं सदेण पा ते पुणो भावन्नो न कोइ गोविरजा । पुण्णभगसावरणाभो गहुणा नरं उाणामणो

॥ १२१ ॥ विरलच्चिय इत्यादि ॥ इय रयणसिंहसूरी वुत्तणं काऊ पाणमयभेयं । आणंदामयकुंडे विलसंतो निव्वुइं लहइ ॥ १२२ ॥

इति प्राकृते संवेगामृतपद्धतिः ४७ ॥ ॥ अथ संवेगरंगमालाप्रकरणम् ४८.॥

भावंमि समाही पुण एगंतेणेव चित्तविजयाओ । चित्तविजओ अ सम्मं रागद्दोसाण परिहरणा ॥१॥ तप्परिहारो असुहेयरेसु सद्दाइएसु विसएसु । पत्तेसुऽवि चित्तेसुऽवि अभिसंगपओससंचागो ॥ २ ॥ तम्हा कमग्गलग्गं विवेगरज्जूइ चडुलतुरगं व । सुदढं संजमिऊणं माणसमुस्सिंखलपयारं ॥ ३ ॥ जइयव्वं सव्वेणऽवि सुहत्थिणा सुपुरिसेण निच्चंपि । सम्मं समाहिकरणे विरेसओ धम्मनिरएणं ॥ ४ ॥ असमाहीओ दुक्खं दुहिणो उण अट्टमेव न उ धम्मो । धम्मविहीणस्स पुणो दूरे आराहणामग्गो ॥ ५ ॥ मुत्तुं समाहिमेवं असेससेसंगसंगयावि जओ । सव्वा सुहसामग्गी दावग्गी चेव पुरिसस्स ॥ ६ ॥ जं वा तं वाऽसिरिसावि जेण व केणावि पाउअस्सावि । जत्थ व कत्थ व वासिस्स जंमि कंमिवि अहव काले ॥ ७ ॥ जं वा तं वा विसमं समं व संपावियस्स य अवत्थं । परमसुहं चिय निच्चं समाहिमंतस्स पुण नियमा ॥ ८ ॥ सुक्ख व समाहिकयं अभयं अकिलेसजं अलज्जणिअं । परिणामसुंदर सवसमक्खयं निरुवममपावं ॥ ९ ॥ मज्झत्तामित्तएणावि सुसमाहिठियस्स धीरपुरिसस्स । जं सो न रमइ कस्सवि न यावि से रमइ कोऽवि परो ॥१०॥ जे सुसमाहिंमि रया विरया नीसेसपावठाणाओ । सुहिसयणधणाइविणासदंसणेऽवि हु न तेसि मणो ॥ ११ ॥ अचलव्व चलइ थेवंपि न संजमाओ ममत्तचत्ताणं । सुसमाहिनिही भयवं रायरिसिनमीह दिट्ठंतो ॥ १२ ॥ समाधिद्वारम् ॥ एसो अ समाही चित्तविजयजणिउवि नहु थिरो होइ । जइ नियमणं चरंतं वारं वारं न सासेइ ॥ १३ ॥ पोअवहणं व चित्तं चिंतासागरगयं परिभमंतं । अन्नाणपवणपेल्लियविसुत्तियावीइहम्मंतं ॥ १४ ॥ पडियं मोहावत्ते कह लगिज्जा समाहिवरमग्गे । जइ जोइज्ज न सम्मं अणुसासणकन्नधारो से? ॥ १५ ॥ दोसाण नासणं गुणपयासणं मोणसासणं इत्तो । चित्तस्स

तुन्ह तय एत्र सुसमाहिओ कुन्ना ॥ १६ ॥ हभो चित्त ! विचित्त निच्च च तुमपि वहसि बहुभावे । किंतु परे ततेहिं मोहेइ तुम तु णप्पाण ॥ १७ ॥ सइ रूईयगीयनच्चियहसियाइवियारओ जण दट्ठ । मत्त य हिअय तह त कहेसु जह नासि हसणीय ॥ १८ ॥ मोहभुयगमन्द्ध सुचिमतुल्यिट्ठिय जयमसत । किं न पुरत्थ पिच्छसि ? विवेयमत न ज सरसि ॥ १९ ॥ जम्मजरमरणसिहिणा भवभवणे सव्वओ पलित्तम्मि । नाणोदहिमयगाहिय सुत्थत्त लहसु हिअय ! तुम ॥ २० ॥ हियय ! तुमे एस कओ भववासणवागुराइ मह वधो । ता तह पसिय इयाणि जह तव्विगमो लहु होइ ॥ २१ ॥ किं चित्त ! चिंतिएहि विहवेहिं अत्थिरेहि अह न तुम । तत्तण्हाविगमो ता सतोसरसायण पियसु ॥ २२ ॥ मित्ताभित्तेसु समा चित्त ! पवित्ती जया तुम होही । लहिहिसि त तइयाच्चिय सुहमवगयसयलसताव ॥ २३ ॥ नरतिदियवेरिमित्ते भवमुक्ने सुहसुहे तणमणीसु । जइ लिट्ठुकचणेसु अ सममसि ता मण ! कयत्थमासि ॥ २४ ॥ दुच्चारम्मि मच्चु पच्चासन्नीभवतमणुममय । हे हिअय ! चिंतसु तुम किं सेसवियप्पजालेण ? ॥ २५ ॥ हे हियय ! चिंतसि तुम नाऽणज्जजराइ जज्जरिज्जति । नियतणुकुडिपि एय अहह महामोहमहिमा ते ॥ २६ ॥ जत्थ जरमरणदारिद्दरोगसोगाइदुहगणो लोए । तत्थवि कह तुम मूढ ! हिअय ! न विरागमुव्वहसि ॥ २७ ॥ जीयपि तणुम्मि गयागयाइ सासच्छलेण कुणमाण । किं न मण ! मुणासि जेण चिट्ठसि अजरामर व तुम ॥ २८ ॥ सह रागेण मण ! तुम मुहाभिमाणाउ भमडिअ सुइर । चय त भय तदुवसम इयाणि ज मुणसि सुहभेअ ॥ २९ ॥ अविवेअत्ता बालत्तणम्मि विलयत्तणाउ वुड्ढत्ते । मण! धम्मचित्तविरहे लद्धुवि विहलो नरभवो ते ॥३०॥ मयरद्धइक्कमित्त कुगइमहादुक्खसतइनिमित्त । विसयाणुगामि चित्त मोहुप्पत्तीइ हेउ च ॥ ३१ ॥ अविवेअविडविकद चदणरुक्खव्व दप्पसप्पस्स । नीरधमेहपडल सन्नाणमयकवियस्स ॥३२॥ तारुन्नपि हु तुह मण ! उम्मायपरस्स निजकालपि । सन्नाणत्थरूए चिअ न धम्मगुणसाहग पाय ॥ ३३ ॥ एय कय इम पुण करेमि काह इम च

गिहकिच्चं । इय आउलस्स तुह हियय! वासरा जंति अकयत्था ॥ ३४ ॥ एयं करेमि इण्हिं एयं काऊण पुण इमं कल्ले । चिंतइ सुमिणिअतुल्लंमि जियलोए ॥ ३५ ॥ कत्थ गयं होसि गयं ? मण! काउं किं व होहिसि कयत्थं ? । थिरयाइ गच्छ कुणसु अ न गयस्संतो न य कयस्स ॥ ३६ ॥ चिंतासंताणपरं जइ चिट्ठसि चित्त ! निच्चकालम्मि । अच्चंतदुरुत्तारे ता रे निवडसि दुहसमुद्दे ॥ ३७ ॥ हा हिअय! किं न चिंतसि जमेसरियरूवचरणछाकिल्लो । वित्थारियपक्खदुगो तिलोअपउमस्स सारं च ॥३८॥ पिवमाणोऽवि पइदिणं अतित्तिमं चेव अखलिअप्पसरो । सव्वजगज्जीवतुल्लो इह कीलइ कालभमरल्लो ॥३९॥ जुम्मं । पवसंतो सल्लंपिव पयईएवइदिणंपि पीडकरा । जे कामको-हपमुहा अब्भिंतरसत्तुणो तुज्झ ॥ ४० ॥ निच्चं देहगय च्चिय चित्त! तदुच्छायणे न वंछाहि । वज्झारिसु पुण धावसि अहो महामोहमाहप्पं ॥ ४१ ॥ वज्झारिसु भित्तत्तं करसि सत्तुत्तणं सरीरीसु । जइ ता हे हियय! तुमं अइरा साहसि सकज्जंपि ॥ ४२ ॥ मुहमहुरकडुयविवागेसु हिअय! विसएसु मा कुणसु गिद्धिं । विहिवसाविज्जमाणा सुतिक्खदुक्खं इमे दिंति ॥ ४३ ॥ जइ पढमंपि न रज्जसि मुहमहुरवसाणविरस-विसएसुं । ता हियय! तुमं पच्छावि लहसि न कयावि संतावं ॥ ४४ ॥ विसएसु विणा न सुहं विसयावि भवंति बहुकिलेसेहिं । ता तव्वि-मुहं चिंतसु सुहंतरं किंपि हे हियय! ॥ ४५ ॥ अह आवायं विसयाण पिच्छसे जइ तहा विवागंपि । ता चित्त! एत्तिय तुमं न कयावि विडं-वणं लहसि ॥ ४६ ॥ विसतुल्लविरायवंछाई कीस हे हियय ! वहसि संतावं?) तं किंपि चिंतसु तुमं होइ जओ निव्वुई परमा ॥४७॥ तह विसयासाछिद्देण नाणजणिआ गुणा गलिस्संति । ता ठयसु तं तुमं मूढ ! हियय तेसि थिरत्तकए ॥ ४८ ॥ विसयासावाउलीजणियरओ-गुंडियं कह न हियय! । सहजायकरणवग्गस्स लज्जसे भमिरमाणिवद्धं ॥ ४९ ॥ कामरसजज्जरे रे तुमंमि मणकुंभ कम्ममलहरणं । भवसंताव-खयकरं न ठाइ सव्वन्नुवयणजलं ॥ ५० ॥ अह तांपे ठियं कहमवि किं नो पसमइ कसायदाहो ते ? । सररोनि किं न भिज्जइ जो तुह

अविवेयमलगठी? ॥ ५१ ॥ हि हियय ! सुदराविहु सदा रूवाणि रसविसेसा य । गधा फासा य वरा तावच्चिय तरल्यांति तुम ॥ ५२ ॥ जाव न सम्म अवगाहिओ तए तत्तगोहरयणिल्लो । सुहसलिलपूरपुन्नो सुअनाण अगाहमयरहरो ॥ ५३ ॥ जुम्म ॥ किं बहुणा दाणेण? किं वा बहुणा तवेण ताविण्ण ? । कट्ठाणुट्ठाणेणावि बज्झेण किमत्थ बहुणावि? ॥५४॥ किं व पढिएण बहुणा जइ ता मण! मुणासि अप्पणो पत्थ । ता रागाइपयाओ विरमसु रमसु अ अरागपए ॥५५॥ कासिणाहिविलसमीवे बहुछिद्द चारुचदणदलेहिं । काउ गिहं तदतो अ मालईकुसुमसयणिज्जे ॥ ५६ ॥ निइ जिगीससि तुम ज सुहमेयति फइ हे हियय ! । अहिलससि विसयसं नीरागत्त विमुत्तूण ॥५७॥ जुम्म ॥ हियय ! सकिलेसविहवेहिं सुहकए कामिण्णहिं किं मूढ ! । अप्पाण सतोसे निवेसिउ होसु त सुहिअ ॥ ५८ ॥ जणयति किलेस अज्जणमि मोह सगज्जिआओ अ । गोव पर च नासे पयइएच्चिय विभूईओ ॥५९॥ ता तासु कुगइगमणवत्तिणीसु रायग्गिचोरसज्जासु । हे चित्त! तत्तचिंतणपुरस्सर चयसु पडिबध ॥ ६० ॥ इदियगेज्झ ज किंचि फत्थई इत्थ अत्थि वत्थु न त। थिरमह तत्थवि जइ रमसि मण! तुम चेव ता मूढ ॥ ६१ ॥ इक्क निययाणुभावा बीय पुण जिणवरिंदवयणाओ । करिकलहकन्नपालीतरलतरत्त खु पगईए ॥ ६२ ॥ ससारसमुत्थसमत्थवत्थुसत्थरस मण ! मुणित्ताण । मा पडिबध बधसु खणमत्तावि हु तुमं तत्थ ॥ ६३ ॥ जुम्म ॥ तह अत्थऽज्जणरक्खणवयणकय वेयण न पावेसि । मण! परमानिव्वुई ते भवेऽवि सतोसओ होही ॥ ६४ ॥ सतोसामयरससिंचमाणमाणससुह सया ज ते । तमसतुट्ठे कत्तो ? इओ तओ चिंतणाऽऽसत्ते ॥ ६५ ॥ तमुदारत्त त चिअ गुरुत्तण तह तमेव सोहग्ग । सा कित्ती त च सुह सतोसपर तुम मण ! ज ॥ ६६ ॥ दीणत्तमोसि अत्थी लद्धत्थ गव्वमपरितोस च । नट्ठधण पुण सोग सुहेण चिट्ठसु मण! निरास ॥ ६७ ॥ सजोगा सवियोगा विस व विसयावि परिणईविरसा । काओ अ बहुअवाओ रूव खणभगुरसरूव ॥ ६८ ॥ एव परोवएस दिंतस्स जहा मह फुरइ वयणे । तह जइ चित्त !

तुमंमिवि एवं ता किं न पज्जत्तं ? ॥ ६९ ॥ किंपिहु निप्फज्जंतंपि किंपि निप्फन्नमिह परं सुक्खं । अकयपि कीरमाणं परं च विहडइ जहा
भंडं ॥ ७० ॥ तहगब्भाइअवत्थं विविहं पाविंसु पाणिणोऽणेगे । विहडंते मुणिउं चित्त! चिंतेसु किंपि सुहाचिंतं ॥ ७१ ॥ जुम्मं। इक्कंपि तुम
बहुवत्थुचिंतणा चित्त! पाविसि बहुत्तं । तह भूयं पुण पत्तिय कस्स न दुक्खस्स होसि पयं! ॥७२॥ सयलन्नवत्थुचिंतं चइसु ता चित्त! चिन्तसु
परं तं। इक्कंपि किंपि वत्थुं जेण परं निव्वुइं लहसि ॥७३॥ लच्छीहिं जइ न मज्जसि नयावि रागाइयाण वसमेसि । रमणीहिं न हिरिज्ज-
सि तरलिज्जसि नेव विसएहिं ॥ ७४ ॥ संतोसेण न गुज्झसि आलिंगिज्जसि य जइ न इच्छाए। पावं च जइ न चिंतसि तह चेव न मुच्छता
चित्ता! ॥ ७५ ॥ जं नियमिय अप्पाणं न रागदोसाइनिग्गहो विहिओ । न य सुहझाणग्गीए दड्ढो कम्मधणपबंभो ॥७६॥ विसएहिंतो खं-
चिय धरिओ सारे न इंदिअग्गामो । तं किं न तुज्झ हे चित्त! मुत्तिसुक्खंमि वंछावि ? ॥७७॥ चउदि विसेरायं । साज्जिज्जंति न करिणो न
पक्खरिज्जंति तुरयघट्टाइं । नायासिज्जइ अप्पा वावारिज्जइ न खग्गंपि ॥ ७८ ॥ किंतु सुहज्झाणेणं अरिणो रागाइणो हणिज्जंति । तहवि तुमं
माणस! कीस परिभवं सहसि तेहिंतो ॥ ७९॥ जुम्मं । गुरुकहिओवाएणं पढमं सालंबणं पयत्तेणं । अब्भसिऊणं जोगं वियलियनीसेसपच्चूहे
॥ ८० ॥ जइ वज्जसि सयचिंता वावारविवज्जणा निरालंबे । तत्ते परे निलीयसि ता चित्त! न चेव चरसि भवे ॥ ८१ ॥ चिगरिसिसुभासि-
याइं अणेगसो पढसि सुणसि तह निच्चं । भावेसि य अइनिउणं तप्परमत्थं च बुज्झिसिय ॥ ८२ ॥ न उण अणुभवसि पसमं न य संवेगं
नयावि निव्वेअं । न मुहुत्तमित्तमवि तह तब्भावत्थेण परिणमसि ॥ ८३ ॥ नियबोहवाहगेणं हे हियय! कहिपि जिणमएणावि । मउलाविज्ज-
सि वाढं मूढ! तुमं सव्वहावि जओ ॥ ८४ ॥ कइयावि सहसि नहोयलएगंतुस्सग्गतरालियं संतं । कइयावि वससि रग्गायलमववाअक्किचाए नि-
लीनं तु ॥ ८५॥ उस्सग्गदिट्ठिणो तुह अववायठिया न चेव रुच्चंति । अववायदिट्ठिणो उण उस्सग्गठिया न रोअंति ॥ ८६ ॥ तह दव्वखेत्त-

कालाइयाणमणुसारओ जहाविसय। उभयपयसेवगा जे अ तेऽवि नो तुज्झ रोयति ॥ ८७ ॥ उस्सग्गप्पमुहसमत्थनयमयमयमरोअमाणस्स। कह नज्जइ निरवज्जा मण' जिणमयपरिणई तुज्झ? ॥ ८८ ॥ तव्विसए सुआनिहिणो बहु पुच्छासि विकि (जे विकी) रएतत्त। नायति किंपि दम निरुवसम चित्त' घित्तूण ॥ ८९ ॥ एव च तुज्झ न गिलाणकज्जविसया णु जायए चिता। कालाणुरूवगुणिगोअर च न पमोअकरण च ॥ ९० ॥ धर्म्मठ्ठथिरीकरणोधयूहणाइवि न चेव सव्वत्थ। अविगाणेण चिंतसि साहिप्पाया जइ कहिंपि ॥ ९१ ॥ जुम्म ॥ एवाविह च कुग्गहचक्क छित्तु विवेअचक्केण। सक्कोवाहिसुद्ध सद्धम्मे कुणसु पडिवध ॥ ९२ ॥ (आत्मानुशास्तिद्वार) जइ ता तत्तगवेसी ता अणणुभवेऽनि माणिअ सव्व। अह न तहा ता तम्माणणेऽवि सव्व अणणुभूओ ॥९३॥ हियइन्दियाइ जह जह सपज्जतीह कहवि जीवाण। तह तह विसेसतिसिय चित्त दुहिय चिय वराय ॥९४॥ रागाईहि यऽनत्थ इओ तओ साहिउ किलेसवसा। जह जह तमणुभवेइ तह तह परिवुड्ढई रोगो ॥९५॥ उवभोगोवायपरो पसमेउ महइ विसयतण्ह जो। नियछायक्कमणकए परोऽवरण्हे पहावेइ॥९६॥ सुद्धवि भुत्ता भोगा सुट्ठुवि रामिय पिएहिं सह निच्च। सुट्ठुवि पिय सरीर हा' जिय' कइयावि मुत्तव्व ॥ ९७ ॥ जम्हा उ विसेसेण सीयति इमेसु कयमणा मणुआ। एएण कारणेण विसयत्ति निरुत्तमेएसिं ॥ ९८ ॥ एए उ महासल्ल इम महासत्तुणो पर लोए। एए उ महावाही एए य परमदारिद ॥ ९९ ॥ सल्ल हिअयनिहित्त न सुहल्ल देइ देहिणो उ जहा। अतो विचिंतिआ तह विसयावि दुहावहा चेव ॥ १०० ॥ जह नाम महासत्तू दावेइ कयत्थणाउ विविहाओ। एमेव य विसयाविहु अहवा एए परभवेऽवि ॥१०१॥ जह नाम महावाही विहुरत्त कुणइ इहभवमि तहा। विसयावि नवरमेए भवतरेसुवि अणतगुण ॥ २ ॥ ठाण पराभवाण सव्वाण जहेह परमदारिद। विसयावि किर तहच्चिअ पराभवाण पर ठाण ॥३॥ पत्ताइ पाविंती-पाविज्जती य बहूणि बहुसोऽवि-। परिभवपयाइ पुरिसा ते जे विसयामिसपसत्ता ॥ ४ ॥ मन्नइ तणपिव जग सदेहपयमि पविसइ

भयंमि । मरणस्सवि देइ उरं अपत्थाणिज्जंपि पत्थेइ ॥ ५ ॥ लंवंति समुद्दं भीसणंपि साहंति गोरवेयालं । कि वहुणा ? विसयकए पविसंति जमाणणोवि नरा ॥६॥ गरुयंपिहु परिवज्जिय कज्जं विसयाउरो मुहुत्तेणं । तं कुणइ जेण हासो जावज्जीवं जए होइ ॥७॥ वच्चइ पिउणोवि वहं वंधुं सत्तुं व मन्नई मूढो । होइ अनिद्धकज्जो विसयगहपारिगओ पुरिसो ॥८॥ विसया अणत्थपंथो विसया माहप्पलुंपगा पावा । विसया लहुत्तपयडी अक्कंडविहुरकया विसया ॥ ९ ॥ विसया अवमाणपयं विसया मालिन्नकारणमवग्गं । विसया दुहिकहेऊ इहपरभववाहगा विसया ॥१०॥ खलइ मणो गलइ मई परिहायइ पोरिसंपि पुरिसस्स । विसयासत्तस्स गुरुवइट्ठमिट्ठंपि वीसरइ ॥११॥ सा जाइ तं च कुलं सा कित्ती भुवणभूसणपयंडा । जइ ता विसयपसत्ती ता फुरिआ वामपाएण ॥१२॥ जिणवयणदक्खचक्खूवि पिक्खए पिक्खणिज्जभावे ता । जा नज्जवि विसयपसत्तिलक्खणा नीलिमा न भवे ॥ १३ ॥ धम्माभिप्पायपईवओ मणोमंदिरंमि ता फुरइ । जावज्जवि विसयपसत्तिलक्खणा नेइ वाऊली ॥ १४ ॥ सव्वन्नुवयणपोओ ता भवजलहिउत्तारणसमत्थो । विसयप्पसंगपवणो जावज्जवि नावकूलेइ ॥ १५ ॥ विमलंपि जीवसखे गडाट्ठियं सहइ ताव सीलजलं । विसयाभिनिवेसासुइसंगा कलुसिज्जइ न जाव ॥ १६ ॥ निम्मलविवेयरयणं तावज्जवि दिप्पए, पयासे वा । विसयप्पसंगपंसू जावज्जवि नावगुंडेइ ॥ १७ ॥ धम्मं काउमसत्ता विसयपसत्ता गिहीणतमसत्ता । अत्ताणं अत्ताए न मुणंति हियं च न कुणंति ॥ १८ ॥ सन्नाणमणिफुरंतं पवित्तचारित्तरयणचंचइयं । ओ ! विसयचंडचरडा लुंटंता जीवभंडारं ॥ १९ ॥ सा तुंगिमा स तेओ तं विन्नाणं गुणावि ते चेव । सव्वं खणेण नट्ठं धिरत्थु विसयाभिलासस्स ॥ २० ॥ हन्नी अलद्धपुव्वं जिणवयणरसायणंपि घुंटेउं । विसयमहाहालाहलहल्लोहलिएहिं उग्गिलियं ॥ २१ ॥ सुहचारीए अप्पाणं पावा पावासवेसु अप्पाणं । (आप्यायन्तम्) अप्पाणं अप्पाणं (अप्राणं) विसयाण कए कयत्थंति ॥ २२ ॥ लुद्धियं सीहं कुविअं च पन्नगं सुवहुमच्छिगं च महुं । आहणइ सो णणज्जो जो विसएसुं

कुणइ गिद्धिं ॥ २३ ॥ उयविसइ स सूलाए पविसइ य जलतजउहरस्सतो । कुतग्गमि अ नच्चइ करेइ विसएसु जो गिद्धिं ॥ २४ ॥ अहवा सीहपमुहा हुति निणासाय तब्भवे चेव । एए पुण हयविसया अणतभवदारुणविवागा ॥ २५ ॥ विमए सेवति जडा अरईदुक्खस्स पसमण-निमित्त । त पुण तेहिं दढयर उच्छलइ घएण जलणुव्व ॥२६॥ सूरावि विसयगिद्धा मुहजोआ हुति महिलियाणपि । जे पुण ताण विरत्ता ते देवाणपि पणइपय ॥ २७ ॥ मोहमहागहगहिओ सहिओ अरईइ धम्मरइरहिओ । विसयवसो यावारस्स मणवयकाए अविसएणि ॥२८॥ दुलह चरित्तरयण रातियामिकासि कहिंचि विसयवसो । पावइ दुगुछिअत्त जावज्जीवपि सयलजणे ॥ २९ ॥ आवायमित्तसुहयावि किपि वहुभाविभयनिमितत्ता । विसया सप्पुरिसाण सेविज्जताबि दुहजणया ॥ ३० ॥ हा धी विलीणवीभत्थकुच्छणिज्जमि रमइ अगमि । किमउव्व ग्गस जीवो दुहपि सुक्खति मन्नतो ॥ ३१ ॥ ता ताण कए दुहसयनिवधण कुणइ बहुविह जीवो । आरभमहापरिग्गहमओ उ घधपि पावाण ॥ ३२ ॥ तो नरयवेयणाओ निरियगईओ पाउणइ वहुसो । इय जरियजतुणो मज्जियाइपाणोवमा विसया ॥ ३३ ॥ जइ हुज्ज गुणो विस-याण कोडवि ता नहु जिणिंदचक्किनला । दूरुज्झियविसयसुहा धम्मारामे तह रमता ॥३४॥ ता एय नाऊण पसत्थपरमत्थदिट्ठिणो होउ । चयह मिय विसयसुह अपरिमिय भयह पसमसुह ॥ ३५ ॥ जेणमकिलेससाहणमलज्जणाय विवागसुदएय । पसमसुहमिमाहितो णताणतेहिं सगुणिय ॥ ३६ ॥ ता सकयत्था इत्थेन गाढपडिवद्धमाणसा धीरा । धन्ना तिच्चिय परमत्थसाहगा साहुणो निच ॥ ३७ ॥ अणवरयमरणरणरणय-भीसण पिच्छिऊण ससार । चत्तु विस व विसम विसयसुह जेहिं दूरेण ॥ ३८ ॥ विसयासासदाणिआचित्ता य अपत्तविसयसुक्खावि । हिंडति कडरीउव्व तओ मओ घोरससारे ॥ ३९ ॥ सवेगगब्भसुपसत्थसत्थसवण हि होइ धन्नाण । सवणेऽवि धन्नतराण चेव तस्सम्समापत्ती ॥ ४० ॥ जह तह सवेगरसो वन्निज्जइ तह तहेव धन्नाण । भिज्जति खित्तजलामिम्मयामकुभव्व हियथाइ ॥ ४१ ॥ सारोऽविय एसुच्चिय

दीहरकालंपि चिन्नचरणस्स । जम्हा तंचिय कंडं जं विंधइ लक्खमज्झेऽवि ॥ ४२ ॥ रूबे चक्खू पडिमा य देउले रसवईइ जह लवणं । तह परलोगविहीइ सारो संवेगरसफासो ॥ ४३ ॥ सुचिरंपि तवो तविउं चिन्नं चरणं सुअंपि बहु पांढअं । जइ नो संवेगरसो ता तं तुसखंडण सव्वं ॥ ४४ ॥ तह संवेगरसो जइ खणंपि न समुच्छलिज्ज दिवसंतो । ता विहलेण किमिमिणा वज्झाणुट्ठाणकट्ठेणं ? ॥ ४५ ॥ पक्खंतो मासंतो छम्मासंतोऽवि वच्छरस्संतो । जस्स न हुज्जा तं जाण दूरभव्वं अभव्वं वा ॥४६॥ एसो पुण संवेगो संवेगपरायणोहिं परिकहिओ । परमं भवभीरुत्तं अहवा मुक्खाभिकंखित्तं ॥ ४७ ॥ संवेगभावियमई जंवेलं होइ संवरपविट्ठो । अग्गीव पवणसहिओ समूलजालं दहइ कम्मं ॥ ४८ ॥ जीवियजलंमि झीणे सरीरसस्सांमि परिब्भसंतंमि । कोऽवि हु नत्थि उवाओ तहवि जणो पावमायरइ ॥ ४९ ॥ इट्ठजणं धणधन्नं विसया पंचंगवल्लहं देहं । इक्कपए मुत्तव्वं तहावि दीहास जीवाणं ॥ १५० ॥ इति संवेगरंगमाला सम्मत्ता ॥

॥ अथ श्रावकवर्षाभिग्रहाः ४९ ॥

वर्षाचतुर्मासकाभिग्रहा यथा-वारचतुष्टयं चैत्यवन्दना दिनमध्ये कार्या, वारमेकं पूर्णा, मासमध्येऽष्टविधपूजा वारचतुष्टयं कार्याः, चतुर्मासमध्ये एकावस्त्रपूजा कार्या, गृहे देवगृहे वा स्नानमेकं कार्यं, अष्टम्यां चतुर्दश्यां च देवालयप्रमार्जनं प्रदक्षिणा च देया, जिनभवनमध्ये आशातनादशकं रक्षणीयं, ग्रामस्थेन प्रतिदिनं धोतिर्विधेया, ज्ञानपञ्चमपि विशेषपूजा कार्या, एका पुस्तकपूजा च, चतुर्मासकेऽपूर्वपाठे गाथाः ५०० पठनीयाः, तथा चतुर्मासके प्रतिक्रमणं पोडश वारा कर्त्तव्यं पोडश सामायिकानि ग्राह्यानि, मासमध्ये पञ्चदश वन्दनकानि दातव्यानि, उभकालं प्रत्याख्यानं देशावकाशिकं च कार्यं, मासे स्वाध्यायसहस्त्रत्रयं कार्यं, मासे कायोत्सर्गचतुष्टयं विधेयं, चातुर्मासकमध्ये वारात्रिंशतं ३०

व्याख्यानश्रवण कार्यं, सम्प्राप्ते दिनमध्ये वारमेक साधुवन्दना, मासमध्ये सम्भवे सति साधोर्विश्रामणा वारद्वाय कार्यो, स्थूलप्राणातिपातस्य द्विविध त्रिविधेन नियम , स्थूलमृषावादस्य द्विविध त्रिविधेन नियम', स्थूलअदत्तादानस्य द्विविध त्रिविधेन नियम , चतुर्थव्रतविषये परस्त्री-सम्भोगस्य कायेन नियम , धणधन्नखेत्तवत्थूरुप्पसुवन्नदुपयचउप्पयाविषये मित प्रमाण कार्यं, दिग्व्रतविषये पूर्वस्या योजनदशक मुत्कल, पश्चिमाया योजनदशक दक्षिणस्या योजनपञ्चाशत् मुत्कलानि, उत्तरस्या योजनदशक, एतद्गमन मुत्कल नाधिक, उपभोगपरिभोगव्रते मद्यमासनवनी-ताना नियमः, मधु नवनीत च औषध मुक्त्वा न परिभोग्य, अज्ञात सचित्तानत काय च, दिनप्रति द्रव्य२५ विगइ ४ सचित ६, दीपोत्स-वादि पर्व मुक्त्वा दिने २ पान२० पूग ५, क्रीत्वा शतपत्रिकापुष्पाणा नियम , लब्धाना शतद्वय मुत्कला, कणमाणा ३ स्नेहकर्ष २ सूपडीया २ जलपाने पानीयकरक ३ गपितफलमाण १ गणितफल १६ जबू ५० तोलियवस्तु पल ८ वीरत्रीयलि ७ | आथाणा २ योजन ८ मासे स्नान ३ पानीय घडओ ॥ १ ॥ अगोहलि ३० पानीयमो ५ स्नानाभ्यङ्गे स्नेहक १ सर्वविलेपनेपु ४, द्विविधस्य रात्रिभोजनस्य धरणादिक मुक्त्वा नियम , स्थूलकर्म्मादाननिवृत्ति ९, ' इगालीं घणसाडी ' प्रभृतय , चतुर्विधेऽनर्थदण्डे यत्नो विधेय , पोषधव्रते पञ्चम्यामष्टम्या चतुर्दश्या एकभक्त अस्नान ब्रह्मचर्यं च, चतुर्मासकपर्युषणादिने विकृतिपरिहार , एतेषु पर्वसु स्वयकरणेन क्रियाया नियम , अतिथि संविभागे प्रामे मासमध्येऽतिथिसंविभागो वारचतुष्टय कार्य , पूर्णस्नाने रात्रौ नियम , नारङ्गकरुणा सर्वनियम , पक्षमध्ये खाण्डगुड दुग्ध वारचतुष्टय मुत्कल, वीरवार २ द्विप्रक्षाल्याप्यानि बदराणा कोटी भडाणा च दीपोत्सव यावन्नियमः ॥ इति श्रावकवर्षाभिग्रहा' ॥४९॥

॥ इति श्रीमन्मुनिचन्द्राचार्य प्रभृतिसूरिपुरन्दर विहित एकोनपञ्चाशत्प्रकरणमय प्रकरण समुच्चय समाप्त' ॥

